



अनेकांत एज्युकेशन सोसायटीचे  
तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय बारामती  
ग्रंथालय विभाग

अनेकान्त वार्षिक नियतकालिक  
( वर्ष १९८७ ते १९९२ )

अंक क्रं : २६ ते ३०

अनेकांत एज्युकेशन सोसायटीचे

Acc No. 7 Call No. ....  
**Tuljaram Chaturchand College**  
 Library, Baramati (Pune)  
 Title "Anekant" - 1987-88 to 1991-92  
 Author T.C.College, Baramati  
 Card No. Lent on Received on  
 Prof S.B. Intavale 21/8/2011 13/11/11  
 18/8/104

Anekant Education Society's  
**Tuljaram Chaturchand College Library**  
 Baramati. (Pune)



7

Due Date Slip

Acc. No.

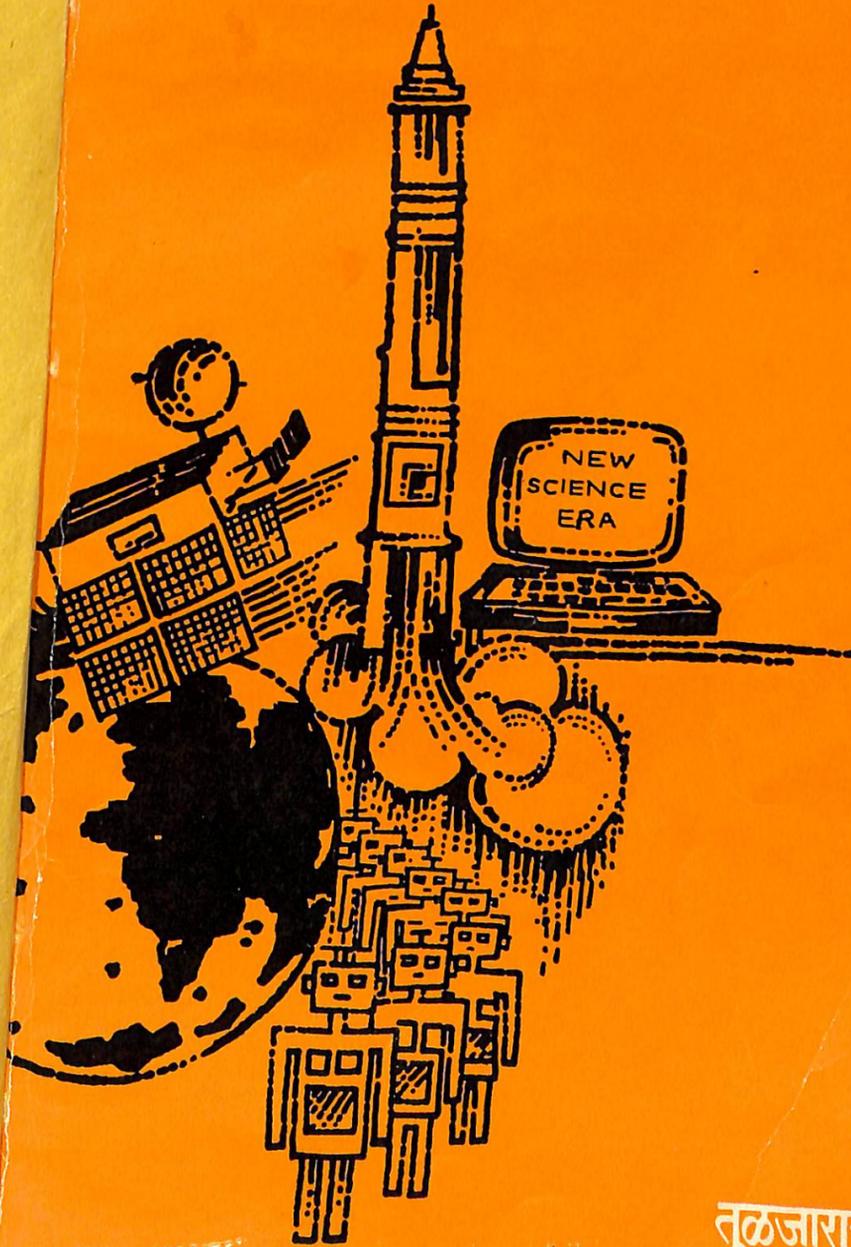
अनेकांत एज्युकेशन सोसायटीचे  
 तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय बारामती  
 ग्रंथालय विभाग  
**अनेकान्त वार्षिक नियतकालिक**  
 (वर्ष १९८७ ते १९९२)  
 अंक क्रं : २६ ते ३०

|   |    |    |
|---|----|----|
| 8 | 15 | 23 |
|   | 16 | 24 |

# अनेकाव्त

१९८७-८८

अंक २६ वा



तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय,  
बारामती जि. पुणे.

Acc No

July

Title "A

Author

Card

Part 5  
JWA

अनेकान्त एज्युकेशन सोसायटी, बारामती जि. पुणे

- गव्हर्निंग कौन्सिल -

अध्यक्ष- श्रीमान् शेठ लालचंद हिराचंद, बी. एम्सो, अर्थशास्त्र ( लंडन ). मुंबई  
उपाध्यक्ष- श्री. जंबुकुमार चंदुलाल शहा, बारामती.  
सचिव- डॉ. वर्धमान माणिकचंद कोठारी, डी. ए. एम्. एफ्, (मुंबई). बारामती  
खजिनदार- श्री. माणिकलाल तुळजाराम शहा, बारामती.

- सभासद -

श्री. माणिकचंद जयकुमार चवरे, कारंजा.  
श्री. विमलचंद माणिकचंद गांधी, सोलापूर  
श्री. विलास गौतमचंद शहा, बी. ए. एल्. एल्. बी, सोलापूर.  
श्री. जी. के. पाटील, एम्. ए. एल्. एल्. बी., इनामधामणी, सांगली  
श्री. शिवलाल प्रेमचंद शहा, (लेंगरेकर) बारामती.  
श्री. मोतीचंद फुलचंद शहा, बारामती.  
श्री. माणिकचंद ज. भिसीकर, एम्. ए., न्यायतार्थ, वाहुवली.  
श्री. मोतीलाल तुळजाराम शहा, बारामती.  
श्री. राजकुमार तुळजाराम शहा, बी. ए. एल्. एल्. बी., बारामती.  
श्री. आमगोंडा आ पाटील, जयसिंगपूर,  
श्री. जयपाल भूपाल झेले, जयसिंगपूर.  
प्राचार्य डॉ. जे. के. गोधा, एम्. कॉम्., बी. ए. एल्. एल्. बी, पीएच्. डी, बारामती.  
प्राचार्य डी. डी. मगदूम, एम्. ए., जयसिंगपूर.

} पदसिद्ध  
सभासद

- निर्मंत्रित सभासद -

श्री. शशिकान्त शिवलाल शहा (लेंगरेकर), बी. ए., बारामती  
श्री. पी. पी. लोहाडे, बी. कॉम्. एफ्. सी. ए. चार्टर्ड अकौंटंट, पुणे.  
श्री. रत्नाप्पा कुंभार, बी. ए., कोल्हापूर.  
श्री. नलिनचंद्र फुलचंद गांधी, पुणे  
श्री. गौतमचंद गुलाबचंद शहा, बारामती.  
श्री. पी. बी. पाटील, अध्यक्ष, स्थानिक समिती, जयसिंगपूर.  
डॉ. आर्. टी. अक्कोळे, एम्. ए. पीएच्. डी. जयसिंगपूर.



अनेकान्त एज्युकेशन सोसायटी

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय,  
बारामती.

जयो 5 स्तुते श्रीमहन्मगले ! शिवास्पदे शुभदे ।  
स्वतंत्रते भगवते ! त्वामहं यशोयुता वंदे ॥  
- स्वातंत्र्यवीर सावरकर

**अनेकान्त**

वार्षिक नियतकालिक  
( वरिष्ठ )

अंक सव्विसावा १९८७-८८

संपादक मंडळ

अध्यक्ष

प्राचार्य डॉ. जे. के. गोधा

सहाय्यक

उपप्राचार्य एस्. आर्. नवाथे

उपप्राचार्य डॉ. के. एम्. सुर्वे

उपप्राचार्य डॉ. दयाराम पाटील

प्रा. ए. बी. देसाई

प्रा. टी. डी. यादव

प्रमुख संपादक

प्रा. के. एस्. अग्रर

विद्यार्थी प्रतिनिधी

श्री. संदीप सुभेदार

तृतीय वर्ष, बी. ए.

## अनुक्रम

- ✽ प्राचायांचे मनोगत
- ✽ विद्यार्थ्यांचे मनोगत
- ✽ संपादकीय
- ✽ जीवेत् शरदः शतम्
- ✽ हादिक अभिनंदन
- ✽ भावपूर्ण श्रद्धांजली
- ✽ मा. श्री शरद पवार यांचे किडापटूना आवाहन

### मराठी विभाग

|  |                    |    |
|--|--------------------|----|
| स्वप्नशिल्प                                  | पवार एस्. बी.      | १  |
| राष्ट्रीय एकात्मता                           | घोगरे बी. यु       | २  |
| स्मृती                                       | संजय गुंडगे        | ४  |
| परीक्षा                                      | वल्लभ ल. चौधरी     | ५  |
| सामाजिक समस्या                               | सुधीनकुमार जन्नु   | ७  |
| निसर्गाची ओढ                                 | कु. नंदिनी टकले    | ८  |
| स्पर्धात्मक परीक्षा व मराठी ग्रामीण युवक कु. | ज्योती मरकळे       | ९  |
| राष्ट्रीय सेवा योजना                         | भिमराव आडसुळ       | ११ |
| प्रार्थना                                    | भोसले एस्. एम्     | १३ |
| कविता  |                    |    |
| निरोप  | कु. ज्योती मरकळे   | १५ |
| प्रश्न                                       | कु. ज्योती मरकळे   | १५ |
| विरोध  | कु. ज्योती मरकळे   | १५ |
| जीवन ऐसे नांव                                | राजे निवाळकर       | १५ |
| अभ्यंगस्नान                                  | कु. मंगल कदम       | १६ |
| मी असा                                       | अविनाश डी. महामुनी | १६ |
| पडसाद  | संदिप क. सुभेदार   | १६ |
| अष्टवक्रवामा                                 | विनय आचार्य        | १७ |
| तुझे आयुष्य                                  | सुनिल शां. खडके    | १७ |
| संदेह  | अविनाश साळवी       | १७ |
| 'तर'   | शेख एस्. डी.       | १७ |
| सांगावा                                      | नितिनकुमार वा, शे  | १८ |

### हिंदी विभाग

|                  |                  |    |
|------------------|------------------|----|
| आतंकवाद          | जाधव एस् पी.     | १९ |
| भ्रष्टाचार       | झकिर जी. शेख     | २० |
| किसकी अधिक जरूरत | विजय एस्. टिकोळे | २१ |
| कविताएँ          |                  |    |
| जुल्फ            |                  |    |
| जीवन संग्राम     | शेख एस्. डी.     | २२ |
| ENGLISH SECTION  | सुपेकर जयवंत     | २२ |

|   |         |
|---|---------|
| The Caste System In India—Miss Duriya Nasikwala | 23      |
| India's Foreign Policy—Miss Vaishali J. Shah    | 25      |
| POEMS—  |         |
| Love and Lovers—Dnyaneshwer K, Kale             | 27      |
| The Static Shadow—Sandeep Subhedar              | 28      |
| कार्यवृत्तांत                                   | २९      |
| प्राध्यापकांचे शैक्षणिक उपक्रम व सूची विभाग     | ३२ व ३३ |

## अनेकान्त एज्युकेशन सोसायटी, बारामती

### लोकल कमिटी

|                                |           |                                   |                 |
|--------------------------------|-----------|-----------------------------------|-----------------|
| १) श्री. जंबुकुमार चंदुलाल शहा | (चेअरमन)  | १०) श्री. श्रीमल गुलाबचंद गुगळे   | (सभासद)         |
| २) डॉ. वर्धमान माणिकचंद कोठारी | (सचिव)    | ११) श्री. माणिकलाल रुपचंद शहा     | (सभासद)         |
| ३) श्री. मोतीचंद फुलचंद शहा    | (खजिनदार) | १२) श्री. विलास माणिकचंद शहा      | (सभासद)         |
| ४) श्री. शशिकांत शिवलाल शहा    | (खजिनदार) | १३) श्री. अरहतदास हिराचंद शहा     | (सभासद)         |
| ५) श्री. माणिकलाल तुळजाराम शहा | (सभासद)   | १४) श्री. माणिकलाल छगनलाल मुथा    | (सभासद)         |
| ६) श्री. खुशालचंद रतनचंद छाजेड | (सभासद)   | १५) श्री. विलास दिपचंद शहा        | (सभासद)         |
| ७) श्री. भोगीलाल गुलाबचंद शहा  | (सभासद)   | १६) श्री. राजकुमार तुळजाराम शहा   | (सभासद)         |
| ८) श्री. पवनलाल गंगाराम गांधी  | (सभासद)   | १७) प्राचार्य डॉ. जे. के. गोधा    | (पदसिद्ध सभासद) |
| ९) श्री. गौतमचंद गुलाबचंद शहा  | (सभासद)   | १८) श्री. व्ही. एम. शहा, इंजिनियर | (निमंत्रित)     |

### तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती

#### लोकल मॅनेजिंग कमिटी -- १९८५--८८

अध्यक्ष - श्री. जंबुकुमार चंदुलाल शहा

सचिव - प्राचार्य डॉ. जे. के. गोधा

#### सभासद

- |   |  |  |   |
|---|--|--|---|
| १) श्री. विनोदकुमार रंगीलदास गुजर               | अध्यक्ष, बारामती नगरपरिषद, बारामती                                       | ५) श्री. दिनकरराव (अप्पासाहेब) गोविंदराव पवार                | अध्यक्ष, कृषि विकास प्रतिष्ठान, बारामती, जि. पुणे |
| उपाध्यक्ष, विद्या प्रतिष्ठान, बारामती, जि. पुणे |  | ६) डॉ. व. मा. कोठारी, बारामती                                |   |
| २) श्री. राजेंद्रकुमार घोलप                     | चेअरमन, छत्रपती सहकारी साखर कारखाना लि. भवानीनगर                         | ७) श्री. माणिकलाल तुळजाराम शहा, बारामती                      |   |
| ता. इंदोपूर, जि. पुणे                           |  | ८) श्री. शशिकांत शिवलाल शहा, बारामती                         |   |
| ३) श्री. चंद्रराव कृष्णराव तावरे                | चेअरमन, दि माळेगाव सहकारी साखर कारखाना लि. शिवनगर, ता. बारामती, जि. पुणे | ९) श्री. मोतीचंद फुलचंद शहा, बारामती                         |   |
| ४) श्री. भगवानराव साहेबराव काकडे (निवृत्त)      | प्रतिनिधी, पुणे जिल्हा मध्यवर्ती सहकारी बँक लि. पुणे                     | १०) श्री. खुशालचंद रतनचंद छाजेड, बारामती                     |   |
|   |  | ११) प्राध्यापक प्रतिनिधी -                                   |   |
|   |  | १) प्रा. एस्. आर. नवाथे, एम. एस्सी.                          |   |
|   |  | २) प्रा. एस्. पी. कदम, एम्. ए. एम्. एड्.                     |   |
|   |  | १२) शिक्षकेतर कर्मचारी प्रतिनिधी- श्री. धन्यकुमार वालचंद शहा |   |

### वरिष्ठ महाविद्यालय स्टुडण्टस मॅनेजिंग कमिटी १९८७-८८

अध्यक्ष - प्राचार्य डॉ. जे. के. गोधा

नियुक्त प्राध्यापक सदस्य -

|            |                           |             |
|------------|---------------------------|-------------|
| उपाध्यक्ष- | प्रा. एस्. आर. नवाथे      | उपप्राचार्य |
|            | प्रा. डॉ. के. एम्. सुर्वे | "           |
|            | प्रा. डॉ. डी. टी. पाटील   | "           |

|                     |
|---------------------|
| प्रा. जे. बी. मगदूम |
| प्रा. आर. जी. पाटील |

#### ४) वर्ग प्रतिनिधी व तुकडी प्रतिनिधी

| अ. नं. | नांव                            | वर्ग                |
|--------|---------------------------------|---------------------|
| १)     | श्री. देवकाते कल्याण साहेबराव   | एफ. वाय. बी. ए. (अ) |
| २)     | श्री. इंगळे श्याम किसनराव       | एफ. वाय. बी. ए. (ब) |
| ३)     | श्री. सोनवणे संजय जयसिंग        | एफ. वाय. बी. ए. (क) |
| ४)     | श्री. गायकवाड विजय सिताराम      | एस. वाय. बी. ए. (अ) |
| ५)     | श्री. बिचकुले माणिक किसनराव     | एस. वाय. बी. ए. (ब) |
| ६)     | श्री. भोसले राजेन्द्र बुवासाहेब | एस. वाय. बी. ए. (क) |
| ७)     | श्री. काशिद प्रदिप              | टी. वाय. बी. ए. (अ) |
| ८)     | श्री. रासकर राजेन्द्र नामदेव    | टी. वाय. बी. ए. (ब) |

- १) श्री. वांदल संजय कृष्णराव
- १०) श्री. निवाळकर शिवाजी रामराव
- ११) श्री. देवकाते रघुनाथ मल्हारो
- १२) श्री. सणस महेंद्र रामराव
- १३) श्री. धालपे रामकृष्ण माहतराव
- १४) श्री. ननवरे सुनिल श्रीरंग
- १५) श्री. जगताप मुकुंद मुरलीधर
- १६) श्री. होलम विद्याधर विठ्ठल
- १७) श्री. गोंजारी किशोर महादेव
- १८) श्री. परकाळे लालसाहेब दौलतराव
- १९) श्री. भागवत नंदकुमार वसंतराव
- २०) कु. पोळ स्मिता वसंत
- २१) श्री. खलाटे युवराज माणिकराव
- २२) कु. दोशी शुक्ला मगनलाल
- २३) श्री. मसुगडे वाळू सायबू
- २४) उमेदवार नाही.

- एम. ए. (सर्व विषय)  
 एफ. वाय. बी. एस्सी.  
 एफ. वाय. बी. एस्सी.  
 एम. वाय. बी. एस्सी.  
 टी. वाय. बी. एस्सी.  
 एफ. वाय. बी. कॉम. (अ)  
 एफ. वाय. बी. कॉम. (ब)  
 एफ. वाय. बी. कॉम. (क)  
 एम. वाय. बी. कॉम. (अ)  
 एम. वाय. बी. कॉम. (ब)  
 एस. वाय. बी. कॉम. (क)  
 टी. वाय. बी. कॉम. (अ)  
 टी. वाय. बी. कॉम. (ब)  
 टी. वाय. बी. कॉम. (क)  
 एम. कॉम. (अ)  
 एम. कॉम. (ब)

### जिमखाना मॅनेजिंग कमिटी सन १९८७-८८

- १) अध्यक्ष प्राचार्य डॉ. जे. के. गोधा
- २) जिमखाना चेअरमन (वरिष्ठ) प्रा. ए. एस. मेहेर
- ३) नियुक्त प्राध्यापक सदस्य
  - अ) प्रा. के. एस. सणगर
  - ब) प्रा. व्ही. डी. काकडे
  - क) प्रा. सी. एन. ए. पाटील
  - ड) प्रा. के. एम. जाधव

- ४) जिमखाना चेअरमन (कनिष्ठ) प्रा. ए. एस. वी. इंगवले
- ५) नियुक्त प्राध्यापक सभासद-
  - अ) प्रा. व्ही. एस. भोसले
  - ब) प्रा. ए. बी. भगते
  - क) प्रा. सी. टी. टी. निगडे

### विद्यार्थी प्रतिनिधी

- १) आय. सी. एस. आर. (मुले)
- २) आय. सी. एस. आर. (मुली)
- ३) इंडियन गेम्स
- ४) मायनर गेम्स
- ५) क्रिकेट
- ६) अथलेटिक्स, कुस्ती, जिम्नॅस्टिक्स
- ७) बॉल गेम्स

- श्री. जगताप चंद्रशेखर श्रीरंगराव  
 कु. गहा वर्षा जयकुमार  
 श्री. सातव अनिल दत्तात्रय  
 श्री. सालवी अविनाश अरविंद  
 श्री. सुरवडे नितीन रामकृष्ण  
 श्री. झगडे सुभाष पांडुरंग  
 श्री. पांडकर मधुकर अर्जुन

- एम. कॉम.  
 टी. वाय. बी. कॉम.  
 एम. कॉम.  
 टी. वाय. बी. ए.  
 टी. वाय. बी. कॉम.  
 टी. वाय. बी. ए.  
 टी. वाय. बी. ए.  
 एम. कॉम.

### इतर पदे ( विद्यार्थी-विद्यार्थिनी )

- १) गॅदरींग सेक्रेटरी
- २) विद्यार्थिनी प्रतिनिधी
- ३) सांस्कृतिक प्रतिनिधी
- ४) नियतकालिक प्रतिनिधी
- ५) सहल प्रतिनिधी
- ६) ग्रंथालय प्रतिनिधी
- वादविवाद प्रतिनिधी
- विद्यापीठ प्रतिनिधी

- श्री. झगडे राजेन्द्र रामचंद्र  
 कु. गहा सुखदा शांतीलाल  
 श्री. होवळे वावासाहेब आनंदराव  
 श्री. सुभेदार संदीप कमलाकांत  
 श्री. चव्हाण राजेश मनोहर  
 श्री. काकडे दादा आनंद

- टी. वाय. बी. ए.  
 टी. वाय. बी. कॉम.  
 एस. वाय. बी. ए.  
 टी. वाय. बी. ए.  
 टी. वाय. बी. कॉम.  
 टी. वाय. बी. ए.  
 टी. वाय. बी. ए.

- श्री. गोंजारी किशोर महादेव

- एस. वाय. बी. कॉम.

## प्राचार्यांचे मनोगत

★ आज आपण २१ व्या शतकाकडे वाटचाल करीत आहोत. ही वाटचाल करीत असताना शैक्षणिक क्षेत्रात नवेनवे अभ्यासक्रम तांत्रिक व व्यावसायिक दृष्ट्या महत्त्वाचे असे आपण सुरू करीत आहोत. त्या वर आधिक भर देत आहोत.

★ महाविद्यालयात-विद्यार्थ्यांची गर्दी वाढत आहे. महाविद्यालयातून दिले जाणारे पारंपारिक अभ्यासक्रमाचे शिक्षण घेणारे विद्यार्थी शिक्षणक्रमाची पूर्णता केल्यावर स्वावलंबी होऊ शकत नाहीत. व्यवसाय धंदा करू शकत नाहीत, नोकरीची अपेक्षा वळगतात. पण ती सुध्दा सहज उपलब्ध होत नाही. त्यामुळे मुशिक्षित वेकारांच्या संख्येत फार मोठ्या प्रमाणात वाढ होत आहे. ही फार मोठी चिंतेची बाब आहे.

★ ही गर्दी कमी करण्यासाठी व्यावसायिक शिक्षण व तांत्रिक अभ्यासक्रम याचा समावेश अभ्यासक्रमात करण्याचा प्रयत्न चालला आहे. इलेक्ट्रॉनिक्स व कॉम्प्युटर सायन्स या सारखे अभ्यासक्रम महाविद्यालयातून शिकविण्याचे उपक्रम हाती घेतले जात आहेत.

★ १०+२+३ या पद्धतीनुसार शिक्षणक्रम राबविला जात आहे.

★ परंतु हे सर्व करीत असताना आपली आर्थिक बाजू कमकुवत असल्याने या बाबत आपणास म्हणावे तसे यश प्राप्त झालेले नाही. नवे तंत्रज्ञान व अभ्यासक्रम-आपण स्वीकारले. महाविद्यालयांनी इलेक्ट्रॉनिक्स व कॉम्प्युटर सायन्स या सारखे अभ्यासक्रम शासनाच्या परवानगीने विनाअनुदान तत्वावर सुरू केले. परंतु आर्थिक परिस्थिती दुबळी असल्याने शासन अथवा समाज ही जबाबदारी पेलू शकत नाही हे सिद्ध झाले आहे. अनुदान मिळत नसल्याने महाविद्यालयाना सदरचे अभ्यासक्रम चालविणे अशक्य झाले आहे. 'इलेक्ट्रॉनिक्स' सारखा महत्त्वाचा अभ्यासक्रम बंद करावा असे आदेश शासनाने काढले आहेत त्यामुळे शासनाला शिक्षण विषयक प्रश्नाच्या संदर्भात निश्चित दिशाच नाही. असे नाइलाजाने म्हणावे लागते.

★ एकीकडे २१ व्या शतकाकडे प्रगतीची वाटचाल म्हणून आपण घोषणा देतो व दुसरीकडे शिक्षण क्षेत्रात प्रगतीच्या दिशेचा कोंडमारा होतो हे चित्र अत्यंत विषण्ण करणारे व खदजनक आहे.

★ नवे शैक्षणिक धोरण या विचाराचा सारखा घोष सुरू आहे. पण नवे शैक्षणिक धोरण म्हणून नेमके काय? त्याचे स्वरूप त्याची दिशा उद्देश या संबंधी तज्ञ मंडळी किंवा महाविद्यालयांना ही ठामपणे काही सांगता येत नाही मार्गदर्शन करता येत नाही.

एक प्रकारची दिशा हीन अवस्था आपल्या शिक्षण क्षेत्राची झालेली आहे.

अशी अवस्था का निर्माण झाली आहे? याचे कारण शिक्षण विषयाच्या संदर्भात शासकीय पातळीवर, विद्यापीठ पातळीवर निश्चित प्रकारचे नियोजन नाही.

✱ पदव्युत्तर वर्गासंबंधीचे निश्चित असे धोरण नाही.

✱ विना अनुदान तत्वावर अनेक महाविद्यालयांनी अनेक महत्त्वाचे विषय सुरू केले. काही महाविद्यालये सुरू झाली. शासनाच्या अनुमतीने हे विषय सुरू झाले. पण ४ वर्षे उलटून गेल्यावर सुद्धा या बाबत अनुदान देण्यासंबंधी शासन विचार करीत नाही. शासनाच्या या संबंधीच्या अनिश्चित व धरसोडीच्या धोरणामुळे एक प्रकारचे नैराश्याचे वातावरण शिक्षण क्षेत्रात निर्माण झाले आहे.

✱ एवढेच नव्हे तर प्राध्यापक शिक्षकेतर सेवक व शिक्षण संस्था यांचे अनेक महत्त्वाचे प्रश्न वर्षानुवर्षे अनिर्णित राहिल्याने मोठी विचित्र परिस्थिती निर्माण झाली आहे.

✱ गेल्या ऑगस्ट स्प्टेंबर १९८७ मध्ये प्राध्यापकांनी देशव्यापी संप केला. शिक्षकेतर सेवकांचे संपाचे संकल्प सुरू आहेत. पण शासन या सर्वांचे प्रश्न मन लावून सोडविण्याच्या दृष्टीने विचार करताना दिसत नाही. ही मोठ्या खेदाची व आश्चर्याची बाब आहे. याचा एकूण सर्वच शिक्षण क्षेत्रावर विपरित परिणाम होत आहे.

✱ पण कुणीच या परिस्थितीकडे लक्ष द्यावयास तयार नाही.

✱ शिक्षणाचा केंद्रबिंदू असलेला विद्यार्थी त्याची स्थिती तर फारच केविलवाणी झाली आहे. नोकरीसाठी शिक्षण घेतो, ती नोकरी त्याला मिळत नाही. जीवनात कोणतीही स्थिरता त्याला लाभत नाही. वेकारीच्या व नैराश्याच्या छायेत तो सतत वावरत आहे. त्याची गंभीरपणे दखल समाज घेत नाही शासन घेत नाही. ही एकूणच परिस्थिती मोठी चिंताजनक आहे.

✱ त्यातही ग्रामीण भागातील महाविद्यालये व विद्यार्थी यांची परिस्थिती मोठी शोचनीय आहे. ग्रामीण भागातील महाविद्यालयातून इलेक्ट्रॉनिक्स कॉम्प्युटर सायन्स सारखे विषय सुरू केले जातात. पण या विषयासाठी शासन कोणतेही अनुदान देत नाही. ग्रामीण गरीब विद्यार्थी या अभ्यासक्रमापासून वंचित राहतो. त्याला पारंपारिक अभ्यासक्रमावरच समाधान मानावे लागते या विषयांच्या अध्यापनासाठी तज्ज्ञ प्राध्यापक वर्ग ग्रामीण महाविद्यालयांना मिळत नाही अशी अवस्था आहे.

✱ स्वायत्त महाविद्यालये किंवा 'कॅम्प्युनिटी कॉलेज' या उपक्रमावर आज पर्यंत खूप चर्चा झाली विचार मंथन झाले. शासन, विद्यापीठे यां संदर्भात ठाम निर्णय घेऊ शकत नाहीत ही वस्तुस्थिती आहे. शासनाने या सर्व समस्यांचा साकल्याने विचार करून निश्चित निर्णय घ्यावा म्हणजे शिक्षण क्षेत्राला योग्य दिशा मिळेल असा विश्वास वाटतो.

डॉ. जे. के. गोधा  
 प्राचार्य

## मनोगत

प्रिय विद्यार्थी-बंधु आणि भगिनींनो,  
सप्रेम नमस्कार

शब्दरूपाने मनोगत व्यक्त करण्याची संधी आज मला लाभते आहे. माझ्याबद्दल आपण सर्वांनी दाखविलेला विश्वास मा. प्राचार्य, संपादक, आणि मंडळातील प्राध्यापकांमितींनी वेळोवेळी केलेले मार्गदर्शन आणि सहकार्य या मुळेच मी नियतकालिक प्रतिनिधी ही जबाबदारी यशस्वीपणे सांभाळू शकलो. आपणां सर्वांचा मी शतशः ऋणी आहे.

या वर्षीच्या साहित्यात निश्चितच वाढ झाली. सर्व साहित्यिक बंधु-भगिनींनी या वर्षी भरपूर साहित्य देऊन सहकार्य केले. त्याबद्दल मी सर्वांचा आभारी आहे. परन्तु नावीन्याचा अभाव, आणि अप्रामाणिकता या गोष्टी या वर्षीच्या साहित्यात प्रकटपणे जाणवल्या. साहित्यात स्वत्व व साधना फार महत्त्वाची आहे. आपणां सर्व नवोदितांची कष्ट घेण्याची तयारी नसते. वाचनाचा अभाव असल्यामुळे आपला शब्द संग्रह मर्यादित राहतो आणि त्यामुळे आपल्या लिखाणात तोच तो पणा आणि अप्रभावीपणा येत असतो. थोर कवी, लेखकांचे साहित्य वाचायचे ते अनुकरण करण्यासाठी नव्हे, तर त्यामधून त्यांची लिहिण्याची शैली, शैलिष्टच यांचा अभ्यास करण्यासाठी ते आवश्यक आहे. प्राध्यापकांचे मार्गदर्शन, चर्चा, संमेलन, स्पर्धा या द्वारे आपणास साहित्यातील विविधता, अनुभव लक्षात येतील. लिखाणाला योग्य ती दिशा मिळण्यास मदत होईल.

आपणा सर्वांमध्ये नैराश्य, उदासीनता आढळते ती नसावी नेहमी उच्च ध्येयाची अपेक्षा करून चिकाटीने, इच्छा शक्तीच्या जोरावर प्रयत्न केल्यास यश हे मिळतेच. सतत कष्ट, साधना व सूक्ष्म-बलोकन यामधूनच प्रभावी साहित्य निर्माण होत असते.

पृष्ठांच्या मर्यादेमुळे साहित्य देखील मर्यादित घ्यावे लागते त्यामुळे सर्वांनाच स्थान मिळणे अशक्यप्राय आहे. ज्यांना स्थान मिळते त्यांचे सद्भाग्यच, परन्तु ज्यांना वाव मिळत नाही, त्यांनी निराशा न होता साहित्याचा दर्जा उंचावण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे अप्रामाणिकता हा साहित्याचा अपमान आहे. आणि साहित्याचा अपमान हा विद्या-देवतेचा अपमान आहे अन् तो होऊ न देण्यासाठी सर्वांनी प्रयत्नशील राहाणे हे आपले कर्तव्य आहे नियतकालिका व्यतिरिक्त अन्य ठिकाणी देखील आपण साहित्य पाठविले पाहिजे केवळ नियतकालिकांसाठी

पश्चिमेतील सामाजिक जीवन खळाळणाऱ्या हास्याने फुललेले आहे. परन्तु त्याच्या वुडाशी दुःख शोक, आक्रंदन आहे. त्याचा अंत हुंदक्यांत होतो. मौज, चैन ह्या साऱ्या वरपांगी गोष्टी आहेत, खरें पाहता त्यांत अत्यंत उत्कट असे दुःखच भरलेले आहे, आता, येथील जीवन वरवर दुःखमय, विषादपूर्ण दिसते खरें, परन्तु त्याच्या तळाशी निश्चितपणा व आनंद आहे.

स्वामी विवेकानंद

विचार करणे चुकीचे आहे. यावर्षी कथा व लेख भरपूर प्रमाणात येऊन मुद्रा त्यामधून प्रसिद्धी योग्य अशाच ठराविक कथांचा व लेखांचा विचार केला गेला आहे. कथा-लेखात नाविन्याचा अभाव होता.

कवितांच्या वावरीत नावीन्य आढळले, परन्तु अप्रामाणिक-पणाचा ठसाही आढळला. कविता भरपूर आल्या, आणि बऱ्याच कवींचा या वर्षी चांगल्या कविता देण्याचा प्रयत्न राहिला आहे. जास्तीत जास्त कवितांना स्थान देण्याचा प्रयत्न केलेला आहे. त्यांमधील काही कवींनी फार सुंदर कविता दिलेल्या आहेत. त्यांच्या कवितेतून नावीन्य आपणास निश्चित जाणवेल. कविता मुख-दुःखाचा आत्मविष्कार आहे. कविता लिहिण्यापेक्षा कविता जगणं फार महत्त्वाचे आहे. जाता जाता सर्व नवोदित कवी मित्रांना माझे एवढेच सांगणे आहे. की या जीवन प्रवाहामध्ये आपण कुठेही असा कसेही असा, परिस्थिती प्रतिकूल असो वा अनुकूल, कवितेला अंतर देऊ नका तिला दुरावू नका कविता हेच आपले जीवन आहे, कवितेला आयुष्या-मध्ये भागीदार बनवा कविता आपल्यापासून तेव्हाच वेगळी होईल जेव्हा आपले स्वाम थांबले अमरील असो.

मनोगत संपादक असं मला ही वाटत नाही पण मर्यादा लक्षात घेऊन आपणां सर्वांना, तुमच्या प्रतिभेला, हादिक शुभेच्छा करतो आणि मनोगताला हा चार ओळींचा पूर्णविराम देतोय.

इतुकेच भाग्य माझे,  
सहवास लाभला हा  
उपकार मानतो मी.  
रे स्वास लाभला हा.

हे ऋणानुबंध आता, युगायुगाची नाती .....  
मी क्षणाचा सोवती-मी क्षणाचा सोवती

संदीप सुभेदार  
टी. वाय्. बी. ए.  
नियतकालिक प्रतिनिधी

## संपादकीय

दि. २३ जून १९८७ रोजी आमच्या महाविद्यालयाने २६ व्या वर्षीत पदार्पण केले आहे. आमच्या 'अनेकान्त' वार्षिकाचा २६ वा अंक वाचकांच्या हाती देताना आम्हाला अतिशय आनंद होत आहे. महाविद्यालयाचा वार्षिक अंक म्हणजे महाविद्यालयाच्या प्रगतीचे, सर्वांगीण विकासाचे सम्यक् दर्शन घडविणारे एक महत्त्वाचे माध्यम आहे. २५ वर्षांच्या एकूण विकासाच्या वाटचालीचा आलेख सर्वांना जात आहेच. सातव्या पंचवार्षिक योजनेच्या अंतर्गत विविध विकास योजनांचा जो आराखडा आम्ही विद्यापीठ अनुदान मंडळाकडे पाठविला त्यास मंजूरी मिळाली असून त्याचा तपशील पुढील प्रमाणे आहे.  
अ) बेसिक अनुदान रु. १,५५,०००/- ब) पदवी वर्ग रु. ७,२०,०००/-  
क) कोहसिप रु. २,००,०००/- ड) कॉसिप रु. ३,००,०००/-  
इ) जिम्नॅशियम रु. १,१२,५००/- फ) क्रीडांगण रु. ७,५००/-

याशिवाय क्रीडांगण क्षेत्रातील पुढीलप्रमाणे खास योजना विद्यापीठ अनुदान मंडळाकडे मंजूरीसाठी पाठविल्या आहेत.

१) पोहण्याचा तलाव २) जिम्नॅशियम बिल्डिंग ३) खेळण्याच्या मैदानाचा विकास ४) क्रीडांगणावर फ्लड लाईट ५) क्रीडा साहित्य परीक्षांचे निकाल एप्रिल / मे १९८७

| वर्ग                 | टक्केवारी | वर्ग           | टक्केवारी |
|----------------------|-----------|----------------|-----------|
| एफ्. वाय्. बी. ए.    | ४६.०४     | एम्. ए. मराठी  | ७१.४३     |
| एफ्. वाय्. बी. कॉम्. | ३१.०४     | " हिंदी        | ८३.३३     |
| एफ्. वाय्. सायन्स    | १४.००     | " इंग्रजी      | २०.००     |
| टी. वाय्. बी. ए.     | ९२.६१     | " अर्थशास्त्र  | १००.००    |
| टी. वाय्. बी. कॉम्.  | ५५.००     | " राज्यशास्त्र | ७८.९४     |
| टी. वाय्. बी. एस्सी. | ६८.००     | " इतिहास       | १००.००    |
| डी. टी. एल्.         | ५६.५२     | " एम्. कॉम्.   | ८०.००     |

✳ एकूण विद्यार्थी संख्या  
वरिष्ठ महाविद्यालय २०७९ } ३५०२  
कनिष्ठ महाविद्यालय १४२३

✳ प्राध्यापकांची संख्या  
वरिष्ठ महाविद्यालय ७८, कनिष्ठ महाविद्यालय ४९

✳ नवरागांचे स्वागत- १९८७-८८ या वर्षी पुढील प्राध्यापकांची नव्याने नेमणूक करण्यात आली.

वरिष्ठ महाविद्यालय-

|                              |               |
|------------------------------|---------------|
| १) प्रा. टी. एस्. सावंत      | इंग्रजी       |
| २) प्रा. डी. के. कुलकर्णी    | इंग्रजी       |
| ३) प्रा. एम्. जी. कोळपकर     | गणित          |
| ४) प्रा. एस्. व्ही. कुलकर्णी | संगणक शास्त्र |
| ५) प्रा. एस्. बी. क्षीरसागर  | संख्याशास्त्र |
| ६) कु. पी. पी. मांडण         | संख्याशास्त्र |
| ७) प्रा. एम्. जी. ठुबे       | रसायनशास्त्र  |
| ८) प्रा. एस्. आर. काळे       | रसायनशास्त्र  |

|                              |                |
|------------------------------|----------------|
| १) प्रा. जे. बी. पटवर्धन     | इलेक्ट्रॉनिक्स |
| १०) प्रा. कु. एस्. ए. पाटील  | वनस्पतिशास्त्र |
| ११) प्रा. सी. एस्. एस्. दोशी | प्राणिशास्त्र  |
| १२) प्रा. जे. डी. देशपांडे   | इलेक्ट्रॉनिक्स |
| १३) प्रा. सी. एम्. भांबरे    | फिजिक्स        |
| १४) प्रा. आर. जी. कुदळे      | प्राणीशास्त्र  |

कनिष्ठ महाविद्यालय

|                            |              |
|----------------------------|--------------|
| १) प्रा. पी. एम्. साळुंके, | राज्यशास्त्र |
| २) प्रा. एस्. एम्. गोरे,   | समाजशास्त्र  |
| ३) प्रा. आर. आर. अटपळकर,   | रसायनशास्त्र |
| ४) प्रा. ए. एच. गावडे      | फिजिक्स      |
| ५) प्रा. एस्. जी. खोत      | गणित         |
| ६) प्रा. एस्. बी. गावकवाड  | इतिहास       |

महाविद्यालयाचे प्रतिनिधित्व  
या वर्षी पुढील प्राध्यापकांनी आपापल्या विषयाच्या शिबिरांना, अधिवेशनांना उपस्थित राहून महाविद्यालयाचे प्रतिनिधित्व केले.

|  |                             |
|--|-----------------------------|
| १) प्रा. डॉ. डी. टी. पाटील, मराठी-अ. भा. | मराठी साहित्य संमेलन ठाणे   |
| २) प्रा. डी. एम्. चहा                    | " " " "                     |
| ३) प्रा. डॉ. व्ही. व्ही. आचार्य          | अर्थशास्त्र सातारा          |
| ४) प्रा. ए. बी. देसाई                    | अर्थशास्त्र सातारा          |
| ५) प्रा. आर. डब्ल्यू. जोशी               | अर्थशास्त्र सातारा          |
| ६) प्रा. सी. पदमजा प्रभुणे               | समाजशास्त्र पैठण            |
| ७) प्रा. बी. एस्. माने                   | मानसशास्त्र सोलापूर         |
| ८) प्रा. के. एम्. जाधव                   | मानसशास्त्र सोलापूर         |
| ९) प्रा. एस्. आर्. नवाथे                 | इंडियन सायन्स काँग्रेस पुणे |
| १०) प्रा. बी. बी. पाटील                  | इंडियन सायन्स काँग्रेस पुणे |
| ११) प्रा. डॉ. सी. व्ही. मुरुमकर          | वांटवी दिल्ली               |

✳ सेवानिवृत्ती.  
प्रा. व्ही. व्ही. उपध्ये प्रमुख इंग्रजी विभाग व प्रा. आर्. टी. शहा मराठी विभाग हे दि. ११/११/८७ रोजी महाविद्यालयाच्या सेवेतून मुक्त झाले. त्यांना भावी जीवन मुखाचे व शांततेचे जागो ह्या सदिच्छा

मान्यवरांच्या भेटी-  
✳ २३ जून १९८७ रोजी-महाविद्यालयाने २६व्या वर्षीत पदार्पण केले. २३ जून १९८७ रोजी महाविद्यालयाचा वर्धापन दिन साजरा करण्यात आला. या कार्यक्रमाचे मुख्य पाहुणे म्हणून-शिवाजी विद्यापीठाचे कुलगुरू डॉ. के. बी. पवार अध्यक्ष-मा. श्री. शिवाजीराव भोसले प्राचार्य मुधोजी महाविद्यालय हे उपस्थित होते.

✳ प्रा. डॉ. निर्मल कुमार फडकुले यांचे कर्मवीर भाऊराव पाटील यांचा जन्म शताब्दीच्या निमित्ताने व्याख्यान झाले.

✽ महाविद्यालयातील क्रीडानैपुण्य प्राप्त करणाऱ्या विद्यार्थ्यांना पारितोषिके प्रदान करण्याचा कार्यक्रम मा. खासदार प्रा. रामकृष्ण मोरे यांच्या शुभ हस्ते झाला.

✽ तसेच प्रा. डॉ. श. ना. नवलगुंदकर यांच्या शुभ हस्ते विविध परिक्षांत गुणवत्ता प्राप्त करणाऱ्या विद्यार्थ्यांना पारितोषिके प्रदान करण्याचा कार्यक्रम झाला.

✽ दि. १२ एप्रिल १९८८ रोजी मा. शरदचंद्रजी पवार यांनी महाविद्यालयास भेट दिली.

✽ या मान्यवर व्यक्तींनी आमच्या महाविद्यालयास भेट दिली व महाविद्यालयाची प्रगती पाहून समाधान व्यक्त केले.

#### साहित्य

- दरवर्षीप्रमाणे या वर्षी मुद्रा अनेकान्त साठी साहित्य देण्याचे आवाहन आम्ही विद्यार्थ्यांना केले. त्यानुसार साहित्य भरपूर आले. परंतु साहित्य निर्मातीसाठी साधनेची गरज असते. वाचन लेखन मनन व चिंतन यातून दर्जेदार साहित्य निर्मिती होते. याचे भान अभावानेच दिसले. त्यामुळे आलेल्या साहित्यातून फार थोडे साहित्य प्रसिद्धी योग्य मिळाले. विद्यार्थ्यांनी चांगल्या साहित्य निर्मातीसाठी

भरपूर वाचन लेखन मनन चिंतन करावे म्हणजे उत्तम तऱ्हेची साहित्य निर्माती ते करू शकतील असे आवाहन विद्यार्थी मित्रांना करित आहोत.

या अंकाच्या निर्मितीसाठी अनेकांचे विविध प्रकारचे साहाय्य आम्हास लाभले. प्राचार्य डॉ. जे. के. गोधा यांचे मौलिक मार्गदर्शन आम्हाला नेहमीच प्रेरणा देणारे ठरते. या शिवाय उप-प्राचार्य प्रा. एस्. आर्. नवाथे, डॉ. के. एम्. सुर्वे, प्रा. डॉ. डी. टी. पाटील यांचे मोलाचे सहकार्य मिळाले. प्रा. टी. डी. यादव नियतकालिक सेक्रेटरी श्री संदीप सुभेदार यांचे सहकार्य लाभले.

अनेकान्त मुद्राणालयातील कर्मचाऱ्यांनी उत्तम प्रकारची छपाई करून दिली तर ब्लॉक निर्मिती व मुखपृष्ठाचे व प्रिन्टींगचे काम करून अंकाची शोभा वाढविण्याचे कार्य पुण्याच्या व्ही. जोशी आणि कंपनी यांनी केले. या सवचि मनःपूर्वक आभार.

प्रा. के. एस्. अय्यर  
संपादक

हुंडा पद्धतीने कित्येक तरुणींना जीवनातून उठविले आहे. वर; वाजारात विकण्याचे बैल बनले असून, वधू; पित्याचा गळफास बनली आहे, ही अनिष्ट प्रथा बंद झालीच पाहिजे. याशिवाय समाजात अनेक प्रकारच्या दुष्ट चाली-रीतींनी समाजाचा प्रगतीचा मार्ग रोखून धरला आहे. अंधश्रद्धेच्या बळावर भोंदू लोक भोळ्या भावड्या जनतेला दिवसा ढवळ्या लुबाडतात या सर्व कारणांमुळे सामाजिक प्रगती गोठली आहे. यावर प्रहार करून सामाजिक प्रवाह वाहता करण्याची गरज आहे. शासकीय कायदे आपले कार्य करतीलच. जागृत संघटित समूहांनी या विरुद्ध आघाडी उघडली पाहिजे.

-जयप्रकाश नारायण

ज्याने जगाकडे पाठ फिरविली आहे, ज्याने सर्वस्वाचा त्याग केलेला आहे, ज्याने वासनांचे दमन केले आहे आणि ज्याला शांतीची तहान लागली आहे तो खरा मुक्त होय, तो खरा थोर होय. एखाद्याला सामाजिक व राजकीय स्वातंत्र्य कदाचित मिळविता येईल, परंतु तो जर आपल्या वासनांचा व इच्छांचा गुलाम असेल. तर त्याला खऱ्या खुऱ्या मुक्तीचा विशुद्ध आनंद अनुभवता येणार नाही.

स्वामी विवेकानंद

## ॥ जीवेत् शरदः शतम् ॥



श्री. मोतीचंद फुलचंद शहा (मुंबईकर)

अनेकान्त एज्युकेशन सोसायटीचे संस्थापक-सदस्य आणि घडाडीचे कर्तव्यगार व्यक्तिमत्व श्री. मोतीचंद फुलचंद शहा यांचा ७१ वा वाढदिवस दि. २९-११-८७ रोजी मोठ्या उत्साहात साजरा करण्यात आला.

बारामती शहरात व परिमरात आपल्या कार्यकर्तृत्वाची छाप त्यांनी समाजातील सर्व थरात उमटविली आणि उत्तम प्रकारचा लौकिक संपादन केला. बारामती नगरपरिषद, बारामती अर्बन को-ऑप. बँक लि; बारामती तालुका खरेदी विक्री संघ इत्यादी संस्थांतील त्यांचे लोककल्याणकारी कार्य सर्वांच्या स्मरणात आहे. मुंबईकर कापड दुकानाचे संस्थापक म्हणून समाजाला त्यांच्याबद्दल जिऱ्हाळा वाटतो, प्रेम वाटते.

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालयाच्या विकास कार्यात तर त्यांचा सिंहाचा वाटा आहे. या महा-विद्यालयाच्या इमारती म्हणजे त्यांच्या समृद्ध अनुभवाची, अमोल मार्गदर्शनाची व अथक परिश्रमाची साक्ष आहे. त्यांना मोठेपणाचा हव्यास नाही. कामाची मात्र त्यांना आवड आहे. एखादे कार्य हाती घेतले की ते पूर्ण करण्याचा त्यांना ध्यास लागतो. ते पूर्ण झाल्याशिवाय त्यांना स्वास्थ्य लाभत नाही.

ते अत्यंत बुद्धिमान, धोरणी व व्यवहार कुशल आहेत, त्यांना दूरदृष्टी आहे. भविष्याचा वेध ते सहज घेतात, त्यामुळे त्यांची पावले योग्य वेळी योग्य दिशेने पडतात. म्हणूनच ते इच्छित स्थळी इतरापेक्षा अगोदर पोहोचतात. आमच्या महाविद्यालयाच्या विकास कार्यात त्यांचे बहुमोल मार्गदर्शन आम्हाला सतत लाभले आहे त्यांच्या ७१ व्या वाढदिवसाच्या या मंगल प्रसंगी आम्ही त्यांना उत्तम आरोग्य व दीर्घायुष्य लाभो अशी प्रार्थना करतो.



॥ जीवेत् शरदः शतम् ॥

## प्राचार्य शिवाजीराव भोसले

मुधोजी महाविद्यालयाचे प्राचार्य शिवाजीराव भोसले यांची शिक्षण, समाज, विद्यार्थी, प्राध्यापक यांच्या वद्दलची निश्चित अशी भूमिका आहे. त्या भूमिकेतूनच ते आपले काम करतात. प्राध्यापकाने ज्ञानाची उपासना करावी, विद्यार्थ्यांला ज्ञानाने भरून टाकावे, त्यांचे समाधान करावे ही त्यांची अपेक्षा असते.

प्राध्यापकाचे व्यक्तिमत्व चौरस असावे. समाज त्याच्याकडे आदराने पाहात असतो. याचे त्याने भान ठेवावे. अध्यापनावरोबरच वाचन, लेखन, मनन-चिंतन, संशोधन यावर त्याने भर द्यावा अशी त्यांची आग्रही भूमिका आहे.

प्राचार्य शिवाजीराव भोसले यांनी आपल्या कार्यकुशलतेने एक आदर्श निर्माण केला आहे. त्यांच्या सारख्या व्यक्तीचा सहवाम आम्हांला लाभला. मित्र मार्गदर्शक म्हणून ते आम्हांला लाभले याबद्दल धन्यता वाटते.

प्राचार्य शिवाजीरावांच्या रसिकतेचा व गुणग्राहकतेचा प्रत्यय त्यांनी आमच्या महाविद्यालयाबद्दल दिलेल्या खालील अभिप्रायातून व्यक्त होतो-

“या महाविद्यालयाने आयोजित केलेल्या एका समारंभाच्या निमित्ताने येथे येणे घडले. मी बारामतीचा नित्याचा वारकरी. येथे माझे येणे सततच घडत राहाते. प्रत्येक वेळी या परिसरात नवे काहीतरी पहावयास मिळते. महाविद्यालय वर्धिष्णु आहे. प्राचार्य प्रयत्नशील आहेत. संचालक मंडळ उत्साही आहे. प्राध्यापकांची साथ आहे. थोडक्यात हे महाविद्यालय हा एक शैक्षणिक वाद्यवृंद आहे. येथे निर्माण होणाऱ्या संगीताला तोड नाही, तुलना नाही.”

प्राचार्य शिवाजीराव भोसले ह्यांनी साठी पूर्ण केली यावर विश्वास वसत नाही. अशा वेळी एकच विचार मनात येतो; प्राचार्यांचे उर्वरित आयुष्य ऐश्वर्याचे, सुखसमृद्धीचे जावो त्यांच्या अमृत-बाणीने सारा महाराष्ट्र व्हाऊन निघो! ह्या शुभेच्छा!



## हार्दिक अभिनंदन

१९८७ - ८८ या शैक्षणिक वर्षात पुढील प्राध्यापकांनी आपल्या शैक्षणिक गुणवत्तेत वाढ केली. त्यांचे हार्दिक अभिनंदन!

❖ वरिष्ठ महाविद्यालय-

१) प्रा. डॉ. चंद्रशेखर मुरुमकर : पीएच्. डी. (वनस्पतिशास्त्र) शिवाजी विद्यापीठ

२) प्रा. डी. बी. जगताप - एम्. फिल्. (इतिहास)

३) प्रा. एन्. एम्. नारे - एम्. फिल्. (कॉमर्स) 'ओ' ग्रेड

४) प्रा. ए. व्ही. इंगळे - एम्. फिल्. (कॉमर्स)

५) प्रा. ए. एस्. पंढरी - एम्. फिल्. (शिक्षणशास्त्र) 'ए' ग्रेड

❖ कनिष्ठ महाविद्यालय- डी. एच्. ई. उत्तीर्ण.

१) प्रा. ए. बी. पाटील - फिजिक्स

२) प्रा. आर्. के. नाळे - फिजिक्स

३) प्रा. एस्. के. वाळुंज - फिजिक्स

४) प्रा. ए. पी. गायकवाड - कॉमर्स

५) प्रा. आर्. डी. राजदरेकर- मार्केटिंग व सेल्समनशिप

६) प्रा. आर्. एल्. शिनकर- मार्केटिंग व सेल्समनशिप

❖ प्रा. डॉ. व्ही. व्ही. आचार्य हे पुणे विद्यापीठाच्या विधी सभेवर निवडून आले त्याबद्दल त्यांचे हार्दिक अभिनंदन!

★ पुणे विद्यापीठाने १९८६-८७ या वर्षात घेतलेल्या नियतकालिक-कांच्या स्पर्धेत आमच्या महाविद्यालयातील विद्यार्थिनी-कु. ज्योती मरकळे यांना त्यांनी लिहिलेल्या 'प्रिये पहा' या लेखाबद्दल प्रशस्ति पत्र मिळाले. त्याबद्दल त्यांचे हार्दिक अभिनंदन!

★ एप्रिल १९८७ मध्ये घेण्यात आलेल्या पुणे विद्यापीठाच्या बी. ए. परीक्षेत संरक्षणशास्त्र स्पेशल विषयात पुणे विद्यापीठात आमच्या महाविद्यालयातील पुढील विद्यार्थ्यांना गुणानुक्रमाने पहिला व दुसरा क्रमांक मिळाला व त्यांना खालील पारितोषिके मिळाली. त्याबद्दल त्यांचे हार्दिक अभिनंदन!

१) श्री. गोडसे विकास नारायण--(प्रथम क्रमांक)  
कै. गंगाधर गणेश कानेटकर पारितोषिक रु. २५०/-

दत्तप्रसन्न काटदरे पारितोषिक रु. १६५/-  
२) श्री गायकवाड अविनाश वामनराव (दुसरा क्रमांक)  
श्री. दत्तप्रसन्न काटदरे पारितोषिक रु. १६५/-

❖ श्री साहू श्रेयांसप्रसाद जैन यांना पद्मभूषण-भारत सरकारने श्री साहू श्रेयांसप्रसाद जैन यांना 'पद्मभूषण' हा किताब देऊन त्यांचा यथोचित गौरव केला या वद्दल अत्यंत आनंद झाला. त्यांचे हार्दिक अभिनंदन.

❖ श्री. अरविंदरावजी दोशी यांची महाराष्ट्र चेवर ऑफ कॉमर्सचे अध्यक्ष म्हणून निवड झाली. या वद्दल त्यांचे हार्दिक अभिनंदन!

❖ के. ब्रम्हानंद रेड्डी-विद्यापीठांचे नवे कुलपती- श्री. शंकरदयाळ

शर्मा यांची उपराष्ट्रपति पदावर निवड झाली आणि महाराष्ट्राच्या राज्यपाल पदावर के. ब्रम्हानंद रेड्डी यांची नेमणूक झाली. म्हणजेच विद्यापीठांचे कुलपती म्हणून ते काम पाहू लागले. पुणे विद्यापीठाचे नवे कुलपती म्हणून-के. ब्रम्हानंद रेड्डी यांचे आम्ही स्वागत करतो व त्यांचे अभिनंदन करतो.

❖ पुणे विद्यापीठाच्या कुलगुरुपदी प्रा. डॉ. वि. ग. भिडे यांची पुनर्नियुक्ती- २३ ऑगस्ट ८७ पासून पुढील तीन वर्षासाठी प्रा. डॉ. वि. ग. भिडे यांची महाराष्ट्र शासनाने पुणे विद्यापीठाच्या कुलगुरु-पदावर पुनर्नियुक्ती केली. गेल्या तीन वर्षांच्या कारकिर्दीत डॉ. भिडे यांनी पुणे विद्यापीठाला एक आंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा व लौकिक प्राप्त करून दिला. अनेक शैक्षणिक सुधारणा कार्यान्वित केल्या. विद्यापीठाचे कार्य समजाभिमुख केले. विद्यापीठाचा सर्वांगीण विकास घडविण्याचा प्रयत्न केला डॉ. वि. ग. भिडे यांच्या कारकिर्दीत पुणे विद्यापीठाची प्रतिमा अधिक उज्वल व तेजस्वी होईल असा विश्वास वाटतो. त्यांच्या पुनर्नियुक्तीबद्दल त्यांचे हार्दिक अभिनंदन!

❖ पुणे विद्यापीठाचे नवे उपकुलगुरु प्रा. डॉ. शं. ना. नवलगुंदकर ७ सप्टेंबर १९८७ पासून महाराष्ट्र शासनाने प्रा. डॉ. शं. ना. नवलगुंदकर यांची पुणे विद्यापीठाचे उपकुलगुरु म्हणून नेमणूक केली. प्रा. डॉ. नवलगुंदकरांनी विद्यापीठाच्या विविध स्तरावर उत्तम कार्य केले आहे त्या अनुभवाचा त्यांना निश्चित फायदा होईल. आम्ही त्यांचे हार्दिक अभिनंदन करीत आहोत.

❖ श्री वसंत कानेटकर-सुप्रसिद्ध नाटककार वसंत कानेटकर यांची ठाणे येथे झालेल्या अ. भा. मराठी साहित्य संमेलनाच्या अध्यक्षपदावर निवड झाली. त्याबद्दल त्यांचे हार्दिक अभिनंदन

❖ प्रा. गंगाधर गाडगे-यांना साहित्य अकादमीचे उपाध्यक्ष पद प्राप्त झाले. तसेच शिवाजी विद्यापीठाच्या मराठी विभागाचे प्रमुख प्रा. डॉ. गो. मा. पवार-यांची साहित्य अकादमीच्या कार्यकारी मंडळावर निवड झाली त्याबद्दल उभयतांचे हार्दिक अभिनंदन!

❖ मा. श्री. वसंतदादा पाटील व श्री. शंतनुराव किलोस्कर यांना पुणे विद्यापीठाची सन्माननीय डी. लिट् पदवी महाराष्ट्राचे माजी मुख्यमंत्री व राजस्थानचे माजी राज्यपाल लोकनेते श्री. वसंत दादा पाटील यांना तसेच सुप्रसिद्ध उद्योगपती श्री. शंतनुराव किलोस्कर यांना पुणे विद्यापीठाने डी. लिट् ही सन्माननीय पदवी देऊन त्यांचा गौरव केला या वद्दल उभयतांचे हार्दिक अभिनंदन!

❖ प्रा. डॉ. मा. गो. बोकरे प्रसिद्ध अर्थशास्त्रज्ञ यांची नागपूर विद्यापीठाचे कुलगुरु म्हणून नियुक्ती झाली, या वद्दल हार्दिक अभिनंदन!



## भावपूर्ण श्रद्धांजली

गेल्या १९८७-८८ वर्षात विविध क्षेत्रातील व्यक्तींचे दुःखद निधन झाले. त्यांना आम्ही भावपूर्ण श्रद्धांजली अर्पण करीत आहोत.

प्रा. डॉ. भीमराव कुलकर्णी

प्रा. भालवा केळकर

सत्यवादीकार वाळासाहेब पाटील

मराठी कथाकार जी. ए. कुलकर्णी

हिन्दी साहित्यिक स. ही. वात्स्यायन 'अज्ञेय'

सुश्री महादेवी वर्मा

श्री वियोगी हरि

श्री. व्ही. जोशी (ब्लॉक मेकर) पुणे

श्री. आर. सी. मोतीवाले, पुणे

याशिवाय आमच्या महाविद्यालयातील प्रा. व्ही. व्ही. उपाध्ये यांच्या मातोश्री, प्रा. डॉ. व्ही. व्ही. आचार्य ह्यांचे ज्येष्ठ बंधू, प्रा. बी. पी. जोहरापूरकर यांच्या भगिनी, प्रा. व्ही. ए. वकील यांचे ज्येष्ठ बंधू श्री. मधुकरराव वकील, प्रा. एन्. जे. सुबंध यांचे पिताजी श्री. जनार्दन सुबंध, प्रा. इ. के. पाटील यांचे ज्येष्ठ बंधू व प्रा. बी. वी. निरपणकर यांच्या मातोश्री सौ. गंगाबाई, श्री. उमराव नाना मुसळे (वाँचमन) ह्यांच्या धर्मपत्नी सौ. शेवूबाई, यांचे दुःखद निधन झाले. या सर्वांना आमची भावपूर्ण श्रद्धांजली!

## मा. श्री. शरदचंद्रजी पवार यांचे क्रीडापटूंना आवाहन-

दिनांक-१२ एप्रिल १९८८

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालयातील क्रीडापटूंची पुणे विद्यापीठ पातळीवर विविध क्रीडा स्पर्धासाठी निवड झाली होती. या क्रीडापटूंची मा. श्री. शरदचंद्रजी पवार यांना ओळख करून देण्यात आली. त्याचवेळी त्यांच्या हस्ते या क्रीडापटूंचा पुष्पगुच्छ व श्रीफळ देऊन सत्कार करण्यात आला. त्यावेळी त्यांनी क्रीडापटूंचे हार्दिक अभिनंदन करून क्रीडाक्षेत्रासंबंधीचे आपले मौलिक विचार मांडले.

क्रीडापटूंचे खास अभिनंदन करून महाविद्यालयाने क्रीडाक्षेत्रात केलेल्या कार्याविद्दल त्यांनी गौरवोद्गार काढले, आणि विद्यार्थ्यांना आवाहन केले की, आपण जे यश संपादन केले त्या यशावरच आपण समाधान मानू नका. आपल्या बारा-मती शहराचा आणि महाविद्यालयाचा विद्यार्थी विविध प्रकारच्या क्रीडास्पर्धात राष्ट्रीय पातळीवर चमकला पाहिजे केवळ मिळालेल्या यशावर समाधान मानू नका.

आपल्या या महाविद्यालयाने क्रीडाविषयक अनेक उपक्रम उत्तम प्रकारे चालविले आहेत. अनेक क्रीडा विषयक सोई या ठिकाणी उपलब्ध आहेत. त्याचा भरपूर फायदा घ्या. खूप मेहनत करा आणि पुढची आघाडी जिंकण्याची तयारी ठेवा. पुढच्या यशाच्या दृष्टीने उत्तम तयारी करा.

महाविद्यालयाने अनेक चांगले उपक्रम क्रीडाक्षेत्रासाठी उपलब्ध केले असून अनेक विकास योजनांचे आराखडे तयार केले आहेत. या सर्व विकास योजनांची पूर्तता करण्याच्या दृष्टीने प्रयत्न करण्याचे आश्वासन त्यांनी दिले व क्रीडापटूंना आपापल्या क्रीडाक्षेत्रात अपार मेहनत घेऊन नैपुण्य प्राप्त करण्याचे आवाहन केले.



श्री. शरदचंद्रजी पवार क्रीडापटूंना आवाहन करताना-



श्री. शरदचंद्रजी पवार ह्यांना श्री. चंद्रशेखर जगताप (आयू. सी. एस्. आर.) पुष्पगुच्छ देताना-

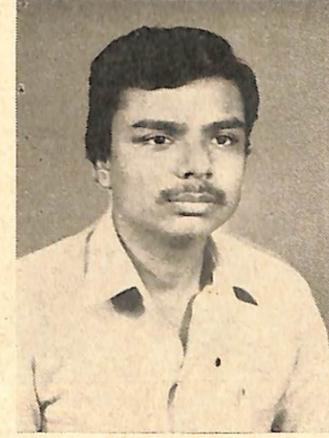
## महान साहित्याचे गुणधर्म-

व्यावहारोपयोगीता आणि सामाजिकता ही मातृभाषेची प्रमुख अंगे खरी, परंतु तिचे सांस्कृतिक रूप समाजाच्या अस्तित्वाच्या आणि अभ्युदयाच्या दृष्टीने जास्त महत्वाचे आहे. भाषेचे हे सांस्कृतिक रूप म्हणजेच वैचारिक आणि ललित साहित्य होय. समाजाच्या आचार-विचारांवर आणि नैतिक धारणेवर या साहित्याचा शतकानुशतके ठसा उमटत आलेला आहे. उलटपक्षी समाजाच्या इतिहासातील सगळी स्पंदने आणि उलाढाली या साहित्यात उमटलेली आहेत. पण मातृभाषेलाच तुच्छ लेखण्याच्या वाढत्या प्रवृत्तीमुळे नव्या जुन्या मराठी साहित्याचे संस्कार-सामर्थ्यच मावळू लागले आहे. जागतिक वाङ्मयाच्या तुलनेत मराठी साहित्याचे मोल काय आहे हा एक स्वतंत्र आणि वेगळा प्रश्न आहे. पण मराठी मनाला संस्कारसंपन्न करण्याचे बळ कालच्या आणि आजच्या मराठी ललित साहित्यात आणि वैचारिक गद्यात निश्चितपणे आहे. हे संस्कार मराठी मनावर जर होण्याचे थांबले तर या महाराष्ट्रभूमीत फक्त पाठार्थी भ्रष्ट माणसेच उपजत राहतील. मात्र प्रबोधन वा संस्कार करणाऱ्या ललित वाङ्मयाची जात कोणती त्याचे भानही आम्हाला पक्के असायला हवे. इथेच 'गुड' आणि 'ग्रेट' लिटरेचरमधली तफावत जाणवते. चित्रणशक्तीची सगळी कारागिरी आणि रंजकतेचे सगळे कौशल्य प्रगट करणारे साहित्य 'गुड' म्हणजे छानदार, मनोरंजक, चटकदार असते आणि त्याचीही समाजाला गरज असते यात शंका नाही. पण माणसावर प्रगल्भतेचा (Maturity) आणि शहाणपणाचा (Wisdom) संस्कार करणारे महान साहित्य गुणधर्मानेच वेगळे असते.

वसंत कानेटकर  
अध्यक्षीय भाषण  
मराठी साहित्य संमेलन ठाणे  
जानेवारी ८८



## उज्ज्वल यशाचे मानकरी



श्री. डी. डी. पांढरपट्टे  
माजी विद्यार्थी, उपजिल्हाधिकारी, रायगड-अलिबाग.

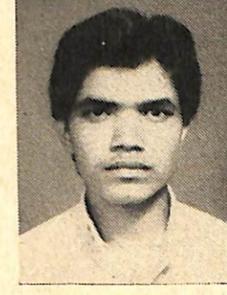
महाविद्यालयात प्रथम श्रेणीत प्रथम क्रमांक  
(हार्दिक अभिनंदन)



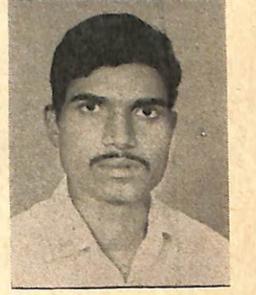
कु. सुचिता रणवरे



कु. माधवी शहा

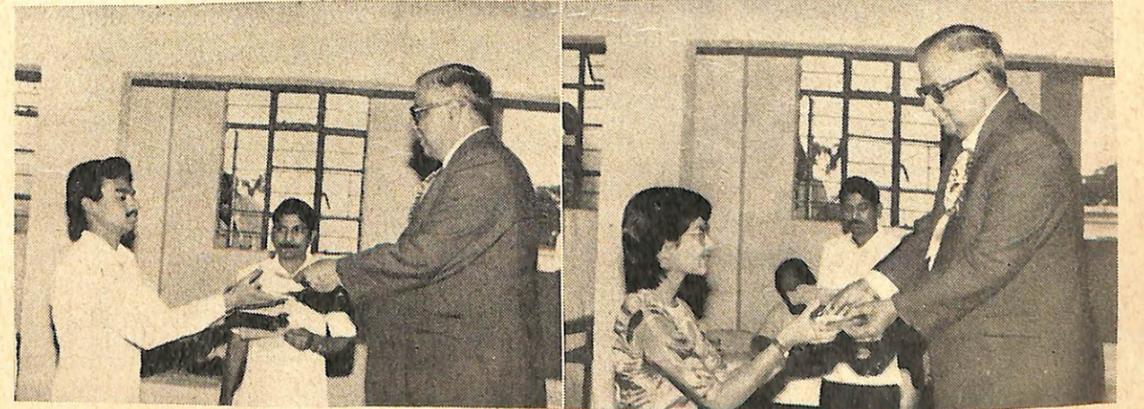


एस. एम. कारंडे



ए. एम. कांवळे

वार्षिक गुणवत्ता पारितोषिक वितरण



प्रमुख पाहुणे डॉ. शं. ना. नवलगुंदकर, उपकुलगुरु, पुणे विद्यापीठ, पुणे.

## महाविद्यालयाचा वर्धापन दिन



मा. डॉ. के. बी. पवार, कुलगुरु, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर यांचा सत्कार व भाषण.



मा. प्राचार्य शिवाजीराव भोसले

मा. श्री. जंबुकुमार शहा  
अध्यक्ष, स्थानिक समिती

## पुणे विद्यापीठ इतिहास अध्यापक परिषद



प्रा. डॉ. एरहार्ड शालर, जर्मनी यांचा सत्कार.

ऐतिहासिक ग्रंथ व कागदपत्रांचे प्रदर्शन,  
उद्घाटन हस्ते - मा. श्री. आप्पासाहेब पवार

## वार्षिक स्नेहसंमेलन



साडी नृत्य - (समूहनृत्य) वल्हव रे नाखवा...

कविवर्य मोरोपंत वाद आणि वक्तृत्व स्पर्धा पारितोषिक वितरण  
(प्रमुख पाहुणे श्री. विनोदकुमार गुजर अध्यक्ष, बारामती नगरपरिषद)



श्री. उपेंद्र खरे, आय. एल. एस. लॉ कॉलेज, पुणे  
वक्तृत्व स्पर्धेची ढाल स्वीकारताना.

श्री. उपेंद्र खरे व श्री. सुरेंद्र जोशी (ILS)  
हा संघ वाद स्पर्धेची ढाल स्वीकारताना.

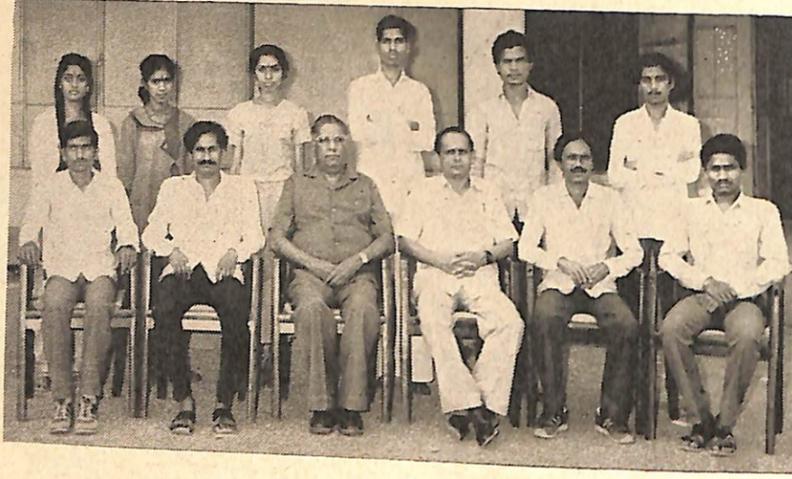
वार्षिक क्रीडा पारितोषिक वितरण समारंभ  
(प्रमुख पाहुणे मा. खासदार रामकृष्ण मोरे)



कु. वर्षा शहा  
व्हॉलीबॉल चषक स्वीकारताना,

श्री. बी. एल. भुजवळ  
पुणे विद्यापीठ खो खो स्पर्धेचे सुवर्णपदक स्वीकारताना.

## राष्ट्रीय सेवा योजना



मा. प्राचार्य व उपप्राचार्य यांच्या समवेत प्रोग्रॅम ऑफिसर व गटप्रमुख.

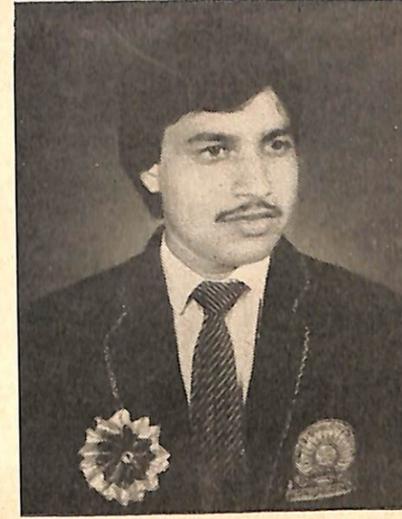


## सायकलवरून गिरीदुर्ग भ्रमण



डावीकडून -  
पी. परकाळे, एस. बाप्तीवाले,  
प्रा. डॉ. जे. के. गोधा,  
इ. शेख, एस. गुंडगे, एस. नांदणीकर.

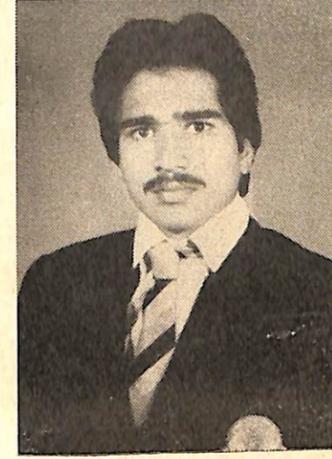
(पुरंदर, राजगड, तोरणा, सिंहगड, शिवनेरी, सज्जनगड, अजिंक्यतारा,  
प्रतापगड, महाबळेश्वर, वज्रगड आणि रायगड)



के. एम. गोंजारी  
विद्यापीठ प्रतिनिधी



आर. आर. झगडे  
स्नेहसंमेलन प्रतिनिधी



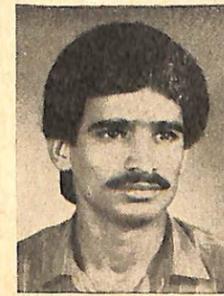
सी. एस. जगताप  
आय. सी. एस. आर.  
आंतरविभागीय कबड्डी



एस. के. सुभेदार  
नियतकालिक प्रतिनिधी



कु. वर्षा शहा  
आय. सी. एस. आर.  
व्हॉलीबॉल (पुणे विद्यापीठ संघात  
निवड) व आंतरविभागीय क्रिकेट.



आर. एम. चव्हाण  
सहल प्रतिनिधी



बी. ए. ढोबळे  
सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रतिनिधी

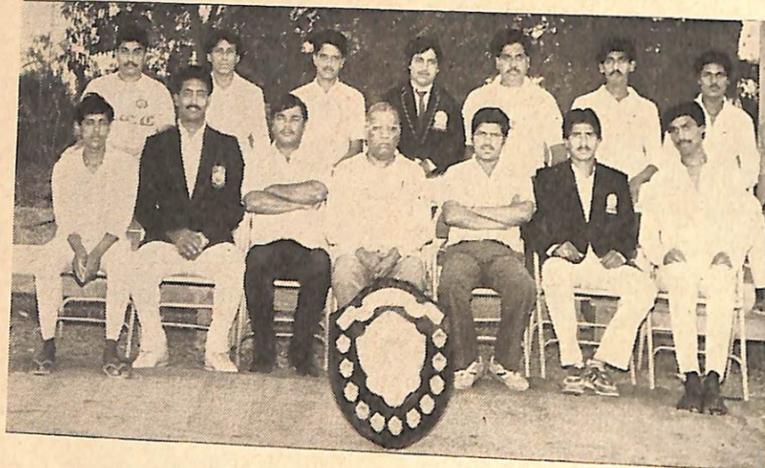


डी. ए. काकडे  
ग्रंथालय प्रतिनिधी



कु. सुखदा शहा  
विद्यार्थिनी प्रतिनिधी

## आंतरमहाविद्यालयीन क्रीडा स्पर्धा – विजयी संघ



- डावीकडून पहिली रांग –  
 १) डी. आर चितळे २) डी. बी. गुजर  
 ३) प्रा. एस. बी. इंगवले ४) प्रा. डॉ. जे. के. गोधा ५) प्रा. ए. एस. मेहेर  
 ६) सी. एस. जगताप ७) एन. आर. सुरवडे
- डावीकडून दुसरी रांग –  
 १) व्ही. आर. तरल २) एम. एम. व्होरा  
 ३) ए. ए. मोकाशी ४) के. एम. गोंजारी  
 ५) एस. बी. काळे ६) एस. एस. पाटील  
 ७) एच. डी. रंघवे.

क्रिकेट (मुले)

### डावीकडून –

- १) ए. ए. साळवी २) प्रा. एस. बी. इंगवले  
 ३) प्रा. डॉ. जे. के. गोधा ४) प्रा. ए. एस. मेहेर ५) सी. एस. जगताप  
 ६) डी. बी. गुजर

टेबल टेनिस (मुले)



### डावीकडून –

- १) एम. एम. व्होरा २) ए. ए. साळवी  
 ३) प्रा. ए. एस. मेहेर ४) प्रा. डॉ. जे. के. गोधा ५) प्रा. एस. बी. इंगवले  
 ६) सी. एस. जगताप ७) यु. व्ही. पोळ

बॅडमिंटन (मुले)



## आंतरमहाविद्यालयीन क्रीडा स्पर्धा – विजयी संघ



### डावीकडून पहिली रांग –

- १) एस. एस. साळवे २) के. एम. पोटे  
 ३) ए. डी. सातव ४) प्रा. ए. एस. मेहेर  
 ५) प्रा. डॉ. जे. के. गोधा ६) प्रा. एस. बी. इंगवले ७) सी. एस. जगताप ८) बी. एल. भुजबळ ९) एच. सी. माने.

### डावीकडून दुसरी रांग –

- १) एस. बी. नलगे २) एस. बी. चौधरी  
 ३) आर. एम. कदम ४) व्ही. एस. तिकोळे ५) टी. वाय. कदम.

खो खो (मुले)

### डावीकडून –

- १) ए. डी. महामुनी २) एस. एम. शहा  
 ३) ए. ए. साळवी ४) प्रा. एस. बी. इंगवले ५) प्रा. डॉ. जे. के. गोधा  
 ६) प्रा. ए. एस. मेहेर ७) सी. एस. जगताप  
 ८) एस. एम. मोदी ९) एस. एम. बोवडे

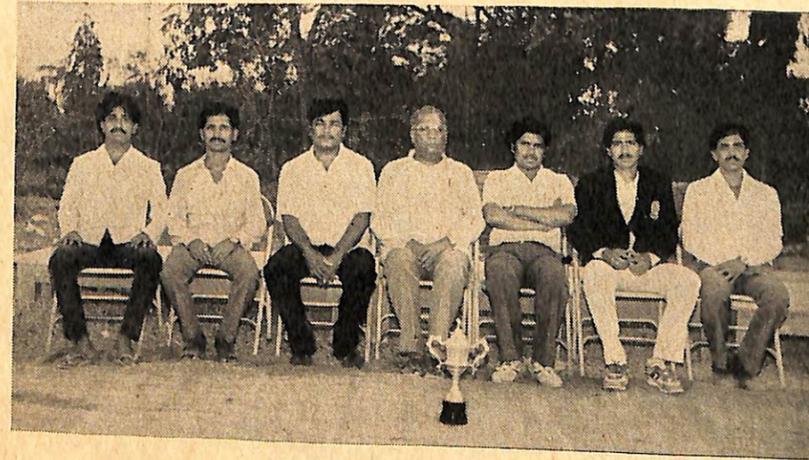
बुद्धीबळ (मुले)



### डावीकडून –

- १) ए. आर. धोंगडे २) डी. के. निंबाळकर  
 ३) प्रा. एस. बी. इंगवले ४) प्रा. डॉ. जे. के. गोधा ५) प्रा. ए. एस. मेहेर  
 ६) सी. एस. जगताप ७) बी. के. काकडे

मल्लखांब



## आंतरमहाविद्यालयीन क्रीडा स्पर्धा - उपविजयी संघ



### डावीकडून पहिली रांग -

- १) एस.एस. मेहता २) व्ही. एम. घोगरे
- ३) प्रा. ए. एस. मेहेर ४) प्रा. डॉ. जे. के. गोधा ५) प्रा. एस. बी. इंगवले
- ६) सी. एस. जगताप ७) एम. ए. पांडकर
- ८) के. व्ही. देशमुख.

### डावीकडून दुसरी रांग -

- १) एन. आर. भापकर २) आर. एस. वगाडे ३) वी. ए. ढोवळे ४) एन. ए. पटेल ५) पी. वाय काशीद.
- वाॅस्केटबॉल (मुले)

### डावीकडून पहिली रांग -

- १) पी. एस. आहुजा २) प्रा. एस. बी. इंगवले ३) प्रा. डॉ. जे. के. गोधा ४) प्रा. ए. एस. मेहेर ५) सी. एस. जगताप ६) ए. डी. सातव.

### डावीकडून दुसरी रांग -

- १) एच. जी. तावरे २) एस. जे. सोनवणे ३) व्ही. व्ही. होलम ४) एस. बी. काळे ५) एस. एल. शितोळे ६) जी. एस. शिंदे ७) डी. एम. सरोदे.

कबड्डी (मुले)



### डावीकडून पहिली रांग -

- १) कु. स्वाती गरगटे २) प्रीती काळे ३) प्रा. एस. बी. इंगवले ४) प्रा. डॉ. जे. के. गोधा ५) प्रा. ए. एस. मेहेर ६) वर्षा शहा ७) वसुंधरा शहा

### डावीकडून दुसरी रांग -

- १) कु. भारती सुर्वे २) सुनिता शितोळे ३) सविता पांडकर ४) आशा सातव ५) अनिता गायकवाड ६) आशालता गवळी

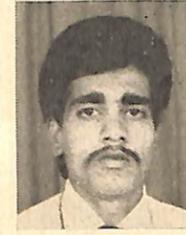
वाॅस्केटबॉल (मुली)

## आंतरविभागीय क्रीडास्पर्धेत निवड झालेले क्रीडापटू

हार्दिक अभिनंदन !



एम. ए. पांडकर  
वाॅस्केटबॉल  
बॉल गेम्स सेक्रेटरी



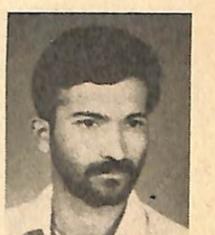
ए. ए. साळवी  
टेबल टेनिस  
मायनर गेम्स सेक्रेटरी



एन. आर. सुरवडे  
क्रिकेट  
क्रिकेट सेक्रेटरी



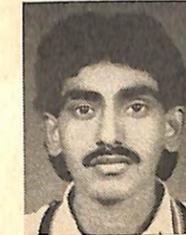
ए. एस. जाधव  
क्रिकेट



एम. एम. झाडबुके  
क्रिकेट



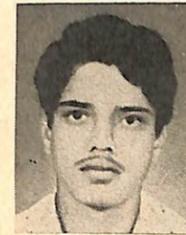
डी. आर. चितळे  
क्रिकेट



एम. एस. पाटील  
क्रिकेट



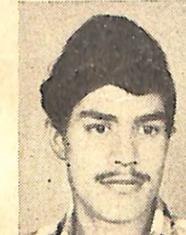
एम. एम. व्होरा  
क्रिकेट व बॅडमिंटन



ए. ए. मोकाशी  
क्रिकेट



एस. बी. काळे  
क्रिकेट



के. एम. पोटे  
खो-खो, शरीर सौष्ठव



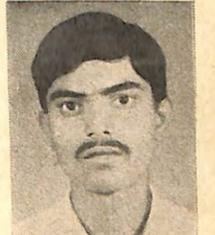
एस. ए. साळवे  
खो-खो



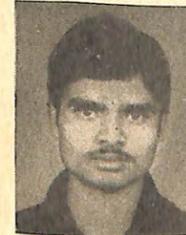
एच. सी. माने  
खो-खो



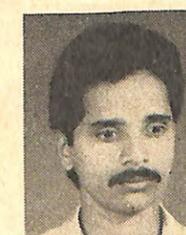
बी. एन. पवार  
खो-खो



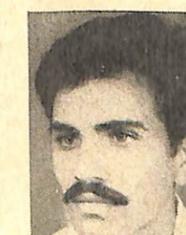
आर. एम. कदम  
खो-खो



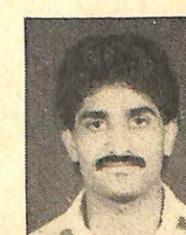
जे. एस. शिंदे  
टेबल टेनिस



डी. के. निवाळकर  
मल्लखांब



बी. के. काकडे  
मल्लखांब



ए. आर. धोंगडे  
मल्लखांब

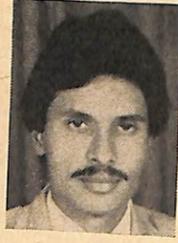


एस. एम. तावरे  
व्हॉलीबॉल

# आंतरविभागीय क्रीडास्पर्धेत निवड झालेले खेळाडू

हार्दिक अभिनंदन !

## वर्ग प्रतिनिधी



व्ही. एम. घोगरे  
बास्केटबॉल व हॅण्डबॉल



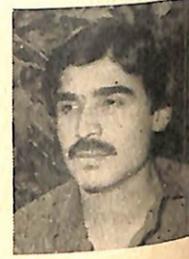
व्ही. एम. खाडे  
बास्केटबॉल



एस. एस. मेहता  
बास्केटबॉल



डी. एम. सरोदे  
शरीर सौष्ठव



एम. जी. शहा  
बॅडमिंटन



के. एस. देवकाते  
एफ.वाय.बी.ए. (अ)



एस. के. इंगळे  
एफ.वाय.बी.ए. (ब)



एस. जे. सोनवणे  
एफ.वाय.बी.ए. (क)



एस. आर. निवाळकर  
एफ.वाय.बी.ए. (अ)



आर. एम. देवकाते  
एफ.वाय.बी.ए. (ब)



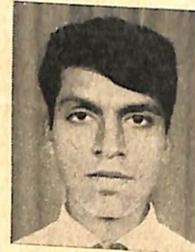
व्ही. के. सनगर  
बॅडमिंटन



यु. व्ही. पोळ  
बॅडमिंटन



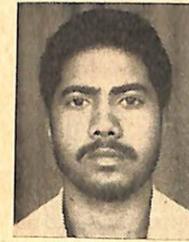
एस. एम. मोदी  
बुद्धीवळ



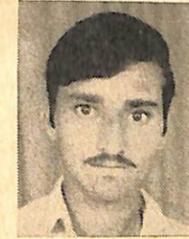
के. एस. जाधव  
बुद्धीवळ



कु. शुभांगी पाटसकर  
हॉलीबॉल, क्रिकेट व कबड्डी



एस. एस. ननवरे  
एफ.वाय.बी.कॉम. (अ)



एम. एम. जगताप  
एफ.वाय.बी.कॉम. (ब)



व्ही. व्ही. होलम  
एफ.वाय.बी.कॉम. (क)



व्ही. एस. गायकवाड  
एस.वाय.बी.ए. (अ)



एम. के. विचकुले  
एस.वाय.बी.ए. (ब)



कु. अनिता दोशी  
हॉलीबॉल व क्रिकेट



कु. स्मिता पोळ  
हॉलीबॉल व क्रिकेट



कु. प्रीती काळे  
बॅडमिंटन व बास्केटबॉल



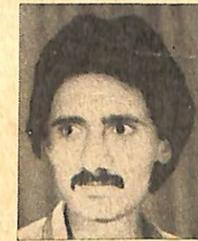
कु. स्वाती गरगटे  
बॅडमिंटन



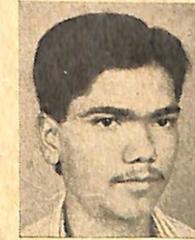
कु. भारती सुर्वे  
बॅडमिंटन



आर. वी. भोसले  
एस.वाय.बी.ए. (क)



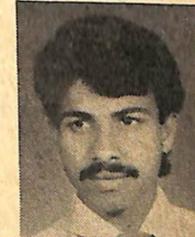
एम. आर. सणस  
एस.वाय.बी.ए. (क)



एल. डी. परकाळे  
एस.वाय.बी.कॉम. (ब)



एम. व्ही. भागवत  
एस.वाय.बी.कॉम. (क)



पी. वाय. काशीद  
टी.वाय.बी.ए. (अ)



कु. प्रतिभा कांबळे  
क्रिकेट



कु. सविता अष्टपुत्रे  
क्रिकेट



कु. सुनिता जाधव  
क्रिकेट



कु. शीला भोसले



बी. एस. मसुगुडे  
वर्ग प्रतिनिधी, एम. कॉम.



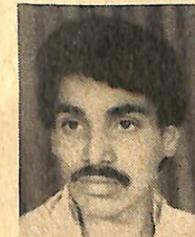
आर. एन. राससर  
टी.वाय.बी.ए. (ब)



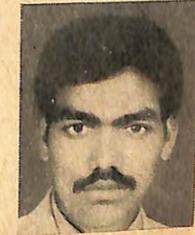
आर. एम. धालपे  
टी.वाय.बी.ए. (ब)



कु. शुक्ला दोशी  
टी.वाय.बी.कॉम. (क)



वाय. एम. खलाटे  
टी.वाय.बी.कॉम. (ब)



एस. के. बांदल  
एम. ए.

## स्वप्नशिल्प-

पचार एम्. बी.  
एम्. वाय्. बी. ए.

मी चालत होतो थांबावेमे वाटतच नव्हते. थोडी पावसाची झिम्झिम थोडी सूर्यकिरणांची तिरोप आणि थोडी पश्चिमेस वाऱ्याची मऊ झुळक मिळाली, की घेते-राने खुषीत येतात मी पण मी उदास अंतःकरणाने चालतच होतो. आपण जिच्या अंगाखांद्यावरून चालतो ती पृथ्वी किती साधी आहे. आणि प्रेमाने व जीवनात क्षणात मोहून ज पारी आहे. दशसहस्र वर्षे आली गेली, पण तिच्यातील जादू आहे तशी आहे.

थोडी प्रीती, थोडी श्रद्धा, प्रेमभावनेची एक लकेर किवा एक आकस्मित स्वप्न यांचे एवढे सामर्थ्य आहे की, जीवन अगदी वैराण धाळ-वंट बनले असते तरी ते पर्वतावर उगम पावलेल्या झऱ्याइतके ताजेतवाने बनते. मी अतिशय बेचैन होतो. काय घडलं पेक्षा कसं घडलं याचच मला वाईट वाटत होतं रडावस वाटत होतं पण रडू फुटत नव्हतं. अशा कोंडलेल्या अवस्थेत मो किलीतरी वेळ एकांतात येऊन बसलो होतो.

मला पहिल्यापासून त्या आठवणी येऊ लागल्या. ती अनुराधा ही अनुराधा नाही. फक्त अनु हा अनुच म्हणायचो मी तिला. १०वी च्या वर्गापासून आपली तिच्याशी चेहरे ओळख अगदी लहानपणापासून अनु अबोल व लाजाळू स्वभावाची परंतु सदा टवटवीत फेश असायची १० वी मी ही पास झालो व अनुही अगदी चांगल्या मार्का-नेच परंतु अनु मध्यपेक्षा जास्त मार्कांनी पास झाली हे कबूल करावे लागेल. दोघांनीही कॉलेजला प्रवेश घेतला. मला तर अगोदर पासूनच कलेजचे आकर्षण. कलेजचे दिवस जसे हळूहळू जात होते तसे आमच्या मध्ये बदल होत गेले आणि मी अनुवर जसा १०वी मध्ये प्रेम करत होतो त्याचो जागा अतिप्रेमाने घेतली आणि डोळ्यासमोर फक्त अनु. वास्तविक प्रियकर आणि प्रेयसी यांच्या प्रेमाच्या पातळीचा विचार तर तो अधि ह भावनात्मक असते स्त्री आणि पुरुष यांच्यामध्ये एक-मेकांच्या सहवासाची गरजही नैसर्गिक असते त्यांना एकमेकांशिवाय अधुरेपण जाणवतं. परंतु प्रियकर आणि प्रेयसी मधील जी मानसिक गरज असते. त्यामाग आपल्याला योग्य जीवन साथी मिळावा हा उद्देश असतो. फालतू प्रेम करणारे शारीरिक गरजेची निगडीत असतात मी सुद्धा प्रेम केलं अगदी पवित्र प्रेम. परंतु अनुला कसं ते प्रेम पटवावं वसं सांगावं शेवटी काय झालं? सर्वच वाजूंनी निराशा.

To err is human या प्रमाणं माझं ही झालं मी काहीही विचार न करता अनुला प्रेमत्र लिहीलं परिणाम-अनु नाराज. या नाराजीने वास्तविक तिच्यापेक्षा मीच झालो नाराज. मी ही चुकलो प्रत्येक माणूस चुकतो मी ही एक माणूसच ना. झालं काही दिवसानंतर अनुच्या वडिलांनी अनुला शिक्षणासाठी बाहेरगावी पाठवायचं ठरवलं मी मी मला अतिशय वाईट वाटलं. जीच्यासाठी आपण इतके दिवस

अगदी निरागस प्रेम केलं ती आता जाणार मी अनुला भेटलो. वास्तविक तिच्या बरोबर बोलताना व इतर मुलीबरोबर बोलताना एक फरक मला जाणवत होता तो आताही जाणवला. अनु. "अनु मी तुला भेटायला आलोय" मी अडखळतच बोललो. परंतु माझे मत होतं त्यापेक्षा वेगळच घडलं गर्विष्ठ अनु अगदी खळवळून हसत होती "अरे सतीश तू आणि मला भेटायला हं तसं तुझं भेटणं त्या पत्राच्या बाबतीत निगडीत असेल ना" नाही अनु म्हणे बाहेरगावी चाललीय तू शिक्षणासाठी "हो खरंचय ते" अनु आजपर्यंत मी काही चुकलो असेल ना तर विसरून जा अनु प्लेटोच्या ज्ञानमंदीराच्या बाहेर एक पाटी लावली होती असे म्हणतात त्या पाटीवर ज्याना भूमिती कळत नाही त्यांना या मंदि-रात प्रवेश नाही "असे म्हटले होते. "सतीश मी तुझ्या भावना समजू शकते परंतु आपल्या घरच्या लोकांच्याही काही आशा-आकांशा असतात. काही मोठी उद्दिष्टे असतात, ती प्रथम आपण पूर्ण करण्याचा प्रयत्न करायला हवा. असं म्हणून अनु कुठल्यातरी विचार करण्यात गढून गेलेली दिसली मलाही माझ्या इच्छा, आकांक्षा पूर्ण करायच्याच होत्या परंतु ही अनु कधीपासून आपल्या जबाबदाऱ्या ओळखू लागली असं वाटायला लागलं

मी त्या दिवशी कॉलेजला जायचं टाळलं कॉलेज नुकतंच सुरू झालं होतं त्यामुळं तासही एखादाच होत असे तरीही गेलो कॉलेजच्या आवारातून जात असतानाच अनु दिसली. ती माझ्याकडंच येत होती. ती एकटाच होती आज मोही एकटा. अनु आली व तिनं स्मितहास्य केलं वास्तविक ते हसणं बळेबळेंच आणलेल असावं असं मला वाटलं. काय सतीश आज

काय सतीश आज तुमची स्वारी एकटीच फिरताना दिसतेय? अनुबोला-यचं म्हणून बोलली "सतीश" असं म्हणत असतानाच तिच्या डोळ्यात टचकन पाणी आले "अनु, अनु काय हे अं रडायला काय झालं? अनु रडतच होती मला मात्र काहीही कळत नव्हतं अगदी लहापनापासूनच ही अनु कसल्याही लहान-लहान कारणांनी रडत असायची. परंतु आज अनु कॉलेजवर रडतेय. अनुचं रडणं थोडसं थांबलं "सतीश मी आज चाल-लेय. माझ्या विषयी गैरसमज करून घेऊ नकोस आणि पुन्हा गळ्या-तील लाकट तोडांत धरून तिच्या डोळ्यातून पाणी येऊ लागलं 'अनु मी तुला समजू शकतो थोडीच तू माझ्या जीवनात नवीन आलीयस अगं अगदी लाहूनपणापासून तुझी माझी ओळख आहे ना तुझ्याबद्दलचे माझे विचार चांगले आहेत व पुढे ही त्यामध्ये बदल होणार नाही. तू जा If you want to pass your B. Com. you will have to turn over the new leaf.

अनुला मी निरोप दिला. अनु गेली चालताना अतिशय मोहक वाटत होती तिच्या केसातील जाईच्या गजऱ्याचा सुगंध ती बोलत असताना

दरबळत होता. परंतु मलाही अतिशय वेचैन वाटू लागलं. अनुच्या मनात काय असावं तिला आपल्याबद्दल इतकी आस्था का असावी काल आपल्याला उद्दिष्टे व आशा-आकांक्षाच्या विषयावर बोलणारी अनु आज रडावी असं कसं झालं? मला यावेळी एक शेर आठवला "जो अपने होते है ओ खूद चले आते है, बुलाया उन्हे जाता है जो पराये होते है।"

मला वाटत होतं कौटुंबिक जीवनातील मूल्ये अजूनही जतन करावीत. विलक्षण असा एक प्रेमाचा धागा गुंफायचा अगदीच सर्व मणी इतस्तः विखुरलेले नाहीत अजूनही आगेचा किरण आहे. प्रेमात

## राष्ट्रीय एकात्मता

हिंदू मुस्लीम शीख ईसाई  
या सर्वांची एकाच आई  
उच्च नीच ना तिच्या ठायी  
सर्वांना ती कुशीत घेई  
कृष्णा, कोयना, भीमा, चंद्रभागा  
सीना आणि निरो-करा  
सर्वांतून वाहतात अनेक धारा  
परि मिळतात एकाच सागरा  
अनेक धर्म अनेक पंथ  
परि आम्हा ना त्याची खंत  
मुखी आमुच्या एकच गाण  
भारत माता जी की प्राण

माझ्या वीर युवक मित्र-मैत्रीणींनी विश्वास असूया तुम्ही सर्वजण महान कार्य करण्यास जन्मास आला आहात. उठा आणि कार्याला लाग. वंडखोराच्या वंडखोरीमुळे भयभयित होऊन घाबरून जावू नका. तुमच्या देशाला वीरांची आवश्यकता आहे. वीर वना पर्वता प्रमाणे दृढ वना. स्वामी विवेकानंदाचे बोल आजच्या तरुण पिढीला कितपत खरे ठरवतात हे तर समाज आपल्या उघड्याडोळ्यांनी पाहत आहे. आपल्या राष्ट्राचे भवितव्य हे आजच्या तरुण पिढीवर अवलंबून आहे. पण आजचा तरुण वेगळ्याच चाकोरीनं चाललेला आहे. त्याचा मार्ग वेगळा आणि नाशवंत ठरणार आहे. हे घडत आहे तरी कसे? कोण जाणे परंतु आजचा तरुण विघडला आहे असे मला म्हणायचे नाही.

अशू ढाळणारे आणि ते मुकाटयाने गिळणारे हे रडव्या दिलाचे लोक नको आहेत. इथे हवे आहे पेटून उठणाऱ्या युवकांचे नेतृत्व. तरच या खंडप्राय देशाचे दारिद्र्य दुःख जळून भस्मसात होईल. आणि एक नवा देश आकाराला येईल,

समाजामध्ये आपण चौकस बुद्धीने पाहिले तर खरा युवक हो

एकमेकांसाठीची मजा एक वेगळीच असते. मला अनुबद्दलच्या विचारांनी अतिशय वेचैन करून सोडलं होतं. मी चालत अतिशय निराश अंतःकरणाने बरेच लांब आलेलो होतो व मनामध्ये अनुबद्दल काहूर उठलेलं होतं. अनु गेली मी मात्र भविष्यकाळाचा विचार करण्यात गडून गेलं होतं

दिलमें तुम्हारी याद, आंखोमे तुम्हारी तस्वीर, अगर फिर भी तुम ना आयी तो आगे हमारी तकदीर!



धामरे बी. यु.  
एस्. वाय्. बी. ए.

मातेकडून घडविला जातो लहान मुलांना सुसंस्कार मिळतात ते माते कडूनच. शिवाजी महाराजांचे उदाहरण आपल्या डोळ्यापुढे आहे. की खरा शिवाजी घडविला तो जीजामातेने त्यामुळेच शिवाजी स्वराज्याचे तोरण बांधू शकले. दुसरे असे की मुलांना सुसंस्कार मिळतात ते शाळेत दिलेल्या शिक्षणातून. यशवंतरावांचे उदाहरण आपणाम देता येईल. ते शाळेमध्ये शिकत असताना तू कोण होणार असे शिक्षकांनी विचारले असता ते म्हणाले होते की यशवंतराव चव्हाण होणार आणि खरोखरच ते यशवंतराव चव्हाणच होवून गेले

पुस्तकाच्या पहिल्याच पानावर प्रार्थना लिहलेली असते की भारत माझा देश आहे. आणि सारे भारतीय माझे देश बांधव आहेत. वावारे भारत देश तुम्हा कशावरून? ज्या देशामध्ये तयार होणारी वस्तू तून वापरता दुसऱ्याच देशाची वस्तू इम्पोर्टेड म्हणून समजतात कुणी तुला विचारले की तुम्हा देशाचा जगान कितवा नंबर आहे. तर अधिमानाने सांगतास की इंग्लंडचा १५ आहे आणि भारताचा ११५ आहे. तेव्हा तू परदेशीवस्तूवर व परदेशीदेशावर प्रेम करतोस? आता सांग कशावरून तुम्हा देशावर तुझे प्रेम आहे. तुम्हा देशात तयार झालेल्या वस्तूवर तू नाकमुरडतोस मग तुझे प्रेम ते कसले?

सारे भारतीय माझे बांधव आहेत. खरोखरच आहेत का? सर्व भारतीय तुझे बांधव? ज्या मातृ-भूमीच्या सावलीमध्ये आपण जन्माला आलो आहोत. ज्या एकाच भूमीमध्ये आपण राहत आहोत त्या माणसालाच आपण उच्च-नीच समजतो. आणि वरती जाती, धर्म, पंथ अशा शब्दांचा भडीमार करतो हे सर्व समाजामध्ये चालतं आणि नेमकं हेच लहानमुलावर विववळ जातं

जीवनाच्या विविध क्षेत्रात तरुणांना अधिक-अधिक वाव द्यावा हे सध्याच्या विचारांचे सूत्र आहे. म्हणून आजच्या समाजाने सामाजिक बांधीलकीचा कळस उभारला पाहिजे. त्यासाठी तरुण मनामध्ये चैतन्य नवीन काहीतरी करण्याची जिद्द अन् उमेद एखाद्या ध्येयासाठी स्वतःला जोकून देण्याची वृत्ती झेप घेवून गगनाला गवसणी

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, वारामती

घालण्याचे साहस हे सर्व निर्माण केले पाहिजे हे मिळण्यासाठी आपण सर्व एक आहोत असं तरुण मनावर विववळ पाहिजे.

ते केवळ मनालाच वाटून घेऊन त्याचा काय उपयोग तर आपण सर्वजण राष्ट्रीय एकात्मतेच्या झेंड्याखाली आले पाहिजे. राष्ट्रीय एकात्मता म्हणजे तरी काय? तर राष्ट्रातील सर्व माणसांचे एकमत पण, आज हे एकमत आपल्या भारतवासीयां-मध्ये दिसून येत नाही सध्या चालू आसलेलीच उदाहरणे पहाता महाराष्ट्र-कर्नाटक सीमाप्रश्न पंजाबप्रश्न असे कितीतरी आपणा सर्वांची ही मायभूमी असून तिच्यामध्ये विघटन केले जाते. तिच्यामध्ये वाटाघाटी केल्या जातात यादगन असे म्हणता येईल की माणूस माणुसकी हरवत चालला आहे. आपल्या राष्ट्रा-विषयी त्याच्यामनामध्ये कसलेच प्रेम नाही. राष्ट्राचा राज्याकारभार चालविण्यासाठी एक नेता तरी आपणाला एकमताने निवडता येतो का? त्यासाठी एक नाही दोन नाही अशा अनेक कितीतरी पाटर्चा कितीतरी मोर्चे एकमेकांच्या विरुद्ध उभारले जातात लाखो रूपयांची उधळण विनाकारण केली जाते आज एका पुढाऱ्याचे भाषण तर लगेच दुसऱ्यादिवशी त्याच्याविरुद्ध दुसऱ्या पुढाऱ्याचे भाषण हे असे का घडावे? हे आमच्या आजच्या समाजाला समजत नाही.

मराठीत एक म्हण आहे. स्वतःसाठी जगलास तर मेलास दुसऱ्यासाठी मेलास तर जगलास. खऱ्या अर्थाने समाजाची सेवा करणारे समाजसुधारक जगतात. पण आज मात्र समाज जिवंत असूनही मेल्यासारखा वाटतो. स्वतःच्या हितासाठी दुसऱ्याचे दुःख मात्र त्याला दिसत नाही. तर मग तो स्वतःच्या उत्पन्नातील काही भाग समाजाच्या प्रगतीसाठी द्यायला तयार होईल काय? परंतु आजच्या तरुण युवक मित्र-मैत्रीणींनी हे तरी आपल्या लक्षात असले पाहिजे. की, पराजित देशाचा धर्मप्रतिनिधी किती स्वाभिमानी अन् तेजस्वी असू शकतो हे अमेरिकेसारख्या पुढारलेल्या देशात ५ ते १० मिनिटात भारतीय तत्वज्ञानाचा स्फूर्तिग चेतवू शकणारा 'विवेकानंद' त्याचे नाव ही भारतीयांची उदाहरणे घडवडीतपणे सांगताहेत की

- ★ अनुभव हा एक असा शिक्षक आहे की तो आधी परीक्षा घेतो आणि नंतर शिकवितो.
- ★ गुलाबाच्या सुंदर रोपाला काटे लागले म्हणून दुःखी होण्यापेक्षा काटेरी झुडपाला कशी सुंदर फुले लागतील असाच विचार माणसाने नेहमी करावा.
- ★ अनुभव आणि ध्येवहार याची सांगड घातल्या शिवाय कोणतीही विद्या पूर्ण होत नाही
- ★ संधी हि अशी गंमतीदार चीज आहे की, येताना ती फारच लहान दिसते व निघून जाताना किती तरी मोठी भासते.
- ★ उच्चारावरून विद्वता, आवाजा वरून नम्रता आणि वर्तना वरून शीलता समजते.
- 卐 पदवी म्हणजे ऐषआरामाचा परवाना नसून स्वीकारलेली भूमिका उत्तम प्रकारे पार पाडण्याची जबाबदारी आहे.

संकलन : विजया विनायक गोसावी  
एफ् वाय् बी-कॉम

आज एस्. वाय्. चा निकाल होता. रवी माझा भाऊ माझ्या-कडेच शिकायला होता. तो सुट्टीला गावी गेल्याने त्याचा निकाल मलाच आणावा लागणार होता. आणि त्या करीता मी कॉलेजवर गेलो. नुकतेच कॉलेज सुरु झाले होते.

एक प्रोफेसर स्टाफ सोडला तर कॉलेजचा स्टाफ जसाच्या तसा होता. पूर्वी मी कॉलेजला होतो तसेच वातावरण यावेळी होते. थोडा फार बदल झाला होता. पण कॉलेजचं वातावरण कधीही परकं किंवा बदललेलं वाटत नाही. ऑफिसच्या क्लार्कस्विडकीजवळ आलो तर शिपायाने सांगितले की क्लार्क बाहेर गेलेत, आर्धा तास लागेल. तसाच मागे फिरलो अन् दोन चार पावले पुढे जातो तोच समोर पारिजातकाचे झाड दिसले. पूर्वी याच झाडाखाली मी कॉलेजला असताना किती तरी वेळ बसत असे.

तेवढ्यात पिरियडची बेल वाजली, आणि समोरून माझ्याच दिशेने एक मुलीचा घोळका येताना दिसला. त्यामध्ये गीताची वहीण सरिता मला दिसली. नकळत गीताची स्मृती झाली. तिने मला पाहिले व ती त्या घोळक्यातून माझ्याकडे आली व तिने मला विचारले, "आज तुम्ही कॉलेजवर कसे काय?" रविचा निकाल आणावयास आलो होतो. 'बरं ते असो सध्या गीता कोठे असते?' असे मी म्हणताच तिने खाली बघितले. पण, मला गीताबद्दल जाणून घ्यावयाचे होते. त्यामुळे मी तिला म्हणालो, "आता तुला पिरियड आहे का?"

'हो. पण महत्वाचा नाही.' ती म्हणाली. पांच मिनिटं आपण कॅन्टीनला बसलो तर? "चालेल चला. ती माझ्या मागे येत म्हणाली ती नको म्हणत असताना मी कॉफीची आर्डर दिली. ती माझ्या समोरच बसली. नकळत समोर गीता बसल्याचा भास झाला. दिसायला अगदी तिच्यासारखीच, काळेसार टपोरे डोळे. तसेच फडफडणाऱ्या पापण्या, लांबसडक कमरेखाली येणारे केस आणि त्याच आवाजात मार्दवपूर्ण हेल काहून बोलण्याची तीच दव.

जणू चार वर्षांपूर्वीचे कॅन्टीन आहे आणि समोर गीता बसली आहे. मला हे आठवत असतानाच सरिता म्हणाली, "तुमचं नाव गीताच्या बोलण्यातून नेहमीच यायचं" तेवढ्यात कॉफी आली. त्यावर ती म्हणाली "खरच किती छान झालं असतं तर" असं मी म्हटलो. मुद्दा लगेच करीन तर जयशीच." त्यावर मी म्हणालो "बरे झाले आणि ती श्रीमंतीत वाढली होती. मला तिला सुखी करता आले नसतं नव्हे ती सुखी राहू शकली नसती. आणि मी आज एका कंपनीत सी. ए. आहे. कंपनीचा बंगला, गाडी सर्व काही आहे. हे ऐकून सरिता विषण्ण मनाने हसली आणि म्हणाली "खरच, त्यावेळी गीताचं

मंजय गुंडगे  
टी. वाय्. बी. कॉम.

चुकलं, तिने फक्त पैसाच पाहिला. आणि काय सांगू जय, हाच पैसा तिच्या मृत्युस कारणीभूत ठरला." मी एकदम खिन्न स्वरात म्हणालो "काय? गीता या जगत."

लगेचच सरिताने मला सावरले आणि म्हणाली, "तीच्या सास-रच्या लोकांनी आमच्या पैशाकडे पाहून गीताशी लग्न केले. वारवार पैशाची मागणी करून तीला खूप छळले. हा छळ तिला सहन झाला नाही म्हणून तिने आत्महत्या केली." हे ऐकून मला त्या वेळची गीता आठवली.

गीता, "जीने माझ्या कोवळ्या तारुण्यातील दोन वर्षे हळुवारपणे कुरवाळित जापसली होती, जिच्या अल्लड प्रेमानं एक वेळच जेवण न जेवताही मी तरतरीत राहत होतो. जिच्या एका हाकेकरीता अंगात ताप असताना मी कॉलेजात येत होतो. जिच्याजी लग्न करायचे म्हणून झटून वी. कॉम फर्स्ट क्लाम मिळविला. ती गीता या जगात नाही.

आणि एक दिवस असाच झाडावाळी बसलो असताना गीता म्हणाली "जय, प्रेमावरोवर माणसाला पैशाची आवश्यकता असते दुपारी बारा वाजता भूक लागली की, माणसाला प्रेम उपयोगी पडत नाही, त्या वेळी आवश्यकता असते चार घास अन्नाची."

"गीता" मी म्हणालो, ती म्हणाली "माफ कर जय तुझ्या प्रेमाला ओंढवी होवून मी हे सत्य विसरले होते."

"याचा अर्थ गीता तुझा तुझ्या जयवर विश्वास नाही? ती तुला दोन वेळा अन्न आणि निवारा देऊ शकत नाही असं तुला वाटतं?"

"जय, पोट गल्लितलं कुत्रं सुद्धा भरतं! आपण कोणत्या स्तरावर यायचं चे माणसाने स्वतः ठरवावं. आज तुला फी माफ झाली नसतो तर, तुला तुझं शिक्षण पूर्ण करता आलं नसतं उद्या मिळू शकणाऱ्या दोन घास अन्नाच्या आशेवर मी तुझा आधार कसा घेऊ."

"गीता, माझ्या आयुष्यातल्या दोन वर्षांच्या प्रेम वर्षांची समाप्ती वांधून झाल्यावर हे तुला सुचलं, त्यासाठी तू माझा बळी दिलास."

"मला माफ कर जय खूप विचार करून हा निर्णय घेतलाय"

"ठीक आहे. दोन वर्षांत तुला कधी माझ्या प्रेमाची उणीव भासली नाही. ते आज तुझ्या वडिलांच्या चार वाक्यांनी आपल्या प्रेमातील उणीव कळाली. तुझ्या वडिलांच्यासमोर माझं प्रेम पडलं हेच सांगायला आली होतीस तू?" मी पुढे म्हणालो, "लग्न करतंय?" तीने मानेने होकार दिला.

"जय" तिने बोलण्याचा प्रयत्न केला. "जय संपला गीता निदान तुझ्यापूरता तरी संपला. वडिलांच्या दडपणाखाली माध्यता दिली असतीस तर मी समजू शकलो असतो. पण, ज्या क्षणी तू तुझ्या

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, वाराणसी

लग्नाचा होकार दिला त्या क्षणी जयच्या प्रेमाचा विश्वास संपला गीता तू जावू शकतेस."

"माझी पत्र" न राहवून ती म्हणाली "अरे, हो विसरलोच. ही रमची चावी बंगमध्ये आहे ती घेवून जा, आणि ती तिची पत्र घेवून गेली तेच ते पाठमोरं शेवटचं दर्शन. आणि आज पाच वर्षांनी तिचं नाव आलं तरी ती आज या जगामध्ये नाही.

त्या वेळी गीता माझं प्रेम झिडकारून गेली तेव्हा डोळ्यात पाण्याचा थेंब नव्हता. दोनच वर्षांची नाती तोडून गेली होती. आणि आता प्रयत्न करूनही डोळ्यातील पाणी थांबवता येत नव्हते.

"मी चला आता" सरिता म्हणाली.

"हं बरे झाले तू भेटलीस निदान गीताचं हे कळालं. कधी मधी गीताची आठवण यायची ती आता कोठे असेल? काय करत असेल? तिचा नवरा कसा असेल? मुलं कशी आहेत? पण आता या सगळ्या प्रश्नांना एक काळासार पुर्णविराम झाला," ती उठली म्हणाली

## परीक्षा

यंदाच्या वर्षीच मधूला B. A. चं फर्स्ट क्लासचं सर्टीफिकेट मिळणार होतं. मधूला खूप खूप आनंद वाटत असे. सर्टीफीकेट मिळाव्यावर आपण कुठेतरी नक्की नोकरी मिळवूच असा त्याचा कयास होता. मधुने खूप उंच मनोरे भविष्यकाऱ्यातील राज्यातले रचून ठेवले होते. भविष्यातील मनोरथांचे मनोरे केव्हा खचतील त्याचा नेम नसतो मधूला भविष्याबद्दल अजीबातच काळजी वाटत नव्हती. कारण त्याला कोठेही नोकरी मिळणारच होती.

मधूला B. A. फर्स्टक्लासचं सर्टीफिकेट मिळून गेले. सर्टीफिकेट हातात पडल्यानंतर त्याला आकाश दोन बोटेच उरलं होतं पण याच आनंदी असणाऱ्या मधुचं नंतर काय होणार? हे त्याला समजत नव्हतं त्याचा नोकरा मिळविण्याचा प्रयत्न सुरु झाला. मधुची अवस्था मधूला अस्वस्थ करीन होती. त्याने बऱ्याच ठीकाणी अर्ज, विनंत्या करून पाहिल्या पण नोकरी मिळतच नव्हती. बेकारांत आणखी मधूची भर पडली होती सभोवतालचं जग जेव्हा तो नोकरीसाठी फिर लागला तेव्हा त्याला समजलं होतं.

त्याचं जवळजवळ निम्मं आयुष्य फिरण्यातच चाललं होतं शिक्षण चालू असताना त्याने अनेक चैनीच्या गोष्टींना फाटा दिला होता मधु रोज नोकरीसाठी फिरत होता. कुठेही नोकरी मिळतच नव्हती. मधुने रचून ठेवलेले मनोरे खचून गेले होते. कळस तर केव्हाच उध्वस्त झाला होता. मधूला बाहेरच्या जगाचा वीट आला होता.

मधु ज्यावेळी कॉलेजात होता, त्यावेळी त्याला सगळं जग आनंदाने हसतंय असं वाटत होतं. आता मात्र तेच जग त्याला कुचेष्टेने

निघतकालिक ८७-८८

"कॉफीचं बोल मी देते" "वेडी, गीता नाहीतर निदान तिच्या वहीणीला कॉफी पाजल्याचं समाधान मिळू देत" "येते हं मी" सरीता म्हणाली "दोन तासगेले" "गेत्या तासाबद्दल दूःख करत बसलीस तर तिसरा जाईल." आणि ती खाली मान घालून निघून गेली.

मी विषण्ण मनाने चालू लागलो, तेवढ्यात क्लार्कने हाक मारली त्याच्यावरोवर मी जाऊन रवीचा निकाल घेतला. रवी पाम झाल्याचा आनंद विरून गेला होता.

ज्या गीतानं केवळ पैशा रवातर माझ्या प्रेमाची अवहेलना केली त्याच गीताला तो पैसा तिच्या मृत्यूला कारणीभूत ठरला, आणि जड पावलांनी मी घरच्या दिशेने जावू लागलो. पण, गीताच्या स्मृती माझी वाट अडवत होत्या पण, त्या स्मृती घेऊन तरी मी काय करणार कारण माझ्या जीवनातलं गीतच आता विरून गेलं होतं.



वल्लभ ल. चौधरी  
एस्. वाय्. बी. ए.

हसतंय असं वाटू लागलं होतं. मधू एक बेकार उमेदवार झाला होता. नोकरीसाठी तो ज्याप्रमाणे मासा पाण्याबाहेर तरफडतो तसा तडफडत होता.

मधू नेहमीप्रमाणे आजही त्याच गोष्टीवर विचार करीत बसला होता. त्याला झोप तर लागतच नव्हती. त्याला आज नेहमीपेक्षा प्रसन्न वाटत होतं. विचार करता करता मधूने आज एकच निर्णय घेतला होता- नोकरीसाठी फिरावयाचे नाही व मिळाली तरी स्वीकारायाची नाही. मधुने त्याला मिळालेली सर्वच्या सर्व सर्टीफिकेट्स एकत्र गोळा केली आणि ती सर्व फेकून दिली. बस, मधूला आज कसलेतरी समाधान वाटले. नोकरीचे ओझे डोक्यावरून कमी झालेसे भासले. पिजऱ्यातल्या पोपटाप्रमाणे असणाऱ्या जीवनाचा त्याग करून स्वछंद फिरावयाचे होते त्याला.

मधुच्या पुढच्या जीवनाची सुरुवात खऱ्या अर्थाने आजच होणार होती. येथून पुढे काय करावयाचे ते त्याला आजच ठरवायचे होते. मधुने सहजच जुन्या पेपरांची पाने चाळायला सुरुवात केली. त्यात जसा एखादा हिरा मातीत चमकून जातो तसा त्याला एक लेख दिसला "बुवाबाजीचे प्रस्थ" सगळे जुने पेपर तसेच टाकून तो उभ्यानेच लेख वाचत होता. लेख वाचून झाल्यावर त्यानेही ठरविले की आपणही बुवाबाजी करतच फिरावयाचे व पैसे जमवायचे. आजच त्याने बुवाबाजीसाठीचे सर्व साहित्य जमविले. त्याने विचार केला की बुवाबाजी अगोदर सराव करणे आवश्यक आहे. सरावासाठी कोणत्याही कॉलेजात अथवा संस्थेत विद्यार्थी अथवा नोकर होण्याची गरजच नव्हती. त्याने घेतलेला निर्णय त्याला अखेर पर्यंत टिकवायचा होता ना!

हळूहळू मधुला बुवाबाजी सरावामुळे जन्म लागली होती. त्याने त्याचे नाव बदलून, श्री. मधेश्वर महाराज असे ठेवले होते. आज मधुला परीक्षेत उतरायचे होते. परीक्षा? हो परीक्षाच बुवाबाजीची परीक्षा होती ती

ॐ नमः शिवायचा जप मुळ करून तो फिरत एका खेड्यात आला. खेड्यातील खेडूत बांधवांचा बुवाबाजी व देवस्थानां-वर गाढ विश्वास असतो हे ठाऊक होते त्याला. या विचारांत असतानाच त्याने एका खेड्यात प्रवेश केला. सर्व खेडूत क्षणाघात महाराजांच्या कडेने गोळा झाले. महाराजांना नाव विचारले गेले. 'मधेश्वर महाराज की जय' अशा घोषणांनी गांव निनादले होते. महाराजांना बसण्यासाठी एक खुर्ची आणण्यात आली

'मला खुर्ची नको' मी आणलेल्या वाघाच्या कातड्यावरच बसणार आहे.' महाराजांनी फर्मान दिले कॉलेजमध्ये असणारा मध्या आता श्री मधेश्वर महाराज झाला होता. महाराज मारुतीच्या देवळत स्थानापन्न झाले होते. एवढ्यात गलका झाला. पाटील आले. पाटील आले. त्यांच्या सोबत त्यांची धर्मपत्नी राधाबाई आल्या होत्या. मधुला आश्चर्य वाटले. त्याला पाटलाची ती आडवी तिडवी वाढलेली शरीरयष्टी दिसली. पाटील मधुच्या जवळ उभे राहिले होते. मधुच्या अंगावर काटा फुटला होता. त्याचे अंग शहारले होते. क्षणाघात मधुला काय घडते हे कळावयाच्या आतच पाटलांनी मधुच्या पायावर डोके टेकवले होते. त्यातच पाटलांच्या वरच्या विशाला नोटांचा बंडल बाकल्यामुळे मधुच्या पुढ्या पडला होता. मधुने हातचलाखीन तो बंडल लपवला. आज मधुचा मुक्काम त्याच गावात होता.

संध्याकाळची वेळ होती, दिवसभराच्या मिळकतीने मधु अगदी मनोमन आनंदला होता. देवळाच्या दारातच कोणीतरी येत असल्यासारखे मधुला वाटले. वळून पाहतो तो पाटील. हो पाटीलच होते ते. मधु मनातल्या मनात दचकला व उभा राहिला. पाटील लांबूनच नमस्कार घालून म्हणत होते. "माफ करा महाराज मी तुम्हाला त्रास दिला, पण महाराज मला मदत करणार का?" "अरे गावचा पाटील तू. मी एक बुवा तुला काय मदत करणार?" पाटील मधुच्या अगदी जवळ आले व त्यांनी आपल्या हातातली

अंगठी मधुच्या हातावर ठेवून विचारले. "महाराज माझे पैसाचे बंडल चोरीस गेले आहे. ते कोणी चोरले आहे तेवढे मांमा मी त्याला शिक्षा करणार आहे.

'असं होय', असे म्हणून महाराजांनी अगदी निर्विकार भंभ्याने ती अंगठी झोळीत टाकली. आणि म्हणाले- 'बाळ' तू उद्या सकाळी ये, आता पुजेची वेळ झाली आहे. मी उद्या नक्की जागा सांगतो. आणि हे वध, जेवणाची व्यवस्था केलीय का?

"हो, अगदी फर्स्ट क्लास," पाटील उत्तरले व निघून गेले.

आल्या संधीचा फायदा घ्यायचा या न्यायाने मधुने स्वतः जवळचा नोटांचा बंडल एका झाडाच्या झोळीत टाकला.

सकाळी पाटील आलेच. महाराजांनी उत्तर दिले- "राजा तू नोटांचा बंडल वरच्या विशाल ठेवला होता, हे खरं का? तो तुला फार आवश्यक होता हे खरं का?"

पाटलाचा महाराजावर पुरा विश्वास बसला होता. महाराजांनी पाटलाला जागा सांगितली व म्हणाले, "तुझ्या नोटा नेणारे चोर मला अंतर्ज्ञानाने समजले. मी माझ्या शब्दाचे नाग केले व त्यांच्या अंगावर लावले. त्याने ते पैसे तिथेच झोळीत टाकून दिल्यावर मी माझे अस्त्र मागे घेतले. तर बाळा, तू जाण्या अगोदर तुला सांगतो की झाली शिक्षा त्याला पुरी आहे. इथून पुढे तो चोरी करणार नाही."

पाटील झाल्या प्रकारे खूश झाले होते. त्यांनी परत आगलेला बंडल जसाच्या तसा महाराजांच्या पायावर ठेवला होता. उद्याला महाराज जाणार होते. प्रत्येकाने आपापल्या जवळची मौल्यवान वस्तु महाराजांच्या पायावर वाहिली. महाराजांनी त्या वस्तु गोळा केल्या व निरोप देऊन निघाले. "श्री मधेश्वर महाराज की जय" या घोषणांने सारे गांव निनादले होते. महाराजांनी शेवटच्या निरोपासाठी झोळीतल्या लाह्या सर्व लोकांच्या अंगावर टाकल्या. लोकांनी त्या प्रसाद म्हणून झेल्ल्या. सर्व गांव पुन्हा एकदा नतमस्तक झाले होते. नकळत मधुच्याही झोळ्यात पाणी आले होते. बुवाबाजी करणारा मधु वेशाने जरी बुवा असला तरी मनात मात्र तो बुवा नव्हता. नियतीने तिच्या फेऱ्याच्या फटक्यात मधुला बुवाबाजी करायला लावले होते.



कोणीहि एखाद्या धर्मात जन्माला येत नसतो, परंतु प्रत्येकजण एखाद्या धर्मासाठी जन्माला येत असतो. झगडणे हे विकासाचे द्योतक आहे असे जे तुम्हांला वाटते ते पूर्ण चुकीचे आहे. ते तसे मुळीच नाही आत्मसात करणे हे विकासाचे खरे द्योतक आहे. हिंदुधर्माला हे आत्मसात करणे पूर्णपणे साधले आहे. आम्ही झगडण्याची कधीच पर्वा केली नाही अर्थात आम्ही आमच्या देशाच्या संरक्षणासाठी मधुतमधून युद्धे केली आहेत, नाही असे नाही! ते योग्यहि होते परंतु युद्धासाठी युद्ध असा विचार आम्ही कधीच केलेला नाही. प्रत्येकाला हा धडा शिकावा लागला. म्हणून ह्या नव्या नव्या जातीनातून धडपडू द्या; सरतेशेवटी त्या सर्व हिंदुधर्मात आत्मसात करून घेण्यात येतील!

स्वामी विवेकानंद-

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, वारामती

## सामाजिक समस्या

सुधीरकुमार एन. जन्न  
टी. वय. बी. काम

भारत देश शांतता पुर्ण स्थापित करण्याच्या दृष्टीकोनातून प्रयत्न करित असताना देशील अनेक सामाजिक समस्यांचे 'वाढळ' घोंगावताना आपणास पाहण्यास मिळत आहे. आज आपल्या भारता-मध्ये चाललेल्या अनेक सामाजिक समस्यांच्या वातभ्या दररोज वातमी पत्रा मध्ये आपण सर्व वाचतो. त्यातील मुख्य समस्या म्हणजे पंजावातील दहशतवाद तसेच जातिवाद, प्रांतवाद, गुंडागिरी. इत्यादी अनेक घटना घडत आहेत ह्या घटना कशासाठी घडतात? आणि ह्या घटनांवर उपाय काय आहेत? या गोष्टींचा सखोल विचार भारतातील नागरिक का करित नाहीत? आणि ह्या कारणा मुळेच भारत हा देश शांतता पूर्ण बनल्याच्या प्रयत्ना मध्ये यशस्वी झालेला नाही. तसेच इतर विकास करण्याच्या आधुनिक क्षेत्र, तंत्रज्ञान, सामाजिक, आर्थिक, आणि नैतिक क्षेत्रामध्ये विकास हवा तसा साधता आलेला नाही.

भारता मध्ये सामाजिक समस्याची एक प्रकारे किड लागलेली आहे. ह्यातील काही उग्ररूप धारण केलेल्या समस्या म्हणजे पंजावा-तील दहशतवाद भारतावरच श्रीलंकातील दहशतवाद ह्या दहशतवादी लोकांचा उद्देश काय आहे? जागतिक शांतता असफल करणे. देशाचे तुऱडे पाडणे, राष्ट्रीय एकात्मता अखंडत्व नाहिसे करणे का एक मेका मध्ये मतभेद निर्माण करून युध्दाला भाग पाडणे. आज भारताच्या शेजारच्या देशाशी भारत सलोख्याचे संबंध प्रस्थापित करित आहे. किंवा त्यानाही जागतिक शांतता प्रस्थापित करण्या-साठी प्रयत्न करित आहेत पण भारत देशा पुरता विचार करता आज आपण स्वतंत्र होवून पूर्ण ४० वर्षे झाले. पण ह्या चाळीस वर्षांत व्हावा तेवढा विकास झाला नाही कारण इतर देशाशी तुलना करता भारत विकसीत देश गणला जात नाही ह्यांचे मुख्य कारण म्हणजे एकमेका बाबत मतभेद, स्वार्थीपणा, असमता नीतीमत्ता भ्रष्टता, असंतोष हे असू शकतील. कारण भारतातील आपल्या उत्पादित वस्तूचा वापर कमी केला जातो. कारण त्या वस्तू महाग असतात त्या वस्तू जास्त टिकाऊ स्वरूपाच्या नसतात परंतु जर आपण आपल्या स्वदेशी वस्तू वापरले नाहीतर कोण वापरणार? आपण परदेशी वस्तू जास्त पसंत करतो, कारण ते कमी किमतीमध्ये टिकावू असतात. समाजामध्ये विदेशी वस्तू वापरल्यामुळे प्रतिष्ठा लाभते. पण त्याच वस्तू नादुरुस्त झाल्यावर त्यावर उपाय योजना करता येऊ शकत नाही. ह्या गोष्टींचा विचार समाज करित नाही. आपल्या वस्तू जर आपण वापरल्या तर आपली आवड, उत्पादन विकास होईल. आणि ह्याचा फायदा देवाला जरूर मिळेल.

भारताची संस्कृती ही इतर देशांच्या संस्कृती पेक्षा खूपच महान आहे. परंतु ह्या संस्कृतीचा उवा दुसरे देश आपल्या कडून घेऊन जात आहेत. ते ह्या मधुाच आपला विकास करित आहे. चांगले

नियतकालिक ८७-८८

रितीरिवाज, रूढी परंपरा, रूढीचा वापर करित आहेत. परंतु भारतामध्ये ह्या गोष्टीकडे दिवसेन दिवस दुर्लक्ष होत चालले आहे. भारत हा अनेक धर्मांचा, वंशाचा, जातीचा मिळून बनला आहे. विवि-धतेतून एकता' हा संदेश आपण सर्व जगाला देतो. जसगत असा एकच देश आहे की जो एकात्मता निर्माण करू शकतो परंतु पूर्ण सत्य आहे का? जातीवाद, प्रांतवाद ह्या समस्या दूर होण्याऐवजी दिवसेन दिवस वाढतच चालले आहेत. खरे पाहता आपण सर्व मानव धर्मचि वालके आहोत. आपला देश हा फक्त आपलाच आहे. आपल्या पूर्व-जांनी आपल्या जिवाची आहुती देऊन आपणाला स्वातंत्र्य मिळवून दिले याची आठवण आपण विसरता कामा गये. आपण जर आप-आपल्या मध्ये भांडत बसलो तर देश पुन्हा एकदा दुसऱ्या देशाच्या हाती जाईल. म्हणून आपण आपल्या देशाचा विकास करायला पाहिजे. शाळेत प्रार्थना म्हटली जाते, भारत माझा देश आहे, सारे भारतीय माझे बांधव आहेत, माझ्या देशावर माझे प्रेम आहे. परंतु हे सर्व आचरणात आणले जाते आहे का? या गोष्टींचा विचार आपण करतो का? ह्यासाठी आजच्या तरुण वर्गांनी ह्या गोष्टीकडे लक्ष दिले पाहिजे. राष्ट्राच्या विकासाच्या दृष्टीने पाऊले उचलली पाहिजेत आज अनेक वर्तमान पत्रातून दररोज वातभ्या असतात, गुंडागिरी' भ्रष्टाचार, लाचलूचपत, बलात्कार वगैरे गोष्टी घटनांच्या बाबतीत हे मोठ्या प्रमाणावर दिवसे न दिवस वाढत चालले आहे ह्या गोष्टीवर संबंधीत उपाय योजले जात आहेत काय? किंवा ह्या सारख्या सम-स्याच्या उच्चाटणासाठी प्रयत्न केले जात आहेत काय? कायदेशीर बंधने कुठे प्रयत्न केले जातात. ह्या सारख्या घटनावर कडक कायदेशीर उपाय योजले गेले पाहिजेत. समाजामध्ये वावरताना आपण जे काम, कृत्य करतो ते कायदेशीर दृष्टी-कोनातून योग्य आहे अथवा नाही ह्या गोष्टींचा विचार समाजातील नागरिक करित नाही कारण समाजामध्ये लोकांच्या मनात कोणते भय, भितीची भावनाच उरली नाही. जो तो मुक्त पणे गैर कृत्य करतो. ह्या घटना करताना सद्सद विवेक वृद्धीचा वापर होत नाही आणि केवळ ह्या मुळे काही नवीन समस्यांचा जन्म होतो.

२१ व्या शतकाकडे जाणाऱ्या समाजामध्ये संस्कृतिचा योग्य अर्थ लक्षात घेतलेला नाही. जुनी परंपरा पद्धती मनुष्याच्या आर्थिक नैतिक स्वरूपामध्ये विकास करण्याच्या दृष्टीकोणातून तयार केला गेला होता पण ह्या गोष्टींना धार्मिक आणि शास्त्रीय पद्धतीची जोड दिली जात असे. परंतु ह्या पद्धतीकडे दुर्लक्ष होत आहे. लहान झाड वाढत असताना त्याकडे विशेष काळजीपूर्वक लक्ष घातले तर त्याची वाढ, विकास चांगला होतो. त्याला चांगला आकार, रूप, फळे येतात. अन्यथा नैसर्गिक पद्धतीने जर वाढत गेले तर त्या झाडाला चांगला आकार मिळत नाही. योग्य झाडाचा विकास होत नाही. त्याची तिया

पद्धतीने राखली जात नाही. अगदी अशाच प्रकारे लहानपणापासून जर लहान मुला-मुलींवर योग्य सुसंस्कार घडले. योग्य वळण लावले असेल त्याकडे चांगले लक्ष दिले तर त्यांची वाढ चांगली होते, विकास होतो आणि तो एक चांगला नागरिक बनतो. आपल्या देशात स्वामी-विवेकानंद, संत ज्ञानेश्वर सारख्या महान व्यक्तींची जन्मभूमी आहे. अनेक लढवय्ये, अनेक देशभक्त, अनेक महान व्यक्तींनी ह्या जन्मभूमीवर स्वतःचे जीवन वेचले. अशा श्रेष्ठ लोकांच्या महान जन्मभूमी वर आपण जन्म घेतलेले एक एक असे अनेक नागरिक आहेत म्हणून आपले काही हक्क आहेत आपले काही अधिकार आहेत त्याच प्रमाणे

## निसर्गाची ओढ

ओ. माय गॉड .. किती सुंदर तो निसर्ग दिसतोय. मी त्यांच्याकडे पाहिले आणि त्याने मला चक्क स्वताकडे ओढून घेतले आणि चमत्कार हा की चक्क माझे मन त्या कोमल निष्पाप सौंदर्याची झालर असलेल्या निसर्गाकडे आपोआपच ओढले गेले. आश्चर्याची गोष्ट आहे. निसर्गाची ओढ लागण्याची खूप युवकांना तर सुंदर अशा प्रेयसीची ओढ लागेल पण मला त्या बालकृष्ण निसर्गाची गोडी लागली मला लहानपणापासूनच या निसर्गाच्या तृणपुष्पांच्या छायेची अनुलनीय आर्कषणाची ओढ लागली तोच तो निसर्ग सतत माझ्या पाठीमागे लागला आणि मी त्याच्या पाठीमागे लागलोय. मला आठवतंय की मी एकदा लहान असताना असंच गवताबरोबर स्मितहास्य केल होतं काटेरी गुलावांच्या फुलांना तर मी सारखी तोडायची आणि निसर्गाची मला लागलेली ओढ चटकावून मनाच्या संवेदनाक्षम जाणवितून झालेली आहे. आणि मी निसर्गाच्या जगात जाण्याचा खूप प्रयत्न केला. तो यशस्वी झाला.

आणि कोमल निसर्ग जग मला अनुभवायला मिळालं परंतु जास्त नाही ते थोडंच मिळालं. कारण माझ्या निवासाच्या ठिकाणी इतकं म्हणजे पाहिजे तेवढं निसर्गदृश्य पहावयास मिळत नाही. परंतु मन मात्र निसर्गाच्या पाठी मागे धावतं या निसर्गात आहे तरी काय? हे त्याला पाहिल्या शिवाय कळतच नाही. परंतु त्याच्याशी हृदयमग्न होवून अतिशय जवळचे संबंध साधत मा गेले आणि खरोबर त्यांच्याशी फुल कळ्यांची देवाण-वेवाण करू लागली. आणि तो निसर्ग कसा आहे. बालबोध आणि कृष्ण कन्हैया सारखा आहे असं जी गूढशक्ती समजू शकते त्यालाच तो समजतो. आणि त्या व्यक्ती-शीच तो फुलारला जातो हा निसर्ग सर्वांना समान प्रेम, माया, सौंदर्य माणुसकी देतो तो कसलाही भेदभाव करत नाही. तो माणसापेक्षाही श्रेष्ठ आहे. माणूस केवळ जगात माणूस म्हणून जीवन जगत असतो. परंतु निसर्ग हा जगात कायम आणि सर्वांना सुखदुःखाचा रस्ता दाखवत असतो. वृद्ध असो, गरीब असो, किंवा श्रीमंत असो रोगी असो तो सर्वांना प्रेमदेवन स्वतःला मिसळून घेतो.

मला तर चिमूकल्या हसण्या बागडणाच्या सौंदर्याचा ललकार असणाऱ्या गूढ शक्ती असलेल्या निसर्गराजाने कधीच मंत्रीचं नातं दिलं आणि मी ही त्यांच्याशी एकरूप झाले आणि मला कधी कधी वाटतं की काही निसर्ग सौंदर्य दिसलं की त्यांच्याजवळ केव्हा जातेय. आणि त्यांच्याजी मुक्या भावनांच्या गप्पा मारतेय असं होतं. परंतु

काही जबाबदारीं पण आहे ह्याकडे दुर्लक्ष करू नये. आजच्या तरुण पिढीने ह्याकडे लक्ष देवून जर योग्य प्रयत्न केले तर समाजातील समस्यांचा हास होईल. समाजाला लागलेली किड निघून जाईल. एक सुसंस्कृत, सुसज्य नवा भारत देश बनेल आणि तेव्हा खऱ्या अर्थाने भारत देश 'सारे जहाँसि अच्छा' हिंदूस्थान हमारा असे आपण सर्व अभिमानाने म्हणू आणि जगामध्ये भारत देश सुसज्य, सुसंस्कृतीचे प्रतीक म्हणून ओळखला जावू शकेल



कु नंदिनी ज्ञानदेव टकले  
एम्. वाय्. बी. ए.

काय करणार तशी संधी साधता येत नाही. त्या निसर्गाला तटबंदी लोखंडी तारांची आणि मलाही मनात लागलेली हुरहुर केवळ निसर्गदर्शनाची

माझीच नव्हे. तर केवळ अजाण बालक मुद्धा या फुलांच्या बागेत सोडले तर तो मुद्धा या निसर्गाची ओढ खरून घेतो. काही वेळेस रस्त्याने जाताना अशी फुले वेली फळे दिसतात. आणि मग वाटतं वाटतं की याला पकडून आणून सतत बरोबर ठेवावं. परंतु तसे करता येत नाही. आणि मग माझ्या हृदय तगमगीचा तो राग तसाच थंड करावा लागतो. तो तृणपुष्पांच्या सहवासात.

आणि कोणीही असो ह्या निसर्ग जगात आलाकी त्यात गुरफटला गेला म्हणून समजावा आणि खरोखरच हा निसर्ग प्रत्येक कलावंताला आणि कविला तर प्रतिभा शक्तीची देणगीच देतो. तो निसर्गात आला की वेडा झालाच पाहिजे. आणि होतोच. आणि तूम्हाला माहीतच असेल या निसर्गाने आपल्या मराठी साहित्यातील किती कविता वेडावून टाकले आहे स्वतःशीच एकरूप केले आहे.

हा .. हा .. म्हणता हा निसर्गाचा कळस प्रत्येकाला फुलारून सोनेरी स्वप्नाची वाट पाहिल्यास स्वतःच्या देहाचे सौंदर्य देत असतो मला तर फुलांचे खूप वेड माझी आई मला नेहमी म्हणायची की फुलांची काय भाजी करायचीय होय ग? सारखी फुल तोडून आणतं? तुला फुलातच पुरायचंय सारख? आणि मला ही फुल तोडायला खूप आनंद वाटायचा, मी मन मुग्ध व्हायची फुलात फुलारून जायची पण मीच काय पण कोणी तरी फुलं म्हटलं की लगेच कुठय म्हणतं? मला देणं एक म्हणूनच या निसर्गात जो येतो तो रमून जातो.

जो आला तो रमला  
निसर्ग प्रेमी झाला  
तृणपुष्पाशी वळचा फुलांशी,  
रममाण जाहला  
जो आला तो रमला  
अन निसर्गप्रेमी झाला;

खरोखरच कोणीही निसर्ग सौंदर्यात जा नक्कीच तो तुम्हाला झपाटून टाकील, माणसाला नेहमी भूत व झपाटते. परंतु या निसर्गात गेल्यानंतर निसर्ग झपाटून टाकतो.

मला तर खरोखरच अनुभव आहे या निसर्गाचा मला खूप आधार आहे. निदान जीवन कसं जगायचं हे तर तो दाखवतो

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, वारामती

## स्पर्धात्मक परीक्षा व मराठी ग्रामीण युवक-



कु. ज्योती मरकळे  
एम्. ए. (फायनल)

वारामती विभागाचे उपजिल्हाधिकारी भाऊसाहेब वानखेडे यांचे "स्पर्धात्मक परीक्षा व मराठी ग्रामीण युवक" या विषयावरचे मनोगत समजून घेणारी मुलाखत कु. ज्योती मरकळे- एम् ए मराठी यांनी घेतली आहे. ती वाचकांना उद्बोधक वाटेल असा विश्वास आहे.

संपादक-

★ महाराष्ट्रासहित एकूण देशातील स्पर्धात्मक परीक्षांचे स्वरूप काय? आणि पदवीधर तरुण ही परीक्षा पेलू शकतात काय?

कोणत्याही देशाची यंत्रणा तीन पध्दतीने बनलेली असते. विधान-सभा, लोकसभा यातील प्रतिनिधींनी विकास यंत्रणेचे नियोजन करा-यचे असते. हे नियोजन राबविणारी दुसरी यंत्रणा असते- या दोन्ही यंत्रणा नीट- व्यवस्थित काम करतात की नाही ते कायद्याच्या चौकटीत चालवले आहे किंवा नाही हे पाहण्यासाठी त्याच व्यवस्था असते.

लोकांमधून मतदान पध्दतीने मतदान करून सहभाग घ्यायचा व धोरण राबवायचे या साठी अशासकीय यंत्रणेची गरज असते. ही यंत्रणा नि पक्षपतीपणाने काम करते किंवा नाही हे पाहण्याचे असते. या यंत्रणेत काम करणारे घटक महत्वाचे असतात व ते उत्तम प्रकारचे असावेत यासाठी निवड करणारी जी यंत्रणा राष्ट्रीय पातळीवर आहे. ती म्हणजे केंद्रिय लोक सेवा आयोग. राज्य पातळीवर असलेली यंत्रणा म्हणजे राज्य लोक सेवा आयोग या दोन्ही आयोगां-वर - समाजातील मान्यवरांची नेमणूक केली जाते. अध्यक्ष, चेअरमन, व सभासद म्हणून त्याची नियुक्ती केली जाते. हे सर्व सभासद अशासकीय यंत्रणेसाठी उत्तम प्रकारचे उमेदवार निवडू शकतील अशा पात्रतेचे असतात

या परीक्षा दोन प्रकारच्या असतात. केंद्र किंवा राज्य सरकारच्या तांत्रिक सेवा आणि अशासकीय सेवा. यातून राजपत्रित अधिका-यांची निवड केली जाते अशासकीय सेवांमध्ये नागरी सेवा, महसूल सेवा, जंगल खाते आदि परीक्षा घेतल्या जातात. कोणत्याही विद्या-पीठाच्या पदवीधराला या परीक्षेसाठी बसता येते. त्या त्या विषयाचे सखोल ज्ञान आवश्यक असून त्या ज्ञानाचा सदसद्विवेक बुध्दीने उपयोग करण्याची त्याची क्षमता असावी लागते. समयसूचकता बहुश्रुतता आवश्यक असते. महाराष्ट्रातील पदवीधर युवक ही परीक्षा सहज पेलू शकतील असे वाटते.

★ या परीक्षेसाठी विशेष तयारी काय करावी? त्याची सुरुवात कशी करावी?

नियतकालिक ८७-८८

माध्यामिक शाळेतच विद्यार्थी अथवा विद्यार्थिनी यांच्या बुध्दीचा विकास झपाट्याने होतो. पुढच्या मार्गाची आखणी करण्याची क्षमता हळुहळू त्यांच्यात निर्माण होते. विशिष्ट प्रकाराचे ध्येय त्यांच्यात निर्माण होते. फार उच्च दर्जाचे स्वप्न मनी न बाळगता आपल्याला जे पेलवेल अशाच गोष्टीची कास धरून त्या प्रमाणे तयारी करावी पालक शिक्षक यानी त्या दृष्टीने आपल्या मुलामुलींना मार्गदर्शन करावे प्रशासकीय सेवेचे आकर्षण असेल तर शिक्षक पालकांनी त्यांच्या गुणाचा विकास घडवून आणण्याचे प्रयत्न करावेत. वारावीच्या वर्गात ही तयारी पूर्ण व्हावी.

आणि ही तयारी करत असताना वेगवेगळ्या अभ्यासक्रमाची माहिती चर्चात्मक स्वरूपाचे परिसंवाद त्या त्या क्षेत्रातील तज्ञ-व्यक्तींच्या भेटी सामान्य ज्ञानाच्या चाचण्या इ. हे सर्व घडवून आणले तर अशा परीक्षेची तयारी अवघड नाही.

★ आपला स्पर्धा परीक्षेचा अनुभव काय?  
अशा परीक्षेसाठी नेतृत्व गुणाची आवश्यकता असते. भोवतालच्या परिस्थितीचे निरीक्षण करून त्यावर स्वतःचा मत व्यक्त करून निर्णय देणे आणि तो देत असताना निर्भीडपणा व निपक्षपातीपणा हे गुण व्यक्तिमध्ये निर्माण करणे आवश्यक आहे. त्या दृष्टीने मी यशस्वी आहे असे वाटते.

★ या परीक्षेमध्ये ग्रामीण मराठी युवक कमी पडतात असे बोलले जाते? हे विधान आपणास कितपत बरोबर वाटते?

हा प्रश्न अत्यंत महत्वाचा आहे. कारण एकतर आपल्याला स्पर्धा परीक्षांची माहिती पदवी परीक्षा पास झाल्यानंतर होते, तोपर्यंत वयोमर्यादा संपत आलेली असते. आणि मध्यंतरीचा हा दोन तीन वर्षांचा कालावधी खूपच कमी असतो. हे एक कारण. दुसरे कारण म्हणजे आपली शाळा महाविद्यालये किराड्याच्या दृष्टीने फारशी प्रयत्नशील नसतात.

तसेच आपल्याकडील विद्यार्थ्यांचे ध्येयच मर्यादित आहेत. त्यांना मुलाखत देण्याची सवय नसते. यामुळेच ग्रामीण विद्यार्थी अशा परीक्षे

मध्ये मागे पडण्याची शक्यता असते. पण यावर गप्प न बसता सभा-घोटपणा येण्यासाठी प्रयत्न केला पाहिजे डॉ. दत्ताजीराव साळुंके यांनी (कुलगुरु) यासाठी विशेष प्रयत्न केले आहेत.

त्याप्रमाणे अशा परीक्षेमध्ये तुमची गुणवत्ता हाच केवळ महत्वाचा निकष मानला जातो. आणि जो पर्यंत आपण आपल्या गुणवत्तेवर विश्वास ठेवत नाही तोपर्यंत ग्रामीण युवक मागे पडण्याची शक्यताच जास्त.

शालेय अभ्यासक्रमात इंग्रजी हा सक्तीचा विषय आहे त्या ऐवजी जनरल नॉलेज हा विषय ठेवला तर!

इंग्रजी हा विषय आवश्यक आहे. तसेच जनरल नॉलेज हा विषयही आवश्यक आहे. इंग्रजी ही समृद्ध भाषा आहे केवळ परकीयांची म्हणून तिला डावलणे योग्य नाही.

★ या स्पर्धा परिक्षेचे नेमक स्वरूप काय?

प्रथम प्राथमिक चाचणी परीक्षा, त्यानंतर मुख्य लेखी परीक्षा य. मध्ये दोन ऐच्छिक विषय असतात, जे उमेदवार दोन्ही परिक्षांत यशस्वी होतात त्यांना मुलाखती साठी बोलवले जाते. त्यामध्ये तुमचे व्यक्तिमत्त्व व बौद्धिक क्षमता पाहिली जाते, व यातून वैचारिक कुवत तपासली जाते. राजकीय व सामाजिक घडामोडीं विषयी तुम्ही किती जागरूक आहात हे पाहिले जाते. मानसिक संतुलन कितपत योग्य हे तपासले जाते. त्यानंतर वैयक्तिक परीक्षा असते आणि ही परीक्षा झाल्यानंतर उमेदवाराचे पूर्वचरित्र तपासले जाते. याप्रमाणे साधारण स्वरूप असते.

★ काम करीत असताना राजकीय अगर सामाजिक दबाव जाणवतो का?

या कामाचे स्वरूपच असं आहे की सर्व स्तरांशी संबंध ठेवावा लागतो, सर्वांशी मिळून मिसळून वागावे लागते. आणि कोर्ट व पोलीसांशी संपर्क ठेवावा लागतो. आणि हे काम चांगल्या प्रकारे जो अधिकारी करतो त्याला कोणत्याही प्रकारचा दबाव जाणवत नाही.

★ अलिकडे स्पर्धा परीक्षांना युवकवर्ग आकर्षित होत नाही

मांसाहाराचा त्याग करून मानवाने पशूशी सांस्कृतिक नाते जोडले आहे. गाय घोड्याला कुटुंबाचा घटक बनविले आहे. तुलसीवृंदावनाची स्थापना करून वनस्पतीला मानवी जीवनात दाखल केले आहे. पशू, वनस्पती, सृष्टि या मानवी जीवनाला समृद्ध करणाऱ्या विभूति आहेत. त्यांच्या सहकार्याने मानवी जीवन आनंददायक बनते. या सर्व विभूतींचा विकास करण्यासाठी घडपडणे मानवी जीवनाला वैभवशाली बनविणे आहे. या सर्वांशी सहकार्याची भूमिका असावी. त्यांच्याशी जोडले जाणारे संबंध सांस्कृतिक जीवनाला अधिक वरच्यापातळीवर नेण्याला कारणीभूत ठरू शकतात. पाश्चिमात्य जगातील विचारवंतांनाही याची जाणीव होऊन लागली आहे, ही लक्षात घेण्यासारखी बाब आहे.

जयप्रकाश नारायण

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, वाराणसी

उदा:- जबाबदारी, तुलनेत पगार कमी, नवीन उपक्रमास स्वातंत्र्य नाही ही कारणे असू शकतील काय?

आपण आपले जीवन चांगल्या पद्धतीने जगू शकतो इतपत पगार असतो. तसेच या क्षेत्रामध्ये खुप काही काही करता येण्यासारखे आहे. उदा:- घरकूल योजना. आपण लोकांसाठी काही करू शकतो ही भावना फार मोठे समाधान देणारी असते.

★ राष्ट्राची या पदाकडून काय अपेक्षा आहे?

राष्ट्राचा या पदाकडून चांगल्या सेवेची अपेक्षा आहे. घटनेशी बांधीलकी ठेवून शासनाचे धोरण गरजू माणसा पर्यंत सुलभ रितीने पोहचवून राष्ट्राचा कारभार सुरळीत पणे चालवा हीच अपेक्षा व्यक्त केली जाते.

★ या परीक्षेमध्ये राष्ट्रीय पातळीपेक्षा राज्यपातळीवर स्त्रियांचा सहभाग कमी दिसतो याचे कारण काय असावे?

मुलींना या क्षेत्रामध्ये खुपच वाव आहे. राज्यपातळीवर त्यांचा सहभाग कमी दिसतो याचे कारण कौटुंबिक बंधन जास्त आहेत. व मुलींचा कल बँक, टेलिफोन, महाविद्यालय, शाळा या ठिकाणी जास्त प्रमाणात दिभून येतो. त्यांनी यातून बाहेर पडण्याची तयारी ठेवली पाहिजे. व आपली ध्येये विस्तारली पाहिजेत. आपल्या महाविद्यालयात सरकारतर्फे काय करता येण्यासारखे आहे? विद्यार्थिनींना यासाठीच स्वतंत्र वर्ग उघडणे आवश्यक आहे. त्यासाठी सरकारने अनुदान दिले पाहिजे. त्याचबरोबर थिअरि. चर्चासत्र घडवून आणले पाहिजेत.

शेवटी आपण महाविद्यालयीन युवकांना काय सांगू इच्छिता?

ग्रामीण भागातील युवकांना या प्रशासन सेवेत जास्त संख्येने येण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे. ज्या युवकाला ग्रामीण भागाची पूर्ण माहिती आणि तेथील प्रश्नांची जाणीव आहे. जास्तीत जास्त आत्मियतेने काम करू शकेल आणि त्या दृष्टीने ग्रामीण युवक नक्कीच यशस्वी होतील अशी मला खात्री आहे.



## राष्ट्रीय सेवा योजना-

भोमराव आडसूळ

एस्. वाय. वी. ए. (एन. एस्. एस्. प्रमुख)

'जीवन हे विचार, बुद्धी आणि अनुभव या तिहेरा धाग्याने गुंफलेला धागा असतो आणि या सर्वांत महत्त्वाचा घटक अनुभव घेणे हाच असतो हे अनुभव अनेक कृतीतून मिळत असतो पाहू-तून मिळतो, ऐकण्यातून मिळतो, चव घेऊन मिळतो आणि वास घेण्यातूनही मिळतो त्याचप्रमाणे थोर व्यक्तींनी मद्याच्या पांढ्यासारखा अनुभव जमा करून ठेवलेला असतो, त्यातूनही मिळतो. परंतु अनुभव घेण्याचे आणि त्यातून आपले व्यक्तिमत्त्व घडविण्याचे शिक्षण आजच्या युवकांना मिळत नाही.

थोडक्यात म्हणजे हे सरे शिक्षण त्याला उपलब्ध करून देण्याची संधी अजूनच्या 'राष्ट्रीय सेवा योजने, च्या वदारा विद्यार्थ्यांना मिळत आहे परंतु सेवा करणे म्हणजे तरी काय? निरनिराळ्या संधीच्या वदारे स्वतःची उन्नती करून घेणे. एखाद्या अंगणाची, पतिताची सेवा करणे, म्हणजे तशी सेवा करण्यासाठी जी स्वतः मध्ये पात्रता हवी ती मिळवणे व ती मिळविण्यासाठी घडपडणे म्हणजे अ पले मन आणि आपल्या कार्यक्षमते नेहमी सामाजाभिमुख ठेवणे. पूर्ण स्वतंत्रतेचा पुर्ण मुक्ततेचा, पूर्ण उन्नतीच अर्थ तरी काय? सर्व समाजाला धेऊन पुढे जाणे. कल्पना करा, सर्व समाज अधोगतीला गेल्या आहे तर तुमच्या आमच्या-एका-दोघाच्या उन्नतीला काही अर्थ उरेल काय? किंवा अशा एकांगी, एकेरी, स्वयंनिर्भारीत आपल्याला करून घेता येईल काय? ज्ञान संपादन केल्यामुळे विचारसमृद्धी येते ही गोष्ट जर विद्यार्थ्यांला पटत नसेल तर ज्ञान देणाराची तरी उन्नती कशी होईल? सुंदर कपड्यांचा पोपाख अंगावर घालण्याने आपल्या व्यक्तिमत्त्वात भर पडते याची जाणीव जर समाजात नसेल तर उत्तम कामाची निर्मिती करणारांची उन्नती कशी होईल?

थोडक्यात म्हणजे सर्व समाज हा एकमेकांमर अवलंबून आहे. आणि एकमेकांची सेवा अपेक्षणांच्या व्यक्तींवरच अ धारलेली आहे. एवढा अर्थ 'सेवा' या शब्दाला आहे आणि त्यामुळेच त्याहून कितीतरी मोठा व्यापक अर्थ 'राष्ट्रीय सेवा योजना' या शब्द समूहाला आहे! म्हणून ही योजना केवळ महाविद्यालयाध्ये शिक्षण घेत असलेल्या आजच्या तरुण-तरुणींना लागू नाही तर इथून तिची सुरुवात आहे आपला देश लाखो खेड्यांनी बनलेला आहे, आणि हजारो वर्षा

पुसून ही खेडी दारिद्र्यात, अज्ञानात खितपत पडलेली आहेत, आज या देशात सर्वांचे सेवेचे स्थान कोणते असेल तर ते ही खेडी आहेत केवळ एक टूम म्हणून, फॅशन म्हणून या खेड्यात कोणी 'राष्ट्रीय सेवा योजना' राबवू म्हणेल तर ते त्यांचे दारुण अज्ञानच म्हणावे लागेल. या खेड्यांच्या नाडीवर वोट ठेवून त्यांच्या स्वऱ्या आजारची अगोदर परीक्षा करावी लागेल. हा आजार हजारो वर्षे त्यांच्या अंगात मुरलेला आहे. तो एखाद्या मलम पट्टीने, एखाद्या

बँडेजने किंवा एखादे इंजेक्शन देऊन पळणारा नाही. अत्यंत चिकाटीने, सचोटीने, सदाचाराचे भांडवल जवळ बळगून हे काम हाती घ्यावे लागेल, आणि हे काम केवळ 'राष्ट्रीय सेवा योजने' चेच नाही तर या देशातील प्रत्येक नागरिकाचे आहे. पण कॉलेजमध्ये शिक्षण घेणाऱ्या युवकांना 'राष्ट्रीय सेवा योजना' ही उत्तम संधी, आज राष्ट्रीय सेवा योजनेच्या कामाची सुरुवात झाली तर जे वातावरण निर्माण होईल त्याकडे देशाच्या प्रत्येक नागरिकाचे लक्ष केंद्रीत होईल. त्याकडे मात्र 'राष्ट्रीय सेवा योजने' मध्ये काम करणाऱ्या युवकांची आणि त्यांना मार्गदर्शन करणाऱ्या प्राध्यपकवर्गाची परीक्षा कसोटीवर घेतली पाहिजे ज्या युवकांना समाजसेवेची आवड, त्यांचा पिंड तसा आहे, त्यांचा दृष्टीकोण, त्यांची सचोटी यांची पूर्ण पाहणी आणि परीक्षा करूनच योजनेमध्ये काम करणाऱ्या युवकयुवतींची निवड केली पाहिजे असे वाटते. नाहीतर खेड्यात जाणे म्हणजे पिकनिकचाच एक भाग आणि कॉलेज व घरापेक्षा अधिक स्वातंत्र्य असा ज्यांचा दृष्टीकोण असे युवक या योजनेत सहभागी झाले तर कार्यवाहीची फक्त होईल त्या शिवाय दुसरे काही होणार नाही.

'राष्ट्रीय सेवा योजने, मध्ये काम करणे, हा युवकांना शिक्षण-व्यतिरिक्त एक अभ्यासक्रमच आहे. कारण यात मनाचा, बुद्धीचा आणि शरीराचा अभ्यास आहे. कॉलेज शिक्षणासाठी युवकांजा जो वेळ जातो त्यापेक्षा त्याचा वेळ शास्त्रीय पध्दतीने, काही नियोजन करून खर्च केला जात नाही. या वेळेमध्ये खर्च होणारी युवकांची शक्ती अमाप असते. नवा दृष्टीकोण देऊन तिला योग्य वळण लावले तर या शक्तीचा विधायक उपयोग होतो, आणि नेमकी हीच दृष्टी आणि हेतू 'राष्ट्रीय सेवा योजने' त्या मागे आहे.

यंदा आमच्या महाविद्यालयातील राष्ट्रीय सेवा योजनेची सुत्रे या शैक्षणिक वर्षापासून प्रा. खरोसेकर व प्रा. के. एम. जाधव यांच्या कडे सोपविण्यात आली होती. प्रथम डॉ. खरोसेकर यांच्या नेतृत्वा-खाली दहा दिवसाचे उन्हाळी शिबीर वाराणसी तालुक्यातील पवई-माळ येथे घेण्यात आले होते तेव्हा राष्ट्रीय सेवा योजनेमधील युवक युवतींनी तेथे श्रमदान, अरोग्य तपासणी, शेतकऱ्यांना शेती विषयक माहिती इत्यादी उपक्रम राबवून हे शिबीर पार पडले. त्यानंतर पहिल्या सत्रामध्ये गाजर गवत निर्मूलन, कॉलेज परिसर स्वच्छता रिमांडहोमध्ये रक्षाबंधन, तिलगुळ वाटपाचा कार्यक्रम असे अनेक उप-क्रम राष्ट्रीय सेवा योजनेमार्फत पार पडले.

हे सर्व उपक्रम राबवित असताना मला विद्यार्थी नेता या नात्याने अनेक प्रश्न भेडसावत असत तेव्हा मी माझ्या राष्ट्रसेवादलातील मित्रांशी यावर चर्चा करत असे. कारण राष्ट्रीय सेवा योजने-मध्ये, राष्ट्रीय सेवा दलामध्ये काम करणारे अनेक युवक व युवती

नियतकालिक ८७-८८

सहभागी झालेले आहेत. आम्हा सर्वांवर राष्ट्रसेवादलाचे संस्कार झाले असल्याकारणाने कोणत्याही उपक्रमामध्ये आम्ही जीव ओतून काम करत असू तर मला हा प्रश्न भेडसावत असे की, राष्ट्रीय सेवा योजनेचे काम फक्त ग्रामीण विभागातच आपण करत आहोत परंतु बारामती शहरात देखील अशी कितीतरी ठिकाणे आहेत. की जेथून या योजनेत सहभागी झालेल्या युवकांना आव्हाने देऊ शकतात. रस्त्या वरचे अपंग लोक आहेत, मुक-बधीर जीव आहेत. त्याचप्रमाणे दुर्लक्षिलेल्या झोपडपट्ट्या व या झोपडपट्ट्यामध्ये हलाखीचे आणि निकृष्ट जीवन जगणारे दुर्भाग्यी लोक आहेत की ज्यांना अक्षराचा गंधही नाही तर, कोणाला आपल्या दूरच्या नातेवाईकांना पत्रे लिहून द्यावयाची असतात, कोणाला एखादे पुस्तक वाचून दाखवायचे असते, काही छोटी-छोटी मुले शिक्षणापासून वंचित होऊन काम करत असतात परंतु त्यांच्या आई-व्यापांना शिक्षणाचे महत्त्व पटवून देऊन त्यांचा भविष्यकाळ घडविण्याची गरज असते, आरोग्याचा प्रश्न असतो. इत्यादी प्रश्नांबद्दल मी आम्हा सर्वांचे आवडते प्रा. के. एम. जाधव यांना भेटलो तेव्हा त्यांनी आम्हाला प्रोत्साहन दिलेच परंतु बारामती शहरात गलिच्छ झोपडपट्टी म्हणून ओळखल्या जाणाऱ्या श्याम टॉकीजच्या पाठीमागे असलेल्या झोपडपट्टीत मी व माझे काही मित्र व सरसंध्याकाळच्या सुमारास आरोग्यविषयक सर्व्हे करण्यासाठी हिंडलो तेव्हा आम्हाला अनेक अनुभव तर आलेच परंतु तेथील अडचणी समजल्या व आम्ही दुष्पट वेगाने काम सुरू करून सर्व्हे पूर्ण केला व अशा गरीब गरजूंना आरोग्य सेवा व सल्ला उपलब्ध व्हावा म्हणून दि. ११-१२-८८ ते ११-२-८८ पर्यंत दर महिन्याच्या ११ तारखेला प्राथमिक आरोग्य केंद्राच्या वतीने लहान मुलांना त्यांच्या वयोगटाप्रमाणे ट्रीपल पोलिओ वूस्टर, घटसर्प व धनुर्वात प्रतिबंधक लस व गरोदर स्त्रियांना धुर्नवात प्रतिबंधक लस व लोह युक्त गोळ्या, कुटूंबनियोजन विषयक सल्ला पुरविण्याचे निधी भरविले गेल्यामुळे झोपडपट्टीमध्ये राह-

णाऱ्या लोकांच्या मनामध्ये आमच्याबद्दल व सराबद्दल व राष्ट्रीय सेवा योजनेबाबत आदर व प्रेम निर्माण झाले व मलाही काहीतरी काम केल्याचे जे समाधान मिळत आहे ते शब्दात व्यक्त करता येण्यासारखे नाही, व हा भावना ज्या ज्या मित्रांनी काम केले त्या सर्वांची ही झाला असेल तर त्यात नवल ने काय असो त्यामुळे सेवा करण्याची, श्रमदान करण्याची आवड निर्माण झाली त्यामुळे आम्ही लोकांना आकर्षित करून घेऊ शकलो व झोपडपट्टीतील सर्व बालकांनी व पालकांनी या विधीराचा लाभ घेतला व या लोकांमध्ये आम्ही आरोग्याचे महत्त्व पटवू शकलो व त्यांच्यामध्येही या बाबत आवड निर्माण झाली. त्याचबरोबर बऱ्हाणपूर येथे एक दिवसाचा श्रमदानाचा कॅम्प पी. आर. पाटील प्रा. के. एम. जाधव व त्यांचे सहकारी यांच्या मार्गदर्शनामुळे खूपच प्रेरक ठरला व ही सर्व राष्ट्रीय सेवा योजनेची कामे लोकप्रिय झाली.

म्हणून 'राष्ट्रीय सेवा योजना' हे केंद्र जरी एक असले तरी सेवेची केंद्रे अनेक आहेत, गरजूंच्या हाका अनंत आहेत, दलितताची दुखे अपार आहेत. येत्या २१ व्या शतकात उत्तम भविष्यकाळ घडविण्याचे जणू आपल्या देशाला आव्हान आहे आणि देशाचे ते आव्हान 'राष्ट्रीय सेवा योजने' तील युवक युवतींनी स्वीकारले पाहिजे आपल्या अभ्यासा व्यतिरिक्त जो वेळ आणि श्रमशक्ती आपल्या जवळ आहे त्यातील प्रत्येक कणकण या कानासाज्या खच करण्याची तयारी दाखवली पाहिजे.

ही योजना सुरू करून विद्यार्थ्यांना युवकांना एक नवी संधी उपलब्ध करून दिली आहे. तिचा उत्तम फायदा घेणे हे केवळ या योजनेत काम करणाऱ्यांवर व तिला नतूत्व देणाऱ्यांवर अवलंबून आहे.



## प्रार्थना

आण्णासाहेब ह्या घरातून त्या गरात सारखे हेलपाटे घालत होते. ते आज बरेचसे नाराज दिसत होते. त्यांच्या तोंडावर चिंता दिसत होती. ते विचार करताहेत हे त्यांच्या तोंडावरून स्पष्ट दिसत होते. ते तोंडाने देखील काही बडबडत होते. ते अर्धून मधून अलिकडे असेच करित. त्यातून त्यांची बायको मदा, ही गेल्यापासून तर खूपच ते दुखावले होते. तिला कॅन्सर झाला होता. ती बाळाला जन्म देताच या जगाला सोडून गेली होती. त्या बाळाला त्याच्या वडिलांनी म्हणजे आण्णासाहेबांनीच संभाळले होते. ते बाळ हळूहळू मोठे झाले. पण पण आईच्या ममतेपासून विचारा खूप दूर होता. त्याने आई देखील पाहिली नव्हती. त्याला बळण लावणारे देखील कोणीच नव्हते. आण्णासाहेब चित्र काढायचे ते विकून त्याचे पैसे मिळाले की त्या पैशावर ते घर चालवत असत. त्यामुळे आण्णासाहेबांचा मुलगा वॉर्ट वळणावर गेला. त्याला संगतच चांगली नव्हती. त्यामुळे सहाजिकच तो वॉर्ट गोष्टीकडे आकर्षित गेला ज्याप्रमाणे सज्जन लोकांची संगत मिळणे कठिण असते व मिळाली तर ती टिकणे त्याहून कठिण असते. त्याप्रमाणेच आण्णांच्या मुलाचे म्हणजे गजाननचे झाले होते. गजानन आता जवळजवळ २०-२१ वर्षांचा होता. पण तरीही त्याच्या वर्तुणुकीत फरक नव्हता. रात्री अपरात्री येणे. गावातून फिरणे, टिंगल टवाळी करणे इतके असले तरी गजाननाला आपल्या वडिलांचा लळा होता. त्याच्याबद्दल त्याला खूप आदर वाटे आणि विशेष म्हणजे त्यांना उलट शब्द त्याने कधीही आजपर्यंत केला नाही. तो आण्णांना खूप घाबरत असे.

आण्णांना वाटे की, गजाननने आपल्यासारखेच चित्रकार व्हावे व नाव कमवावे. पण गजाननला चित्र देखील आवडत नसे. आण्णा म्हणत चित्र राहू दे निदान शाळा तरी शिका. थोडं नाव कमवा वापाचं नुसता खायला कार अन् धरणांला भार नको. पण तो दूर्लक्ष करी ते आण्णांचे शब्द एका कानाने ऐके व दुसऱ्या कानाने सोडून देई. आण्णांना वाटे एक दिवस असा उजाडेल की माझा मुलगा खूप मोठा होईल. आण्णांसाहेबांचा मुलगा गजानन मालवणकर म्हणून तो जगप्रसिध्द होईल पण.

एके दिवशी आण्णा खूर्चीवर बसले असतानाच गजानन आत आला. व त्याने आण्णांकडे पाहिले. तेव्हा त्याच्या अंगाचा थरकाप झाला. एखाद्या शिकाऱ्याला प्रथमच शिकारीची हाव सुटायवी. पण समोर एकदमच वाघ दिसावा. त्याची जी स्थिती होते. तशीच स्थिती गजाननची झाली होती. त्याला आण्णांच्या डोळ्याला डोळा भिडविण्याची देखील ताकद नव्हती. आण्णांनी त्याला खूण करून जवळ बसण्यास सांगितले. आता मी जातो जाम घाबरला पण कसा बसा तो जवळ गेला. आण्णांनी मायेनी त्याच्या पाठीवर हात

भोसले एस्. एम्.  
एस. वाय. वी. ए.

फिरवला व त्याला म्हणाले आज कुठे डाका घातला. गजानन चपालला हा हात मायेचा नाही. हे त्याने ओळखले व तो उठ. याचा प्रयत्न वर लागला तेवढ्यात त्याच्या पाठीत जोराची लाथ बसली तो २-३ पायऱ्यावरून गडगडत गेला. पण त्याने काही बर डोळा करून आण्णांकडे पाहिले नाही.

दुसरा दिवस उजाडला आण्णां कसलासा पेपर वाचीत चौपाळाघावर बसले होते. तेवढ्यात दारावर जोरजोरात थापा पडू लागल्या. आण्णांनी पेपर वाजूला ठेवले. डोळ्यांचा चप्पा चौपाळाघावर ठेवत त्यांनी दार उघडले एक अनोखी मनुष्य सहानभूतीच्या दृष्टीने त्यांच्याकडे पाहत होता त्याला काहीतरी हवे होते. हे त्याच्या तोंडावरून स्पष्ट दिसत होते. तसाच तो घाबरला होता व सारखा पाठीमागे पहात होता. आण्णांनी त्याला आत आणले व पेलाभर पाणी पिण्यास दिले व विचार पूस केली आपण कोण? कोटून आलात? काय हवे? इतके घाबरण्याचे कारण काय? इतक्या रात्री कसे आलात?

त्याने आगोदर सगळीकडे नजर टाकली कोणी आहे का याचा अंदाज घेतला व सांगू लागला की मी ह्या गावापासून ५-६ मैलाच्या अंता-रावर राहतो. माझी मुलगी याच गावात दिली आहे. तिच्या लग्नाला आज ४-५ वर्षे झाली. पण अजून मूल वाळ नाही. तेव्हा देवीच्या अंगारा घेवून मी तिच्याकडे आलो होतो माझे नाव सखाराम. मला सखा म्हणतात सगळे मी माझ्या मुलीच्या घरी गेलो होतो तेव्हा माझा जावई व मुलगी जेवण करित होते ते एकमेकांच्या तोंडात घास घालीत होते आणि मोठ्याने हसत होते मी दारातच थांबलो म्हटले जेवण झाल्यावर आपण आत जावू. मला पाणी घेतल्याचा आवाज झाला मी मनात म्हटले आता झाले असेल जेवण माझ्या मुलीचे म्हणून दारापशी गेलो तर .....तो माझा जावई नसून तो दुसऱ्याच अनोखी मुलगा होता. माझा राग अनावर झाला मी हातातल्या पिशव्या फेकून दिल्या व त्याच्यावर चाल करणार तोच त्याने चाकू काढला व माझ्या मागे लागला व मला जोरजोरात हसून म्हणाला पाहिलत हे काय आहे. याला चाकू म्हणतात. कशावर जगतो आहे. माहित आहे का? याला फक्त माणसाचे रक्त लागते. त्याला बरीच भूक लागलेली दिसते तेव्हा ती भूक शांत करणे ही माझी इच्छा आहे. असे म्हणून तो माझ्यापाठी मागे लागला. मला सहारा देण्याचे धाडस कृणीच करेनात शेवटी आपणच धाडस केलेत तेवढ्यात दारा वर थापा पडल्या सखा म्हणाला इतक्या रात्री कोण आलं असेल. असे म्हणून तो दरवाजापाशी गेला दार उघडणार इतक्यात आण्णां म्हणाले थांब सखा तु दार उघडू नकोस असे म्हणत ते उठले. त्यांनी चौपाळाघांचा आधार घेण्याचा प्रयत्न केला पण चौपाळा झोका खात अस-

नियतकालिक ८७-८८

इतिहासामध्ये क्रांति करण्याचे प्रयत्न झाले. प्रत्येक वेळी शस्त्रांचे सहाय्य घेण्यात आले. अशा प्रत्येक प्रयत्नानंतर शस्त्रधारी सत्ताधारी बनला. सत्ता जनतेच्या हातात आली नाही. दुसऱ्या बाजूला शस्त्रास्त्रांच्या क्षेत्रात एवढा विकास झाला आहे की, शस्त्रांचे रूपांतर अस्त्रांत झाले आहे. अस्त्र वाळगणे आणि वापरणे जनतेला शक्य नाही. माओ, चेग्वारा, हो चि मिन्ह यांनी गतोमी युद्धाचा विकास केला. त्यांच्याही मर्यादा स्पष्ट झाल्या आहेत. शस्त्र तत्वतः आणि व्यवहारतः वापरणे अशक्य झाले आहे. शस्त्राखेरीज अन्य मार्गांचा अवलंब करण्याची वेळ आली आहे. शांततामय व शुद्ध साधनाचा मार्ग शस्त्राची जागा घेण्यासाठी पुढे आला आहे. क्रांति करण्याच्या पद्धतीतील बदल क्रांतीच होय.

जयप्रकाश नारायण-

धर्म हा माणूस व देव यांच्या संबंधाचा विषय तर संस्कृती म्हणजे माणसामाणसातील संबंधच होय. साहित्याचा संबंध माणसाची येतो म्हणून साहित्याचे स्वरूप सांस्कृतिक आहे. धर्म हा स्थिर आहे तो श्रद्धांवर, निष्ठांवर आधारित आहे तर संस्कृती विचारांवर ज्ञान व परिस्थितीच्या आकलनावर आधारित आहे. ती परिवर्तनशील असल्याने सतत बदलत असते.

स्वामी विवेकानंद-

त्याने रांगीना ती धरता आला नाही व अण्णां खाली पडले हे पाहून सखा धावला व त्याने मदत करण्यासाठी हात पुढे केला पण त्याला धरूबाच बसला कारण अण्णांना फक्त वासच होत होता, हे त्याला आता कळले इतका वेळ आपल्या कसे लक्षात आले नाही कोण जाणे असा विचार करित त्याने अण्णांना कोचवर बसविले.

तितक्यात दारांवरची थाप आणखीच वाढली मग मात्र सखाच गेला त्याने दार उघडले पाहतो तर त्याचा पाठलाग करणारा मनुष्य तेथे येवून पोहचला तो अण्णांच्या दिशेने धावला व अण्णांच्या पाठी-मागे लपला अण्णांना म्हणाला हाच तो मनुष्य जो पाठीमागे लागला आहे. अण्णांना हा अनुभव काही काही नवीन नव्हता त्यांच्या डोळ्यात पाणी आले ते म्हणाले अशी विघडलेली व्यसनी दुर्वर्तनी मूळे ज्याघरात असतात तेथे शांती सुख व समाधान वास करणे अशक्य असते प्रत्यक्ष ब्रम्हदेव जरी आला तरी काहीही उपयोग नसतो. अशी मुले समाजाला डाग लावतात. व ह्या डाग लावणाऱ्या मूलांचा दूर्दैवी बाप तो मीच आहे. त्याने गजाननला जवळ बोलावण्यासाठी वर पाहिले असता तो तेथे नव्हता तो केव्हाच पळून गेला होता.

इतक्यात दारात एक व्यक्ती उदास चेहरा करून आली अण्णांनी त्याला विचारले काय रे राम्या असा चेहरा का पडला तुझा? आणि हे काय डोळ्यात पाणी का आले? तू रडतोस का? अरे काहीतरी बोलना, राम्या काहीतरी बोल तु.

रामा म्हणाला अण्णां आपल्या मुलाचा अपघात झाला इतक्यात तो जोरजोरात रस्रावरून पळून जात होता. तेव्हा मी पाहिला आणि समोहन टूक येतो हे त्याच्या लक्षात आले नाही. अण्णा तो

आपल्याला सोडून गेला. त्याने जाताना धिनाथले बुद्धा नाही असे म्हणत राम्या रडू लागला. अण्णांवर एकाच जागी दून्य नजरेंत पाहत होते. माझी इच्छा अपूरी राहिली. मला माझ्या मूलाला चित्रकार करायचे होते. राम्या, माझे दोन्ही हात तुटले रे आता मी काय करू? माझा एक हात अपघातात गेला आणि आता दुसराही हात देवाने घेतला काढून. का ही निपटूर धिधा दिली मला देवा, असे लडवडत अण्णां ओकसा ओकसा रडत होते अधून मधून ते मंदाला म्हणजे वायकोला म्हणत मंदा तुझी इच्छा होती की मूलाला चांगले लावा तुमच्या सारखेच त्याचे नाव मोठे करा. मला पण वाटत होते की गज्याने खूप मोठे चित्रकार व्हावे. पण मंदा ..... तुझी पण इच्छा मी पूर्ण करू शकलो नाही व माझी पण इच्छा अर्धवट राहिली मंदा अग तुझ्याकडे तुझा मुलगा आला आहे. इतके दिवस मी त्याला संभाळले आता तो मला कंटाळला व तुझ्या कडे आला मंदा तुझी इच्छा पूरी केली नाही म्हणून मला क्षमा कर मंदा क्षमाकर मला. मंदा शेवटी ज्याचे त्याचे नशीब अग, सवयीतून स्वभाव तयार होतो व स्वभावानून नशीब तयार होते. त्याला सवयच चांगली नव्हती तर नशीब कसे तयार होणार. मंदा अग चारी भितीच्या आत मला एकट्याला टाकून तो तुला सोवत म्हणून आला आहे. मंदा आपल्या इच्छा अपूर्ण राहिल्या. तेव्हा त्या इच्छा पूर्ण करण्यासाठी आपण पुढच्या जन्मी पुन्हा पती पत्नी म्हणून येवू व देवाला हाच पुत्र दे म्हणून एक प्रार्थना करू. आणि प्रार्थनेसाठी त्यांनी हात पुढे केला पण ते धाडकन जमिनीवर कोसळले व ते पण आपल्या मुलाच्या सोवत गेले. एक दिवा मालवला गेला तो कायमचाच. पुन्हा प्रज्वलित न होण्यासाठी.



## - कविता -

### निरोप

ओलावलेल्या पापण्या  
देत आहेत पूर्व स्मृतींना उजाळा  
शथे घालवलेल्या प्रत्येक क्षणाची  
करून देत आहेत आठवण  
सांगत आहे इथला कण् कण  
नाते आपले दृढ किती  
केले आहेत अनेक निश्चय  
इथल्या वेली साक्ष आहेत  
आत्मविश्वास वाढवला आहे  
इथे उगवलेल्या प्रत्येक दिवसा  
दिला आहे संदेश  
मानाने जगण्याचा  
आणि घेतली आहेत वचने  
स्वावलंबी वनण्याची  
अन्याया विरुद्ध झगडण्याची  
मात्र आज निरोप घेताना  
जड झाले आहे पाऊल  
उदास झाले आहे मन

कु. ज्योती गणदास  
टी. वाय. बी. कॉम

### प्रश्न

पालावरच्या खळीत  
प्रश्न गर्दी करतात  
ओठ उघडण्या आधीच  
डोळे बोलून जातात  
पण, शेवटी फक्त  
प्रश्नचिन्ह उरते  
अन्, चारलेल्या प्रश्नाचे  
उत्तर अनुत्तरीतच  
राहते!

कु. ज्योती मरकळे  
एम. ए. (मराठी)

### विरोध

निश्चयाचा मेरुमणी  
एका करांगुलीने  
तोलून धरत असता  
सनाचा आत्मविश्वास  
वाढत होता  
पण करांगुली मात्र  
दुखावून आली  
होती  
उरलेल्या चार बोटांचा  
विरोध सहन  
करता करता

कु. ज्योती मरकळे  
एम. ए. (मराठी)

### जीवन ऐसे नाव

याला जीवन ऐसे नाव  
माणसा सदा असे तुझी पुढे धाव  
त्यात असे तुझ्या स्वार्थाचा ठाव  
याला जीवन ऐसे नाव!  
माणुसकीचा नसे श्रेथे वास  
रक्ताच्या नात्यात माझ दूस्वास  
याला जीवन ऐसे नाव!  
सद्विवेकांच्या मानी ठासे घाव  
अष्टीजनांच्या गळी पडे पुष्पांचा हार  
याला जीवन ऐसे नाव!  
दिनांच्या हाकेला ना कुणाचीच  
मात्र मोठ्यांच्या मुज्यांसाठी जुळतार सारे हात  
याला जीवन ऐसे नाव!

कु. राजे निंबाळकर ए. पी  
एम. ए. इतिहास (भाग एक)



श्री. हरिश्चंद्र नारायण देवकाते यांचे दुःखद निधन

श्री हरिश्चंद्र नारायण देवकाते ऊर्फ राजा  
देवकाते यांचे दि. २४-३-१९८८ रोजी  
दुःखद निधन झाले त्यांना आमची  
भावपूर्ण श्रद्धांजली !

## अभ्यंगस्नान

अन्याय ठिकठिकाणी सद्गृहस्थ पाहात होते  
खावून लाच स्वतः तेही पचवत होते  
दुःखितांचे दुःख पुसण्या पुढारी हे झाले होते  
शोषून रक्त त्यांचे स्वतःच पित होते  
घेवून शपथ खरी स्वतःच विसरत होते  
साक्षी शासन, जनता, तरी त्यांनाच फसवत होते  
खोटी आश्वासने देत रात्रंदिवस झुरत होते  
पुन्हा पुन्हा निवडून येत सहकारात चरत होते  
फोटासाठी भटकत जे कोणी जात होते  
वाटेवरती त्यांच्या हेच काटे पसरत होते  
गरिब जनतेसाठी जाहीर बोंब ठोकत होते  
लावून त्यांच्या तोंडी हे स्वतःच खात होते  
संतवाणी पडता कानी धार्मिक बनत होते  
जनतेस भुलवून नामी गळे हे दावत होते  
सत्यासाठी झगडा देण्याची वकीली करत होते  
नीती न्याय विसरून सारे स्वार्थी ठरले होते  
प्रतिबंध करणारेच पळवाटा काढीत होते  
दुसऱ्याला शोधणारे स्वतःसाठी शोधत होते  
वळले माघारी तेव्हा ओझे झाले होते  
मी राहीले होते अन् काही राहीले होते  
भल्या पहाटे मजला भेटले महंत जे ते  
विसरून कालचे सारे अभ्यंगस्नान करीत होते.

कु. मंगल कदम  
एस. वाय. बी. ए.

## मी असा

वाट ती विसरलेली आता पुन्हा दिसणार आहे  
त्या जुन्या आठवणीने, मी आता झुरणार आहे  
सारे परके झाले इथे, स्नेहबंध तुटले इथे  
साथ घेऊन दुरावा, मी असा जगणार आहे  
तो स्वतंत्र होता यार माझा हिणावतो वाटे मला  
स्पंदने घेऊन ऊरी, मी असा फिरणार आहे  
बाकलीही आता फुलाची, टोचते काट्यापरी मला  
वेदनांचा भार घेऊन, मी असा शिणणार आहे  
पोळलेल्या या मनास, आणखी पोळवू नकोस  
वाळवंटी जीवनात माझ्यामी आता झिजणार आहे

अविनाश डी. महामुनी  
एस. वाय. बी. कॉम.

## पडसाद.....

जेव्हा तुझ्या स्मृतीचे, पडसाद दाट झाले  
हृदयातील व्यथांना अश्रुच वाट झाले  
अर्ध्यावरून अशी तू...  
गेल्यावरी निघोनी,  
अश्रुत चिच झाली  
माझी तुझी कहाणी  
हा विरह सोसण्याला, दुःख काठ झाले  
हृदयातल्या व्यथांना अश्रुच वाट झाले  
ओठात शब्द माझ्या  
सख्ये! तुझाच होता  
गंधीत सूर आणि  
होते तुझेच गीता  
आता मुकेपणाचे, गाणे मुकाट झाले  
हृदयातल्या व्यथांना, अश्रुच वाट झाले  
चाहूल ही म्हणू की  
होतो मनास भास  
परि वाटते अजुनी  
आहेस आसपास!  
या एकले पणाने जगणे पिसाट झाले  
हृदयातल्या व्यथांना अश्रुच वाट झाले  
जगतो असा इथे मी,  
हा नाईलाज माझा  
की पोहचणार नाही  
तेथे आवाज माझा  
आक्रोश या मनाचे, आता जुनाट झाले  
हृदयातल्या व्यथांना अश्रुच वाट झाले  
जेव्हा तुझ्या स्मृतीचे

संदीप क सुभेदार  
टी. वाय. बी. ए.



तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, वारामती

## अश्वत्थवामा

एक अश्वत्थवामा  
प्रेमाची भिक मागत  
दारोदार हिडणारा  
कधी तुझ्याहा मनाची  
कवाडे टोठावून गेला  
मात्र तू राहिलीस  
आपल्याच रेशमी कोशात  
निशब्द..... निस्तब्द  
तुझ्या नकाराने  
रक्तबंबाळ मनासहीत  
परत फिरलेला  
अश्वत्थवामा!  
परत कधाहा दिसला नाही  
कुणी म्हणतात  
ता होरपळून मेलाले  
तर कुणी म्हणतात  
तो निघून गेला  
मात्र अजूनही तो  
स्मशानाच्या राखेच्या ढिगाऱ्यात  
तुझ्याच नावाची अक्षरं गिरवतोय!

खिनय आरचार्य  
एस. वाय. वा. ए.

## तुझे आयुष्य

आयुष्य माणसाचं  
बहारीच!  
आयुष्य माणसाचं  
फुलपांखराच!  
आयुष्य माणसाचं  
सतत हसण्याचं!  
आयुष्य माणसाचं  
खुशाल चंबुचं!  
आयुष्य माणसाचं  
लाख मोलाचं  
आयुष्य माणसाचं  
अति प्रेमाचं

पण!  
असं कसं रे?  
तुझे आयुष्य  
मलूल झालेल्या  
चिपाड्यासारखं?  
रंग उडून गेलेल्या  
चित्रासारखं?  
रया गेलेल्या  
सदऱ्यासारखं  
रया गेलेल्या  
सदऱ्यासारखं

सुनिल शां. खटके  
टी. वाय. बी. ए.

## संदेह

वचने तुझीच होली  
दिधली मला परत  
जगणे उदासवाणे  
मी सोसले परंतु  
माझा असा तुलाही  
संदेह आज यावा  
जोडून मज, दुजाच्या  
हातात हात द्यावा  
देऊ कसा पुरावा  
आहे तुझाच आहे  
अजुनी तृपार्त ओठी  
तुझाच ध्यास आहे  
मी एकलाच आता  
जाऊ कसा किनारी?  
तुझ्याविना ही माझी  
मी जिदगी अधुरी

अविनाश झाठवी  
टी. वाय. बी. ए.

## 'तर'

तोडीत असता गुलाबा  
मध्येच काटा रुतला तर?  
हसत असताना स्वच्छंदी  
मध्येच अश्रू आले तर?  
चालत असता जीवनाची खडतर वाट  
मध्येच पाय फसला तर?  
पवित्र असताना प्रीत आपली  
मध्येच कलंक लागला तर?  
चालवित असता जीवनाची गाडी  
मध्येच ब्रेक लागला तर?  
जगत असता मनसौजी जीवन  
मध्येच मृत्यू आला तर?  
असंख्य प्रश्न निर्माण होता  
एक ही न सुटला तर?  
अपयश, अहंकार अधोगती

शेख एस. डी.  
एस. वाय. बी. एस्सी

## सांगावा

यावी पावसाची सर  
झाली धरणी आतूर  
मनी मिलनाची आस  
डोळा आसवांचा पूर

जाई बारा ढगापाशी  
तसा घेऊन सांगावा  
आहे प्रियकरासाठी  
असा प्रियेचा हसवा

जाता सांगावा ढगासी  
झाले हृदयाचे पाणी  
झरे प्रेमाचा पाऊस  
झाली चिंव ती धरणी

नवचेतनेने तेंव्हा  
धरा मनी रोमांचली  
नव अंकुराच्या रूपी  
आनदाने वहरली

नितोनकुमार वा. शेंडे  
एस. वाय. बी. एस्सी.

- ★ भरलेल्या अंतःरणास भावनेचा धक्का लागला तर त्यावर तरंग उठेल. आणि मायेचा लागला तर ते डोळ्यावाटे सांडल्याशिवाय राहणार नाही.
- ★ कीर्ति ही वाफेसारखी आहे, लोकप्रियता हा अपघात आहे, श्रीमंती वाऱ्यावर उडून जाते, कायम टिकणारी गोष्ट एकच ती म्हणजे चारित्र्य.
- ★ जलविदू वेगळा झाला आणि स्वतःस समुद्र मानू लागला तर तो वाळवंटा सारखा शुष्क होईल, पण समुद्राचे अस्तित्व मानून जर समुद्रालाच मिळाला तर तो स्वतः समुद्र होवून जाईल.
- ★ झाड जरी आकाशाला टेकले असले म्हणून काय झाले? त्याची पाने गळताना ती काही आकाशात जाणार नाहीत. ती खाली जमिनीवर पडतात.

संकलन - कु. उषा गुप्ता.  
टी. वाय. बी. एस्सी.

गुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती

## हिन्दी विभाग

### आतंकवाद

जाधव एस पी  
एस वाय. बी. ए.

आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं समाचार पत्रों में आये दिन रोज खबरें आती हैं कि पंजाब के निकट फलाने गांव या शहर में कुछ आतंकवादियों ने कुछ आदमियों को गोली से मार डाला है। अिनमें से कुछ लोग सरकारी अधिकारी होते हैं, कुछ निरपराध नागरिक होते हैं, कोई इक्का दुक्का आतंकवादी भी होता है।

यह खबर सुनते ही हर एक के मन में भय-सा पैदा होता है। आतंकवाद ! नाम सुनते ही उसके प्रति हर एक के मन में एक क्रोध पैदा हो जाता है। और इस आतंकवाद से पंजाब ही नहीं बल्कि सारा हिन्दुस्थान हैरान-सा है। इस आतंकवाद ने अपने ही देश-बांधवों की हत्याएँ करने का मानो बीडा उठा लिया है। आज आतंकवाद ने न सिर्फ सामाजिक व्यवस्था बिगाड़ दी है, बल्कि देश की सारी अर्थव्यवस्था में भी हलचल मचा दी है।

पंजाब में चल रहा आतंकवाद कब किसका घर सूना कर दे कोई नहीं जानता। पिछले दस वर्षों में जारी इस आतंकवाद का यह पाशविक नर्तन न जाने कितनी माताओंकी गोद सूनी कर चुका है, कितने बच्चों को अनाथ बना चुका है, कितनी बहनों के भाई उनमें छिन चुके हैं और कितनी सधवाओंके सिद्धूर पोंछकर विधवा बना चुका है।

यही पंजाब हिन्दुस्थान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा और पड़ोस के राष्ट्रोंका ध्यान आकर्षित करने वाला एक स्थान। जिसमें कल तक हँसता-गाता सिख समुदाय कुछ मुट्टीभर आतंकवादियों के कारण परेशान है। इसी पंजाब में आज सामान्य जीवन एक तरक-सा बन गया है। यहाँ आदमी एक क्षण भी चैन का नींद नहीं सो सकता। बस ! सारा दिन आतंकवादियों के हाथ से बचने के लिए भगवान से दुदा मांग रहे हैं।

आज सैतालीस साल हुए हमारे हिन्दुस्थान का आजादी मिली। आजादी में कितने ही नौजवान तथा बूढ़े लोगोंने अपनी आजादी के लिए खून बहाया है। लेकिन आज हम देख रहे हैं कि हर एक राज्य धर्म के नाम पर या सांप्रदायिकता के नाम पर झगड़े कर रहा है जैसे पंजाब में आज चल रहे हैं। न जाने कौनसे द्वेष के कारण पंजाब के कुछ लोग आतंकवादी बनकर अपने ही बांधवोंका खून कर रहे हैं। पता नहीं हत्या करने के पीछे उनका क्या स्वार्थ है। अजीब सा लगता है कि कल तक हँसता, गाता लहराता सिख समुदाय आज कट्टरवाद का शिकार क्यों बन गया है ?

नियतकालिक ८३-८८

आज भारत को पहले स्थिति ठीक ऐसी ही दीखती है जैसे आजादी के चालीस सालों बाद सारे देश का वातावरण बिगड़ा हुआ था। इस आतंकवाद ने आज तक कितने लोगोंकी हत्या की है। इसकी संख्या बताई जाये तो करीब-करीब दस बारह हजार लोग इस आतंकवाद का शिकार बन चुके हैं, जिसमें हमारी प्रधानमंत्री से लेकर सेनाध्यक्ष और पंजाब के कई पक्ष नेता भी शामिल हैं। देखा जाये तो सिर्फ इस नये साल के जनवरी महीने में ही एक सौ चालीस लोग इस आतंकवाद का शिकार बन गये हैं। इससे हम अनुमान लगा सकते हैं आतंकवाद के इस पाशविक नर्तन का। फिर भी इसपर रोक लगाने में हमारा सरकार कामयाब नहीं हुई और ना ही सभी आतंकवादियों को पकड़ने में समर्थ हुई। अगर कोई पकड़ा भी जाता है, तो उसके साथ मेहमान की तरह जेलों में सुलूक किया जाता है। उनके मत से इस देश की जेलोंकी दीवारें इतनी मजबूत नहीं हैं कि किसी आतंकवादी को कुछ सप्ताह जेलमें कैद रख सकें। कुछ दिनों के बाद वे जेल से भाग जाते हैं चाहे कितनी ही कड़ी सुरक्षा क्यों न हो।

आज देखा जाये तो अमृतसर में स्थित सुवर्ण मंदिर को कभी सिख लोग अपना पवित्र स्थान या सर्वस्व मानते थे, वह सुवर्ण मंदिर आज एक शस्त्र भंडार-सा बन गया है, जिसमें तरह तरह के मशिनगन्स, रिवाल्वर, और अन्य शस्त्रास्त्र पाये जाते हैं। हर वक्त उसमें से नारे गूँजते रहते हैं खलिस्तान जिदावाद, पाकिस्तान जिदावाद। फिर भी हमारी सरकार मंदिर में चल रहे इस अनाचार को रोक नहीं सकती और ना ही इसपर कोई गंभोरता से विचार करता है। हमारी प्रधानमंत्री स्व. श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या उनके रक्षकों ने ही की थी परंतु हम यह भी भूल नहीं सकते कि इसमें भी आतंकवादी का ही हाथ था, वरना ये दो रक्षक आज के भक्षक न बन पाते। भूत पूर्व सेनानी ज. अरुण कुमार वैदच जैसे अफसर की हत्या के पीछे भी इन आतंकवादियों का ही हाथ रहा है।

इसी आतंकवाद को चलाने वाले कुछ संगठन पंजाब में हैं जो विविध नाम धारण करके अपना 'काम' चला रहे हैं। जैसे 'खलिस्तान कमांडो फोर्स' संगठनने ज्यादातर भारी संख्या में मासूम लोगों का खून बहाया है। हरजिंदर उर्फ जिदा और वाजवा जैसे कुख्यात आतंकवादी इसी कट्टरतावादी गुट के सदस्य थे। सूखा सिपाही उर्फ जनरल लाभसिंह इसी संगठन का जनरल है। दूसरा संगठन, 'खलिस्तान लिबरेशन आर्मी' जिसने हिन्दुओं को

भारी संख्यामें मार डाला है साथ ही साथ अपने सिख लोगों को भी, जैसे संत हरचंदसिंह लोंगोवाल को मौत के घाट उतार दिया। एक और गुट पंजाब में अपना काम कर रहा है, जिसका नाम है 'भिडरों टाइगर फोर्स'। इस संगठन का दिल्ली में घटित हिंसक घटनाओं में हाथ रहा है। और भी कई छोटे-बड़े संगठन हैं जो बहुत सक्रिय हैं।

एक खुशी की बात यह है कि आतंकवाद के विरुद्ध तेजी से काम करने वाले हमारे देश के प्रख्यात पुलिस अधिकारी जूलियो फ्रांसिस रिबेरो जैसे महान अफसरों को पंजाब में भेजकर एक अच्छा सा कार्य किया है जिसमें सिख लोगों में उत्साह बढ़ने लगा है। उन्होंने

## भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार आजके युग का भयानक समस्या है। बीसवीं शताब्दी में भ्रष्टाचार भयानक रूप से फैला हुआ है। भ्रष्टाचारका अर्थ इंडियन पीनल कोडके अनुसार इस प्रकार है -

"कोई भी व्यक्ति जो सार्वजनिक सेवक होगा, उसे अपने काम के लिए नियमानुसार शासन की ओर से जो वेतन मिलता है, उससे ज्यादा वेतन पानेका कोई भी तरीका भ्रष्टाचार है।"

संपत्ति की अभिलाषा, एवं सर्वोच्च पदमें आकर्षण रखना मानववंश में पुरातन कालसे चलते आया है। इसकी प्राप्ति के लिए मानव पुरातन कालसे हिंसा, कत्ल एवं शस्त्र सामग्री आदि का प्रयोग कर रहा है। लेकिन बीसवीं शताब्दी का मानव सुसंस्कृत माना जाता है। दिन-ब-दिन मानव की समस्याएँ बढ़ती ही जा रही हैं। उन समस्याओंको सुलझाने के लिए सामाजिक भ्रष्टाचार एवं रिश्वत आजके सुसंस्कृत समाज की एक कठिन समस्या है। इससे समाज जीवन नष्ट होने लगा है।

भारत देश में रिश्वत एवं भ्रष्टाचारके बहुत से प्रकरण निरन्तर निर्माण होते हैं। इसका प्रभाव संपूर्ण मानव जाति, संपूर्ण समाज एवं राजकीय प्रणाली पर पड़ता है। रिश्वत एवं भ्रष्टाचार के प्रकरणों में बहुतसे उच्च अधिकारी अपना मौल्यवान समय नष्ट करते हैं। इसी कारण विरोधी दल और सत्ताधारी दल इन दोनों में आरोप-प्रत्यारोप जोर-शोर से होते हैं। इस काम में उच्च अधिकारी ही नहीं बल्कि मामूली व्यक्ति भी भ्रष्टाचार को कभी-कभी अपना लेते हैं।

स्वतंत्र भारत उन्नति की ओर बढ़ रहा है और एक तरफ भ्रष्टाचार के पास खिंचा जा रहा है। हर वक्त मानव अपने देश की भलाई के लिए पचास बार अच्छा काम करता है। लेकिन इसी तरह भ्रष्टाचार की ओर भी बढ़ जाता है। इसी तरह समाजके हर गुट में और हर इन्सान के साथ भ्रष्टाचार हो रहा है। देश की भलाई के लिए जो आदमी यह अच्छा काम करना चाहते हैं वहाँ के कुछ आदमी खुदके लिए उस भले काम को भ्रष्टाचार में बदल देते हैं। यानी हर इन्सान स्वार्थ देखता है। बुनियात के हर देश में भ्रष्टाचार बहुत बड़ी तिजारात बन गया है।

अनेक आतंकवादियों के खिलाफ ठोस कदम उठाये हैं जिसके कारण कई आतंकवादी अब तक मारे जा चुके हैं और कई पकड़े जा चुके हैं। हमारे खयालसे वे ऐसेही कार्य करते रहेंगे तो शीघ्र ही आतंकवाद का नामो-निशान मिट जायेगा और यह पाशविक खेल कुछ ही दिनों में समाप्त हो जायेगा फिर पंजाब हैमता गाता लहराता हमें नजर आयेगा। यहाँ हिंदु, मुस्लीम, सिख, इसाई आदि धर्मों के लोग अपनी मनमुटाव को छोड़ मिलकर रहेंगे तो सही मानेंगे अहिंसा के मार्गपर चलनेवाले म. गांधी और ग्वान अब्दुल गफारखान को सच्ची श्रद्धांजली अर्पण होगी और तभी यह गीत सार्थक होगा-

मजहब नहीं सिखाता आपसमें दैर रखना  
हिंदी हैं हम, बतन है हिंदोस्तां हमारा।

झिंकर जी. शेख  
एम्. वाय्. बी. ए

हर तरह का भ्रष्टाचार होता है : अधिक भ्रष्टाचार औद्योगिक भ्रष्टाचार, राजकीय भ्रष्टाचार सामाजिक भ्रष्टाचार आदि लेकिन हर भ्रष्टाचार का मूल्य साधन संपत्ति ही है।

इस युग में जिधर देखो उधर भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है। राजकर्तारों एवं साधारण जनों में संघर्ष चला रहा है। इस भ्रष्टाचार को नष्ट करने के लिए मानवको हर वक्त जाग्रत रहना चाहिए। हर भ्रष्टाचार में रिश्वत एवं दलाली एक व्यापार बन गया है। मंत्री महोदय जनता के सेवक होते हैं लेकिन इस भ्रष्टाचार में मंत्री ही इस मामले में हाथ बँटाते पाये जाते हैं। क्या ये जनता के सेवक बनने के काबिल हैं? क्या ये जनता के सेवक बन सकते हैं?

स्व. न. वि. गाडगोळ कहते हैं-

"मंत्री ऐसा हो जो कार्यक्षम हो।

उसका कर्तृत्व महान हो, कीर्तिमान हो।

देश भक्त हो, और अच्छा शासक हो।

जो जिम्मेदारी संभाल सके वह सच्चा मंत्री हो सकता है। इस भ्रष्टाचारको नष्ट करना हम सबका कर्तव्य है। हर देश के लेखक और भारतके हर सच्चे देशभक्त नागरिक का कर्तव्य है। इनको ऐसा लगता है कि भविष्यकाल में अपने भारत देश को क्या होगा? यह भ्रष्टाचार देश की आजादी को नष्ट कर रहा है। एक ओर आर्थिक प्रगति होती जा रही है दूसरी तरफ भ्रष्टाचार की समस्या भयानक रूप धारण कर रही है। सत्ता-संपत्ति एवं वरिष्ठ पदोंका केंद्रीकरण विशिष्ट वर्ग लोगों में नहीं होना चाहिए। वरिष्ठ पदोंका केंद्रीकरण वर्ग के लोगों में बढ़ जाने से भ्रष्टाचार दलाली एवं लेना-देना कम होने के बजाय और भी बढ़ता जायेगा।

इस लिए प्रत्येक को अब यह प्रतिज्ञा करनी होगी कि भ्रष्टाचार तो नहीं करेगा और भ्रष्टाचार करने वालों को भी पापसे रोकेगा। इसी प्रकार हर व्यक्ति अपनी ईमानदारी सच्चाई से रहकर इस भयानक समस्याको नष्ट कर सकता है। वापूजी के स्वप्न का भारत साकार कर सकता है और देश उन्नति की ओर बढ़ सकता है।

मुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, वापूजी

## किसकी अधिक जरूरत

किसी शहर में एक बार मशीनोंकी प्रदर्शनी हुई। सभी तरह की मशीनें थीं वहाँ! बाल काटने और दाढ़ी बनाने की, धुलाई और सिलाई की, कीमा बनाने तथा चाय बटोरने की .. बहुत लोग देखने आए इस प्रदर्शनी को। आखिर रात हो गयी, नुमाइश के हॉल में बस्तियां बुझ गयीं और खामोशी छा गयी।

शहर ऊपरके बहुत ऊँचाई पर सिर्फ चांद ही जाग रहा था, अंधेरी खिडकियों में झांक रहा था।

तो अचानक क्या देखा चांद ने। इस रात को मशीनें भी नहीं सो रही थीं-वे सब बड़े मण्डप में जमा हो गयी थीं, घेरा बनाकर बहुत जोर-शोर से बहस कर रही थीं।

बाल काटने की मशीनने कहा:

"आप सब बुरा न मानें, लेकिन हमारे बीच दूसरी कोई ऐसी मशीन नहीं है, जिसकी मुझसे ज्यादा जरूरत हो। अगर मैं न होती, तो आदमी एक महीनेमें ही फिरसे बन्दर बन जाता।"

"यह तो ठीक है" कपडे धोने की मशीन ने अपनी डींग हाँकी, "लेकिन मेरे बिना लोग गन्दे कपडे पहने रहते।"

"यह भी खूब रही। किन कपडों की बात कर रही हो तुम?"

सिलाई की मशीनने व्यंग्य किया। "अगर मैं सिलाई न करती, तो वे पहनते ही क्या? तब मैं देखती कि तुम धुलाई किन कपडों की करती?"

"यह भी कोई बात है? यह भी कोई बात है?" फसल काटने वाली मशीन ने शोर मचाया। "ऐसा वक्त भी था, जब आदमी कपडों के बिना ही जाता था, विशेषकर गर्म देशोंमें ....

मगर भूख को वह ज्यादा देर तक बर्दाश्त नहीं कर सकता। अगर मैं न होती, तो मानव जाती जिन्दा न रह पाती। किसान के हँसिये से तो आदमी गेहूँ की उतनी फसल न काट पाता, जितनी उसे और सारे नगरको चाहिए।"

"अनाज! अनाज का गाना आलापती जा रही हो! दूसरे भोजनका तो जैसे कोई महत्त्व ही न हो कीमा" बनानेवाली मशीन बहसमें शामिल हो गयी। गोश्त क्या रोटी से ज्यादा मजेदार नहीं होता?

"और चाय?," चायकी पत्तियां चुननेवाली मशीन ने विवाद में दखल दिया। "अखबारोंमें ती शायद यह पढ़ा ही होगा-चाय जीवनके लिए अमृत है, स्वास्थ्यका अनुपम स्रोत है। मेरे बिना चायकी पत्तियां चुनना बड़ा मुश्किल है।"

"गउओंको दुहना भी कोई आसान काम नहीं" दूध दुहनेवाली विजली की मशीन ने बुरा मानते हुए कहा। "चायसे दूध ज्यादा फायदे-

नियतकालिक ८७-८८

विजय एस् टिकोळे  
एस्. वाय्. बी. कॉम्.

मन्द है, यह तो सभी एक जमाने से और अखबारों के बिना ही जानते हैं .... "

"आप सबकी बातें सुनकर तो ऐसा सोचा जा सकता है कि आदमी को रोटी और कपडे के सिवा और चीजकी जरूरत ही नहीं" छपाई करनेवाली मशीन बिगड़ उठी। "जैसे मालूम ही न हो कि मान-भिक खुराक जैसी भी कोई चीज होती है। किताबें, पत्र-पत्रिकाएँ समाचार पत्र ... इस मामले में तो आप में से कोई भी मेरी जगह नहीं ले सकती।"

यह सब सुनकर कम्प्यूटर-मशीन अपने को बस में न रख सकी उसने अपने छोटे से मुँहमें से जीभ जैसा लम्बा फीता-सा बाहर फेंक दिया। उस पर लिखा हुआ था:-

"मेरी बड़ी बहनो, आप सभी बेतुकी बातें कर रही हैं। इन्सान-ने आपका और मेरा भी इसीलिए आविष्कार किया है कि हम सब उसकी सेवा करें। अनावश्यक और अनुपयोगी मशीन का तो न कभी किसीने आविष्कार किया है, और न ऐसा आविष्कार किया जायेगा।"

इन शब्दों के साथ ही बहस खत्म हो गयी। लज्जित मशीनें खामोश हो गयीं। अपनी-अपनी जगहों पर वापस चली गयीं और हॉलमें खामोशी छा गयी।

सुबह को लोग जब फिरसे प्रदर्शनी में आये, तो कम्प्यूटरके बुद्धिमत्ता पूर्ण शब्दों की पुष्टि हो गयी-दर्शकों ने एक भी मशीन की अवहेलना नहीं की। वे सभी मानव के लिए उपयोगी और आवश्यक मानी गयीं।



भारी संख्यामें मार डाला है साथ ही साथ अपने सिख लोगों को भी, जैसे संत हरचंदसिंह लोंगोवाल को मौत के घाट उतार दिया। एक और गुट पंजाब में अपना काम कर रहा है, जिसका नाम है 'भिडरां टाइगर फोर्स'। इस संगठन का दिल्ली में घटित हिंसक घटनाओं में हाथ रहा है। और भी कई छोटे-बड़े संगठन हैं जो बहुत सक्रिय हैं।

एक खुशी की बात यह है कि आतंकवाद के विरुद्ध तेजी से काम करने वाले हमारे देश के प्रख्यात पुलिस अधिकारी जूलिओ फ्रांसिस रिबेरो जैसे महान अफसरों को पंजाब में भेजकर एक अच्छा सा कार्य किया है जिसमें सिख लोगों में उत्साह बढ़ने लगा है। उन्होंने

## भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार आजके युग का भयानक समस्या है। बीसवीं शताब्दी में भ्रष्टाचार भयानक रूप से फैला हुआ है। भ्रष्टाचारका अर्थ इंडियन पीनल कोडके अनुसार इस प्रकार है -

"कोई भी व्यक्ति जो सार्वजनिक सेवक होगा, उसे अपने काम के लिए नियमानुसार शासन की ओर से जो वेतन मिलता है, उससे ज्यादा वेतन पानेका कोई भी तरीका भ्रष्टाचार है।"

संपत्ति की अभिलाषा, एवं सर्वोच्च पदमें आकर्षण रखना मानववंश में पुरातन कालसे चलते आया है। इसकी प्राप्ति के लिए मानव पुरातन कालसे हिंसा, कत्ल एवं शस्त्र सामग्री आदि का प्रयोग कर रहा है। लेकिन बीसवीं शताब्दी का मानव सुसंस्कृत माना जाता है। दिन-ब-दिन मानव की समस्याएँ बढ़ती ही जा रही हैं। उन समस्याओंको सुलझाने के लिए सामाजिक भ्रष्टाचार एवं रिश्वत आजके सुसंस्कृत समाज की एक कठिन समस्या है। इससे समाज जीवन नष्ट होने लगा है।

भारत देश में रिश्वत एवं भ्रष्टाचारके बहुत से प्रकरण नित्य निर्माण होते हैं। इसका प्रभाव संपूर्ण मानव जाति, संपूर्ण समाज एवं राजकीय प्रणाली पर पड़ता है। रिश्वत एवं भ्रष्टाचार के प्रकरणों में बहुतेसे उच्च अधिकारी अपना मौल्यवान समय नष्ट करते हैं। इसी कारण विरोधी दल और सत्ताधारी दल इन दोनों में आरोप-प्रत्यारोप जोर-शोर से होते हैं। इस काम में उच्च अधिकारी ही नहीं बल्कि मामूली व्यक्ति भी भ्रष्टाचार को कभी-कभी अपना लेते हैं।

स्वतंत्र भारत उन्नति की ओर बढ़ रहा है और एक तरफ भ्रष्टाचार के पास खिंचा जा रहा है। हर वक्त मानव अपने देश की भलाई के लिए पचास बार अच्छा काम करता है। लेकिन इसी तरह भ्रष्टाचार की ओर भी बढ़ जाता है। इसी तरह समाजके हर गुट में और हर इन्सान के साथ भ्रष्टाचार हो रहा है। देश की भलाई के लिए जो आदमी यह अच्छा काम करना चाहते हैं वहाँ के कुछ आदमी खुदके लिए उस भले काम को भ्रष्टाचार में बदल देते हैं। यानी हर इन्सान स्वार्थ देखता है। दुनिया के हर देश में भ्रष्टाचार बहुत बड़ी तिजारत बन गया है।

अनेक आतंकवादियों के खिलाफ ठोस कदम उठाये हैं जिसके कारण कई आतंकवादी अब तक मारे जा चुके हैं और कई पकड़े जा चुके हैं। हमारे खयालसे वे ऐसेही कार्य करते रहेंगे तो शीघ्र ही आतंकवाद का नामो-निशान मिट जायेगा और यह पाशविक खेल कुछ ही दिनों में समाप्त हो जायेगा फिर पंजाब हँसता गाता लहराता हमें नजर आयेगा। यहाँ हिंदु, मुस्लीम, सिख, इसाई आदि धर्मों के लोग अ पसी मनमुटाव को छोड़ मिलकर रहेंगे तो सही मानेमें अहिंसा के मार्गपर चलनेवाले म. गांधी और खान अब्दुल गफारखान को सच्ची श्रद्धांजली अर्पण होगी और तभी यह गीत मार्थक होगा-

मजहब नहीं सिखाता आपसमें बैर रखना  
हिंदी हैं हम, वतन है हिंदोस्तां हमारा।

झिंकर जो. शोख

एस्. वाय्. वी. ए.

हर तरह का भ्रष्टाचार होता है : आर्थिक भ्रष्टाचार, औद्योगिक भ्रष्टाचार, राजकीय भ्रष्टाचार सामाजिक भ्रष्टाचार आदि लेकिन हर भ्रष्टाचार का मुख्य साधन संपत्ति ही है।

इस युग में जिधर देखो उधर भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है। राजकर्तियों एवं साधारण जनो में संघर्ष चला रहा है। इस भ्रष्टाचार को नष्ट करने के लिए मानवको हर वक्त जाग्रत रहना चाहिए। हर भ्रष्टाचार में रिश्वत एवं दलाली एक व्यापार बन गया है। मंत्री महोदय जनता के सेवक होते हैं लेकिन इन वक्त मंत्री ही इस मामले में हाथ बँटाते पाये जाते हैं। क्या ये जनता के सेवक बनने के काबिल हैं? क्या ये जनता के सेवक बन सकते हैं?

स्व. न. वि. गाडगिल कहते हैं-

"मंत्री ऐसा हो जो कार्यक्षम हो।

उसका कर्तृत्व महान हो, कीर्तिमान हो।

देश भक्त हो, और अच्छा वामक हो।

जो जिम्मेदारी संभाल सके वह सच्चा मंत्री हो सकता है।"

इस भ्रष्टाचारको नष्ट करना हम सबका कर्तव्य है। हर कवि लेखक और भारतके हर सच्चे देशभक्त नागरिक का कर्तव्य है। इनको ऐसा लगता है कि भविष्यकाल में अपने भारत देश का क्या होगा? यह भ्रष्टाचार देश की आजादी को नष्ट कर रहा है। एक ओर आर्थिक प्रगति होती जा रही है और दूसरी तरफ भ्रष्टाचार की समस्या भयानक रूप धारण कर रही है। सत्ता-संपत्ति एवं वरिष्ठ पदोंका केंद्रीकरण विशिष्ट वर्ग के लोगों में नहीं होना चाहिए। वरिष्ठ पदोंका केंद्रीकरण विशिष्ट वर्ग के लोगों में बढ़ जाने से भ्रष्टाचार दलाली एवं रिश्वत लेना-देना कम होने के बजाय और भी बढ़ता जायेगा।

इस लिए प्रत्येक को अब यह प्रतिज्ञा करनी होगी कि स्वयं भ्रष्टाचार तो नहीं करेगा और भ्रष्टाचार करने वालों को भी इस पापसे रोकेगा। इसी प्रकार हर व्यक्ति अपनी ईमानदारी और सच्चाई से रहकर इस भयानक समस्याको नष्ट कर सकता है। वापूजी के स्वप्न का भारत साकार कर सकता है और देश की उन्नति की ओर बढ़ा सकता है।

## किसकी अधिक जरूरत

किसी शहर में एक बार मशीनोंकी प्रदर्शनी हुई। सभी तरह की मशीनें थीं वहाँ! बाल काटने और दाढ़ी बनाने की, धुलाई और सिलाई की, कीमा बनाने तथा चाय बटोरने की .. बहुत लोग देखने आए इस प्रदर्शनी को। आखिर रात हो गयी, नुमाइश के हॉल में बस्तियां बुझ गयीं और खामोशी छा गयी।

शहर ऊपरके बहुत ऊँचाई पर सिर्फ चांद ही जाग रहा था, अंधेरी खिडकियों में झांक रहा था।

तो अचानक क्या देखा चांद ने। इस रात को मशीनें भी नहीं सो रही थीं-वे सब बड़े मण्डप में जमा हो गयी थीं, घेरा बनाकर बहुत जोर-शोर से बहस कर रही थीं।

बाल काटने की मशीनने कहा:

"आप सब बुरा न मानें, लेकिन हमारे बीच दूसरी कोई ऐसी मशीन नहीं है, जिसकी मुझसे ज्यादा जरूरत हो। अगर मैं न होती, तो आदमी एक महीनेमें ही फिरसे बन्दर बन जाता।"

"यह तो ठीक है" कपडे धोने की मशीन ने अपनी डींग हाँकी, "लेकिन मेरे बिना लोग गन्दे कपडे पहने रहते।"

"यह भी खूब रही। किन कपडों की बात कर रही हो तुम?"

सिलाई की मशीनने व्यंग्य किया। "अगर मैं सिलाई न करती, तो वे पहनते ही क्या? तब मैं देखती कि तुम धुलाई किन कपडों की करती?"

"यह भी कोई बात है? यह भी कोई बात है?" फसल काटने वाली मशीन ने शोर मचाया। "ऐसा वक्त भी था, जब आदमी कपडों के बिना ही जाता था, विशेषकर गर्म देशोंमें ...

मगर भूख को वह ज्यादा देर तक बर्दाश्त नहीं कर सकता। अगर मैं न होती, तो मानव जाती जिन्दा न रह पाती। किसान के हँसिये से तो आदमी गेहूँ की उतनी फसल न काट पाता, जितनी उसे और सारे नगरको चाहिए।"

"अनाज! अनाज का गाना आलापती जा रही हो! दूसरे भोजनका तो जैसे कोई महत्व ही न हो कीमा" बनानेवाली मशीन बहसमें शामिल हो गयी। गोश्त क्या रोटी से ज्यादा मजेदार नहीं होता?

"और चाय?.. चायकी पत्तियां चुननेवाली मशीन ने विवाद में दखल दिया। "अखबारोंमें तीशायद यह पढ़ा ही होगा-चाय जीवनके लिए अमृत है, स्वास्थ्यका अनुपम स्रोत है। मेरे बिना चायकी पत्तियां चुनना बड़ा मुश्किल है।"

"गडओंको दुहना भी कोई आसान काम नहीं" दूध दुहनेवाली विजली की मशीन ने बुरा मानते हुए कहा। "चायसे दूध ज्यादा फायदे-

नियतकालिक ८७-८८

मन्द है, यह तो सभी एक जमाने से और अखबारों के बिना ही जानते हैं .....

"आप सबकी बातें सुनकर तो ऐसा सोचा जा सकता है कि आदमी को रोटी और कपडे के सिवा और चीजकी जरूरत ही नहीं" छपाई करनेवाली मशीन बिगड़ उठी। "जैसे मालूम ही न हो कि मान-भिक खुराक जैसी भी कोई चीज होती है। किताबें, पत्र-पत्रिकाएँ समाचार पत्र ... इस मामले में तो आप में से कोई भी मेरी जगह नहीं ले सकती।"

यह सब सुनकर कम्प्यूटर-मशीन अपने को बस में न रख सकी उसने अपने छोटे से मुँहमें से जीभ जैसा लम्बा फीता-सा बाहर फेंक दिया। उस पर लिखा हुआ था:-

"मेरी बड़ी बहनो, आप सभी बेतुकी बातें कर रही हैं। इन्सान-ने आपका और मेरा भी इसीलिए आविष्कार किया है कि हम सब उसकी सेवा करें। अनावश्यक और अनुपयोगी मशीन का तो न कभी किसीने आविष्कार किया है, और न ऐसा आविष्कार किया जायेगा।"

इन शब्दों के साथ ही बहस खत्म हो गयी। लज्जित मशीनें खामोश हो गयीं। अपनी-अपनी जगहों पर वापस चली गयीं और हॉलमें खामोशी छा गयी।

सुबह को लोग जब फिरसे प्रदर्शनी में आये, तो कम्प्यूटरके बुद्धिमत्ता पूर्ण शब्दों की पुष्टि हो गयी-दर्शकों ने एक भी मशीन की अवहेलना नहीं की। वे सभी मानव के लिए उपयोगी और आवश्यक मानी गयीं।



## जुल्फें

खुदका ही चेहरा हमें किसीने दिखा दिया  
हंसी हंसी में हमें पागल बना दिया ।  
लहराती हुई रेशमी जुल्फों ने  
हमारे दिल की धड़कन को बड़ा दिया ।  
नशीली आँखों ने क्या जादू किया  
हमारी जिदगी को दो गुना बढ़ा दिया।  
लिये घूँघट खड़ी थी वो सामने  
लरजते भाव उतरे हुए थे आँखों में ।  
हमें क्या पता कि वो हैं बेगाने  
चंद खुशीके लिए हम हो गये दीवाने ।  
खुदगर्जी का नकाव पहने आयी थी हमें लूटने  
लेकिन हमने अपनी अरमानों को मिटाया झूठे फसाने में  
खो गये अपनी शानो-शौकत में  
ठोकरें खाते रहे बाकी जिदगी में ।

शेख. एस् डी.

एम्. वाय्. बी. एस्सी.

## जीवन संग्राम !

अपनी हस्ती को लेकर, जीना यहाँ हराम है  
हर आजादी. कंद यहाँ मौत की गुलाम है !  
फूल खिलते हैं यहाँ काँटों की पावन्द में  
खूँशबू के फैलने पर भी शायद लगाम है !  
रेगिस्तान प्यासा, पानी के लिए तडप रहा है  
उस समुन्दर को देखो, हर एक बूँद नीलाम है !  
कहाँ जाना था, तकदीर किधर ले आई  
मंजिल अब यहीं, यहीं अब जीवन मकाम है !  
साँस तो चलती है किसी आधार को थामे  
वे जीते तो हैं मगर, रूह उनकी गुमनाम है !  
हर तमन्ना, हर स्वाहिष, जैसे बुझते चिराग की रोशनी  
आशाओं की हर कोशिष, असफल नाकाम है !  
गाली दे तू अपनों को, अधिकार जो है तुझे मिला  
दुनियाँ फिर भी मानती तुझे, दुनियाँ में तू सरनाम है !  
बुबकर सूरज छोड़ जाता जगत् पे अपनी छाप  
अँधेरे में बैठे चाँदपर शायद रोशनी का इल्जाम है !  
क्यों भागे जा रहा तू यूँही डर-डर के जीवन से  
सुख दुख के कुरुक्षेत्र में लड़ना ही जीवन संग्राम है !

सुपेकर जयवंत

एम्. ए. हिंदी (भाग १)

## ENGLISH SECTION

### The Cast system In India

Miss Duriya T. Nasikwala  
S. Y. B. Sc.

The word, 'caste' has been derived from portugeuse term 'casta' meaning 'race', 'creed', or 'lineage'. There are thousands of castes in the world and India has the largest number of castes in the world

what is a caste? A caste is a social group having two characteristics: (i) membership is confined to those who are born of members and including all persons so born: (ii) the members are forbidden by inexorable social law to marry outside the group.

The castes are formed on the basis of occupation, tradition, purity and religious rituals. The caste system is a hierarchy of different castes. The high caste constitutes the people who are at the helm of religious affairs and claim of possessing religious knowledge and rituals. These are at the top of the ladder of the caste system. The upper caste is followed by the castes of the people doing various occupations like trade, farming etc. According to the importance of the different occupations, the different castes are given different positions of statuses in the hierarchy. At the lowest level of this ladder is the low caste comprising the people who carry out menial or scavenging type of work for the others in the society.

The caste system can be compared to a multi-storeyed building having a 'No ENTRY' board on each storey. The caste system is like water-tight compartments, in which the people of one caste are not acceptable in the others. Even if two castes have same origin and similar traditions the people from one caste do not consider the people of other castes as their fellow-beings.

Thus, caste means caste system which means. exclusiveness, hierarchy, fixed order of things, greater regard to the ancestry of a person than to his individual merit, pretension of the purity of blood and feeling superiority and inferiority.

Why did such numerous castes come into existence? There are many factors contributing to the formation of castes in India. The history of castes should be studied from the arrival of Aryans in India. The Aryans fought against the original

inhabitants and dominated them. These aborigines of India were the ancestors of the Dravidians of India. These people were pushed towards the south as the Aryans began holding their sway in the North. The people of two different cultural trends did not mix completely, but largely remained isolated from each other though we learn of some assimilation of two cultures in history. Even in the Aryans there were different clans which fought amongst themselves for political power. Later, these clans formed different castes. But it cannot be said that the different castes are formed by splitting out from one united body.

Numerous tribes which were living in different parts of India existed as different units and after the concept of endogamy was introduced, they did not fuse, but scattered all over the country, because of vast land and rich resources available everywhere. In Europe, the tribes were as those in India, but they fused together. Thus, Europe or America is like a chemical compound of different castes while India is a mechanical mixture.

The caste system became more distinct with the introduction of the 'varna' system. In varna system, the brahmins occupied the highest position and important religious rights were reserved for them. The shudras were given lowest position in the hierarchy. This system continued for centuries. The brahmins became more and more powerful and shudras remained ignorant and submissive. With the Greek and various Muslim invasions more and more people settled in India and as a result more and more castes came into existence.

These various castes had their own rules and every member had to adhere to these rules. Every person who rebelled against the caste rules was ostracized. Such individuals, driven out by various causes, from their native castes quickly formed the nucleus of new groups and formed new castes though the customs and rules remained the same.

The caste system in India has remained strong since ages. This is because the people considered the purity of caste as very important. Any changes in the rules

and regulations of castes were opposed by the orthodox people. Ram Manohar Lohia says "The system of caste is a terrifying force of stability and against change, a force that stabilises all current meanness, dishonour and lie."

Before the advent of European powers in the Indian sub-continent there were numerous small kingdoms in India ruled by the leaders of different religions, sects and clans. The common people were more or less loyal to these rulers. But, even though the rulers changed, the caste feeling remained strong as ever.

When the British government introduced various reforms, the upper classes were quick to take advantage of the opportunities and so formed new intelligentsia and played a great role in national struggle. So, the British government took advantage of this situation and adopted the policy of 'divide and rule'. This policy not only created the feeling of distrust amongst the Hindus and Muslims, but also between Harijans and Hindus. As a result, communalism came into existence. The majority tried to ride roughshod over the minority and the minority did not trust the majority. Hence, communal feelings began to grow.

Our Constitution guarantees equal rights to all and has introduced universal adult franchise. But still this has not done away with religious bigotry, intolerance and casteism. The religion and caste continue to be an important factor in Indian politics. A number of political parties were organised on the religious basis such as the Jana Sangh, Muslim League, Majlis-e-Mushwrat, Akali Dal etc.,

Many political parties take advantage of this situation to secure votes of the lower castes due to their numerical strength by instigating them against other castes. The absence of ideological or class-based in the country, has increased the importance of caste. The illiterate people of India who could not understand politics in terms of class interests are wooed in the name of caste sentiments by various political parties. Caste considerations are always given paramount importance while distributing the tickets for various while distributing the tickets for various positions or while forming ministries. The people of the same caste group always vote for a candidate of their own caste. Thus, caste is a great threat to the national unity in so far as it has encouraged the people to put group loyalties above merit and competence and selfishness above public well-being.

There is also a relationship between class and caste. The upper caste people were often rich and the lower caste were poor and submissive. But, this relationship is

enraging as the lower castes get more opportunities and concessions. For example, the Rajputs of Gujarat (upper class) are marginal farmers or landless farm labourers.

After Independence, the communal violence has increased in our country by many folds. This is because the people have become more and more intolerant and narrow-minded due to lack of proper awareness, education and rational thinking. The people in the South are very proud of their Dravida origin. These sentiments were successfully exploited by Dravida Kazhagam. It even went to the extent of burning the Constitution. The communal tensions between Hindus and Muslims in Ahmedabad, Bhiwandi and Meerut are the gruesome examples of communalism. We also know about Kamma and Reddy conflict in Andhra Pradesh, Lingayat and Okkaliga rift in Karnataka, Brahmins and Maratha and Mahars in Maharashtra etc., In Bihar, the casteism has taken a notorious turn. The enmity between Rajput landlords and Bhumihars has taken many lives. Even after forty years of Independence we have not been able to cultivate the feeling of nationalism amongst our people who are very traditional and fear to break the shackles of casteism.

Many committees and social groups are working for the proper solution to establish harmony among the people of different castes. But, in vain. Inter-caste marriages, participating in each others' festivals and setting up of committees like Kaumi Ekta committees are all superficial. What we need is an internal social change. A change in attitudes, outlook and ideas. We should cease to think narrow-mindedly on every issue and think only in terms of broad national issues and national. The reservation of certain seats should not be taken as a favour conferred on some. It is an opportunity for the depressed class to join the national mainstream.

The government and the other political parties should not take advantage of people's ignorance for purchasing votes. All the religious senas like Hindu sena, muslim sena should be banned. The special reservation should be based on 'class' rather than on 'caste'. The government should strictly follow secularism and stop playing into the hands of religious fundamentalists. Social groups should take steps to restore trust and faith in the minds and hearts of the minority communities. Efforts should be made through constant preaching and persuasion to remove distrust and obscurantism which prevail among the members of various communities.

## India's Foreign Policy

Miss Vaishali J. Shah  
S. Y. B. Sc.

"Foreign policy is the system of activities evolved by communities for changing the behaviour of other states and for adjusting their own activities to the international environment", observed George Modelski. While power is central to foreign policy, idealism has its place in framing of foreign policy. India's foreign policy was directed by foreign rulers for the last two hundred years and India's role in international relations was suited to the interests of Britain.

Independence enabled India to frame and pursue her own foreign policy. And like every independent state she is the captain of her soul and the master of her fate. India's foreign policy, is not only the result of the physical environment but also the product of the traditional values of Indian society and the commitments of the Indian National Movement during the freedom struggle. Her big size has enabled her to pursue an independent foreign policy as it makes conquest difficult.

Climate has also been an adverse factor in India's foreign policy. Extremely uncertain monsoon causing one year and floods the next year, has made for recurring food deficiencies which in turn have forced her to look abroad for food. India does not have a strong self-sufficient economy, though we are heading towards such a goal. Foreign capital and technology are required for various schemes. This forces her to change her policy to suit the needs of the supplier nation.

The basic features of India's foreign policy are non-alignment, anti-imperialism and anti-colonialism, opposition to racial discrimination and faith in peaceful co-existence, co-operation and in the concept of a comity of united nations of the world.

Non-alignment is often mistaken as 'neutrality' which does not convey the real nature of India's foreign policy. India could not align with U.S.S.R. which believed in ideology of violence and revolution because of its liberal traditions. On the other hand, her geographical location (with the Soviet Union and China close to her borders) demanded that she should never the western alliance.

The world balance of power can be established without India being tainted by active participation in it. The traditional attitude of tolerance also impelled India to remain non-aligned. Besides, she can keep her mediatory hands clean for the benefit of the world. She can

be the world's largest mediator without false starts while others prepare the ground and bless her exploitation of it.

India strongly opposes colonialism and imperialism of any kind. She has always shown full sympathy for all those nations and people who are under imperial rule. She has taken up the cause of such people in the United Nations and played an important role in the promotion of decolonisation. She has supported Indonesia, Libya, Tunisia, Algeria, Morocco, the Palestinian Liberation Organisation and so on. She has helped the people of East Pakistan (Bangladesh) to free themselves from the yoke of military regime in Pakistan.

India emphasises the principle of brotherhood of man and opposes all types of discriminations based on race, culture etc. She is the first country to raise her voice against racial discrimination at international level and severely condemns the policy of racial segregation pursued by the government of South Africa. She raised the question of apartheid at the United Nations and brought to notice that its practice not only constitutes a flagrant violation of the U.N. Charter and Declaration of Human Rights but also constitutes a serious threat to world peace. She has all along been the strongest proponent of the idea of applying sanctions against South Africa and has condemned Britain for her refusal to apply them.

India has always tried to promote the idea of co-operation and peaceful co-existence. She has developed intimate relations with China, Nepal, Yugoslavia, Egypt etc. and played a leading role in the evolution of 'Panchsheel' (non-aggression, non-interference in the affairs of others, respect for the others, equality and common peace). Despite Chinese betrayal in 1962 she has persisted in expressing faith in these principles.

India shows a special bias for the countries of Asia in its foreign policy. She has developed close relations with these countries and tries to promote unity among them by organising a number of conferences but never has she tried to create a separate bloc of the Asian nations. She has intimate relations with the Commonwealth even after adopting a Republican constitution because she believes that her membership shall be beneficial in economic and

other spheres. She has great faith in the United Nations Organization and her foreign policy is framed mostly from the U. N. Charter.

India encourages the settlement of disputes through peaceful methods and extends full support to the United Nations' actions in this direction. She has been contributing military and other personnel for implementing the decisions of the United Nations. She played a commendable role during the Korean and Indo-China crises. She also sent a large contingent to preserve peace in Congo.

The basic principles outlined above continued to form the basis of the Indian foreign policy even after the death of Nehru. India's foreign policy in the post-1962 period was characterised by greater pragmatism and realism. The defeat at the hands of China in 1962 convinced the leadership that purely moralistic foreign policy shall not be in the interest of the country and necessary modifications were made in its policy to make it more effective an instrument of national interest.

The emphasis shifted to collective decision-making during the Shastri era. The public involvement in the formulation of foreign policy increased. The process of developing close relations with super powers continued during the period of Mrs. Gandhi. As a result she was able to secure large financial and military assistance from U. S. A.. Also the Indo-Soviet treaty of friendship and co-operation was signed in 1971. This period witnessed a great tilt towards Soviet Union and the policy became more pragmatic.

A drastic change in Indian Foreign policy was expected during the Janata regime in 1977. It developed close relations with Soviet Union without showing in any way a tilt in its favour. The relations with U. S. A. began to cool during this period. The traditional donor-recipient relationship between U. S. A. and India was replaced by an equal partnership based on friendship and common will to cooperate both in bilateral matters and on international issues.

The Janata Government took a number of concrete steps to improve its relations with countries like Bangladesh, Pakistan, Nepal etc., by coming to an understanding regarding some of the outstanding disputes. With the fall of the Janata government, India's foreign policy again reverted back to the pattern prevailing before the formation of the Janata government. The coolness of relations with U. S. A. has given place to more mature relations with the United States of America. The two visits of the Indian prime minister, Rajiv Gandhi symbolize the improvement in relations with the U. S. despite their providing military aid to Pakistan.

The principles and operation of India's foreign policy have been subjected to too much criticism. It has been charged that too much importance has been attached to idealism, even at the cost of national interest. But, the impartial stand taken by India on the various international issues has earned her reputation as an upright country and enabled her to play a dominant role in international politics.

The policy of non-alignment was strongly criticised and interpreted as a clever device to befool both the super-powers. In course of time, this hostility died out, and India has been able to get financial as well as military assistance from both the big powers. The policy of non-alignment has, in no way, hampered the interest of our country, but has served national interest besides enhancing her prestige in international arena.

It is often alleged that the membership of commonwealth has restricted the freedom of action and prevented the country from pursuing an independent foreign policy. This criticism does not stand because India expected no economic benefits from its membership of the Commonwealth. Also, she is free to leave it any time she chooses.

Often it has been alleged that India has completely neglected the vital principle of power in the conduct of international relations and laid more stress on peaceful settlement of international disputes.

In the present circumstances 'power politics' has suffered a setback and it is being realized that power should not be used for solving international issues. The fear of nuclear war has further rendered this principle less operative because even the super powers are heading, now, towards negotiated settlement of disputes. The recently concluded Agreement between U.S. S.R. and the U. S. A. relating to medium-range missiles is a decisive step in this direction.

It cannot be denied that Indian foreign policy has failed to promote and protect national interest. She has failed to resolve the Kashmir and Aksai-chin problems with Pakistan and China, respectively. She has been unable to protect the people of India from the policy of discrimination being pursued by South Africa. The oppression of the people of Indian origin in Sri Lanka and the Indians in Fiji have not been resolved to the satisfaction of the concerned people. Despite these failures the foreign policy of India is best both in idealistic and realistic terms.

## POEMS

### Love and Lovers

Love is a mirror  
Lovers can see in it;  
Love is like a flower;  
Lovers can smell it;  
Love is like water;  
Lovers can drink it;  
But, some times.....  
Love is like a sword,  
Lovers can't touch it;  
Love is like an ocean,  
Lovers can't swim in it;  
Love is like the sun.  
Lovers can't approach it;  
This, the thing called 'love' is,  
And still, love is fine!

Dnyaneshwar K. Kale  
T. Y. B. A.

Dust is lighter than a feather,  
And the wind is more light than either;  
But a woman's fickle mind  
Is lighter than a feather, dust or wind.

Compiled by  
Rajendra Shinde  
S. Y. B. A.

Kashmir is for scenery,  
Madras for culinary,  
Kerala for dance,  
Mysore for romance.

Compiled by  
Prasanna Thombare  
F. Y. B. Sc.

## The Static Shadow

when in the evening  
I stand alone  
At the window,  
Like a phantom  
In the twilight  
Your shadow  
Flexible, eternal, mysterious—  
Itself before me projects—  
And.....  
I hear the soft rustle  
Abruptly.  
Your static shadow  
In the darkness is reflected  
And then, scatters.....  
But.....  
It excites my mind  
It inspires me ;  
It always inspires me.

Sandeep Subhedar  
T. Y. B. A.

Ahmedabad is for mills,  
Nagaland for hills,  
Bombay for beauty,  
Delhi for majesty.  
Uttarpradesh is for Prime-minister,  
Rajasthan for heroism,  
Bengal for writing,  
Punjab for chivalry,  
Bihar is for mines,  
Himachal for snow,  
Gujrat for wealth,  
Madhyapradesh for health,  
Andhra is for hand-writing,  
Maharashtra for education.

Compiled by  
Prasanna Thombare  
F. Y. B. Sc.

## कार्यवृत्तांत

जिनखाना -

या वर्षी आमच्या महाविद्यालयाच्या विविध आंतरमहाविद्यालयीन स्पर्धांमध्ये मुलांच्या १३ संघांनी, तर मुलींच्या ५ संघांनी भाग घेतला. यापैकी मुलांचे ६ संघ व मुलींचे ३ संघ विजयी, तर मुलांचे २ संघ व मुलींचा एक संघ उपविजयी झाले. यावर्षी महाविद्यालयाने आंतरमहाविद्यालयीन वॉडमिंटन ( मुले-मुली ) मल्लखांब, वजन उचलणे व क्रिकेट ( मुली ) या स्पर्धांचे यशस्वी संयोजन केले आहे.

१) बुद्धिवळ-५खेळाडू विजयी पैकी २ खेळाडूंची विभागीय स्पर्धेसाठी निवड. २) टेबल टेनिस-४ खेळाडू विजयी, पैकी विभागीय स्पर्धेसाठी ३ खेळाडूंची निवड. ३) वास्केट बॉल ( मुले )- १२ उपविजयी व ४ खेळाडूंची विभागीय स्पर्धेसाठी निवड. ४) वास्केटबॉल ( मुली )- १ खेळाडू उपविजयी व १ खेळाडूंची विभागीय स्पर्धेसाठी निवड. ५) कबड्डी ( मुले )- ११ खेळाडू उपविजयी, पैकी ४ खेळाडूंची विभागीय स्पर्धेसाठी निवड व १ खेळाडूंची विद्यापीठ स्पर्धेसाठी निवड. ६) व्हालीबॉल ( मुले )- ११ पैकी १ खेळाडूंची विभागीय स्पर्धेसाठी निवड. ७) मल्लखांब- ५ खेळाडू विजयी, पैकी ४ खेळाडूंची विभागीय स्पर्धेसाठी निवड. ८) शरीर सौष्ठव व वजन उचलणे- ६ खेळाडू पैकी ३ खेळाडूंची विभागीय स्पर्धेसाठी निवड व १ खेळाडूंची विद्यापीठ स्पर्धेसाठी निवड. ९) कुस्ती- १३ खेळाडू पैकी १ खेळाडूंची विभागीय स्पर्धेसाठी निवड. १०) खो-खो ( मुले )- १२ खेळाडू विजयी पैकी ६ खेळाडूंची विभागीय स्पर्धेसाठी निवड व १ खेळाडूंची विद्यापीठ स्पर्धेसाठी निवड. ११) क्रिकेट ( मुले )- १६ खेळाडू विजयी पैकी ९ खेळाडूंची विभागीय स्पर्धेसाठी निवड व १ खेळाडूंची विद्यापीठ स्पर्धेसाठी निवड. १२) क्रिकेट ( मुली )- १२ खेळाडू विजयी, पैकी १२ खेळाडूंची विभागीय स्पर्धेसाठी निवड व ३ खेळाडूंची विद्यापीठ स्पर्धेसाठी निवड. १३) व्हालीबॉल ( मुली )- ७ खेळाडू विजयी, पैकी ५ खेळाडूंची वि. स्प निवड व १ खेळाडूंची विद्यापीठ स्पर्धेसाठी निवड. १४) वॉडमिंटन ( मुले )- ४ खेळाडू विजयी, पैकी ४ खेळाडूंची विभागीय स्पर्धेसाठी निवड. १५) वॉडमिंटन ( मुली )- ४ खेळाडू विजयी व त्यांची विभागीय स्पर्धेसाठी निवड. व त्यातील १ खेळाडूंची विद्यापीठ स्पर्धेसाठी निवड. १६) मैदानी स्पर्धा ( मुले )- ७ खेळाडू पैकी १ खेळाडूंची विभागीय स्पर्धेसाठी निवड. १७) हॅण्डबॉल - १२ खेळाडू पैकी १ खेळाडू विभागीय स्पर्धेसाठी निवड. १८) मैदानी स्पर्धा ( मुली )- ५ खेळाडू पैकी १ विभागीय स्पर्धेसाठी निवड.

यावर्षी पुणे विद्यापीठातर्फे झालेल्या अखिल भारतीय आंतर विद्यापीठ स्पर्धेसाठी एकूण ९ खेळाडू विविध क्रीडा स्पर्धांसाठी निवडण्यात आले हा या वर्षीचा एक उच्चांक आहे. या नऊ खेळाडूंची नावे, खेळ व खेळांचे ठिकाण खालीलप्रमाणे-

(१) श्री. भरत भुजवळ खो-खो नवसारी ( गुजरात )  
व वाराणसी

नियतकालिक ८७-८८

|                       |             |           |
|-----------------------|-------------|-----------|
| (२) श्री. अनिल सातव   | कबड्डी      | कोल्हापूर |
| (३) श्री. दीपक गुजर   | क्रिकेट     | मद्रास    |
| (४) श्री. सुभाष झगडे  | शरीर सौष्ठव | भुवनेश्वर |
| (५) कु. वर्षा शहा     | व्हालीबॉल   | धारवाड    |
| (६) कु. मनिषा जाधव    | वॉडमिंटन    | नागपूर    |
| (७) कु. सौदामिनी गोरे | क्रिकेट     | अमृतसर    |
| (८) क. वसुंधरा शहा    | क्रिकेट     | अमृतसर    |
| (९) कु. आशा सातव      | क्रिकेट     | अमृतसर    |

वरील सर्व खेळाडूंचे हादिक अभिनंदन!

प्रा. अ. अ. से. मेहेर  
फिजिकल डायरेक्टर

### ग्रंथालय विभाग-

महाविद्यालयाच्या ग्रंथालयात १९८७-८८ या शैक्षणिक वर्षात विविध अंगांनी खालीलप्रमाणे विकासात भर पडलेली आहे.

|              |        |                    |              |
|--------------|--------|--------------------|--------------|
| एकूण ग्रंथ   | ६८,१३७ | किंमत-रु           | १३,५४,१५४-३९ |
| नियतकालिके   | २२०    | भेटीदाखल किंमत-रु. | ११,०००-००    |
| वर्तमानपत्रे | १५     | किंमत-रु.          | ४,२०१-३०     |

१९८७-८८ या वर्षातील नवीन भर-

| ग्रंथ                                | किंमत रु.      |
|--------------------------------------|----------------|
| वरिष्ठ महाविद्यालय                   | ११३७ ४०,३४१-८० |
| कनिष्ठ महाविद्यालय                   | ८७६ १४,८३६-७०  |
| यू. जी. सी. बेसिक ग्रॅन्ट            | ४०४ १८,०८७-६५  |
| कोहसिप ग्रॅन्ट                       | ४५४ २५,६९२-७३  |
| अंडर ग्रॅज्युएट रु. १६,०००/-         | ३६१ २७,८४५-४२  |
| स्पेशल असिस्टंट ग्रॅन्ट रु. २५,०००/- | २९२ २५,०००-००  |

ग्रंथ पेढी  
सन १९८७-८८ या शैक्षणिक वर्षात ग्रंथ पेढीतुन ग्रंथाचे वाटप खालील प्रमाणे केले.

|                         |            |
|-------------------------|------------|
| वरिष्ठ महाविद्यालय: २८६ | विद्यार्थी |
| कनिष्ठ महाविद्यालय: २८१ | विद्यार्थी |

अभ्यासिका  
✓ विद्यार्थ्यांसाठी रात्री ८-०० वाजेपर्यंत अभ्यासिकेची सोय उपलब्ध आहे.

विशेष वैशिष्ट्ये

- ✓ १) विविध स्पर्धा परीक्षा, प्रवेश परीक्षा इ. साठी आवश्यक ग्रंथांची उपलब्धता.
- ✓ २) औद्योगिक क्षेत्रातील विविध लहान आणि मोठे कारखाने स्थापन्यासाठी आवश्यक असणारे मार्गदर्शक ग्रंथ.
- ✓ ३) वेल्डींग, फिटिंग, पाकशास्त्र, योगाव्याय, आरोग्य, आहार,

वागकाम इ. विषयवरचे ग्रंथ उपलब्ध.

ग्रंथाची देणगी

खालील व्यक्ती आणि संस्था यांनी ग्रंथ भेटीदाखल दिले आहेत.  
व्यक्ति :- प्राचार्य, डॉ. जे. के. गोधा, प्रा. एम्. ई. काळे (श्रीरामपूर)  
श्री. एस्. एन. पाटील, श्री. के. एस्. शहा (मुंबई) श्री. अविनाश  
शाळीग्राम (पुणे), सी. शरयु दफतरी (मुंबई), श्रीमती कुमुदिनीबाई  
गोविंदजी दोशी (मुंबई), श्री. विजयराव बोरावके (फलटण), श्री. के.  
के. बिलौ (कलकत्ता), प्रा. बोद्रे एस्. जी., प्रा. के. वी. नाईकवडी  
(संगमनेर), श्री. मोतीचंद फुलचंद शहा (बारामती)

संस्था- समाज शिक्षण माला, पुणे, पुणे विद्यापीठ, टॅक्सेशन नई  
दिल्ली, विश्वकल्याण प्रकाशन ट्रस्ट सोलापूर, शिक्षण संचालनालय  
पुणे, फडके प्रकाशन पुणे, श्रुत भांडार व ग्रंथ प्रकाशन समिती फलटण  
व्यवस्थापक बालचंद इंडस्ट्रीज कन्स्ट्रक्शन हाऊस मुंबई, नरेंद्र प्रका-  
शन पुणे, जीवन जागृती केंद्र पुणे, इंडियन कौन्सिल ऑफ सोशल  
सायन्स रिसर्च, नई दिल्ली, विद्यापीठ अनुदान मंडळ, दिल्ली.

श्री. एस्. एन्. पाटील  
ग्रंथपाल

राष्ट्रीय सेवा योजना -

विद्यार्थी-संख्या : २००

- १) १५ ऑगस्ट १९८७: उद्घाटन व वृक्षारोपण मा. श्री. जंबुकुमार शहा (सराफ)
- २) वन्हाणपुर, तांडुळवाडी, पवईमाळ, मळद ही खेडी दत्तक घेतली. या गांवातून स्वच्छता, आरोग्यविषयक माहिती, वृक्षारोपण, ऊर्जा-विषयक माहिती देणारी व्याख्याने आयोजिली.
- ३) वडकेनगर, मूकबधिर संस्था, महिलाश्रम, बालसुधार गृह, औद्योगिक वसाहत, आंबेडकर वसतिगृह इत्यादी वस्त्या व संस्था दत्तक घेण्यात आल्या, त्या ठिकाणी वृक्षारोपण व विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम घेण्यात आले.
- ४) दि. २४-६-८७ ते दि. ३-७-८७ पर्यंत दहा दिवसांचे उन्हाळी शिवीर पवईमाळ येथे घेण्यात आले. या शिवीराचे उद्घाटन मा. ए. एम्. पिसाळ, कार्यकारी संचालक, माळेगांव सहकारी साखर कारखाना, यांच्या अध्यक्षतेखाली व श्री. गु. सा. ढवाण-पाटील, उपाध्यक्ष: बारामती नगरपरिषद यांचे हस्ते झाले.

या शिविरात श्रमदान, आरोग्य तपासणी, वृक्षारोपण, पशु-संवर्धन, कुक्कुट पालन, फलोत्पादन, मृदुसंधारण आणि विविध कार्यक्रम व व्याख्याने झाली. शिवाय विविध प्रकारचे सांस्कृतिक कार्यक्रम झाले. हुंडावंदी, आंतरजातीय विवाह, अंधश्रद्धा, राष्ट्रीय एकात्मता या विषयांवर चर्चा झाल्या. या शिविरास पुढील मान्य-वरांनी भेटी देऊन माहिती घेतली व मार्गदर्शन केले. मा. अप्पासाहेब पवार, मा. डॉ. खांडेकर (उपसंचालक: पशुसंवर्धन खाते) माहिती व प्रसिद्धी अधिकारी श्री. ए. ए. देशपांडे, श्री. भोर, श्री. प्र. ज. यादव डॉ. सुधाताई कोठारी, प्रा. लोडे, डॉ. व. मा. कोठारी, डॉ. व्ही. एन्. दोशी इत्यादी.

- ५) वडकेनगर येथे आरोग्य निदान शिवीर घेतले.
- ६) शहरांतील विविध वस्त्या स्वच्छ करण्यात आल्या.
- ७) दि. २४-१-८८ रोजी वन्हाणपुर येथे व दि. ६-३-८८ रोजी पवईमाळ येथे एका दिवसाची शिवीरे घेतली.
- ८) या शिवाय पुढील उपक्रम हाती घेतले होते. रक्तदान, सांस्कृतिक कार्यक्रम, महिलांसाठी विविध उपक्रम, साक्षरता प्रसार, सांस्कृतिक कार्यक्रम या सारखे कार्यक्रम आयोजित करण्यात आले होते
- ९) मुंबई विद्यापीठाच्या राष्ट्रीय सेवा योजनेत प्रशिक्षण घेण्यासाठी कु. कल्पना लक्ष्मण लाकुळे या विद्यार्थिनीची निवड झाली होती.
- १०) दि. १५ जानेवारी ८८ रोजी रा. से. योजना दिवस साजरा करण्यात आला. विद्यार्थी-विद्यार्थिनींना राष्ट्रीय एकात्मतेची शपथ देण्यात आली व 'रा. से. योजनेतील विद्यार्थ्यांची सामाजिक बांधिलकी' या विषयावर डॉ. के. एम्. सुर्वे ह्यांचे व्याख्यान झाले.

या वर्षी श्री. भीमराव अडसूळ, श्री. बाबासो ढोबळे, श्री. प्रदीप परकाळे, श्री. बाळू जाधव, कु. कल्पना लाकुळे, कु. भोसले, कु. भुसे, कु. सुपेकर ह्यांनी गटप्रमुख म्हणून काम केले.

समितीतील प्रा. वड्डे, प्रा. खाडे, प्रा. सावळकर, प्रा. जगताप, प्रा. पी. आर. पाटील, प्रा. कु. एन्. के. शहा यांचे उत्तम सहकार्य लाभले. कार्यकारी अधिकारी प्रा. के. एम्. जाधव प्रा. डॉ. एस. बी. खरोसेकर

नियतकालिक ८७-८८

शाळा-महाविद्यालय समूह योजना

१९८७ ८८ या वर्षात एकूण पंचवीस शाळांना या योजनेत सहभागी करून घेण्यात आले. या योजनेच्या अंतर्गत पुढील विषयांची चर्चा-चर्चे आयोजित करण्यात आली होती.

१) गणि - दि. ५-१२-८७ साखरवाडी येथील शिक्षक श्री आर. एम्. येवळे त्यांचे मार्गदर्शन लाभले. तसेच रामनृजन जन्मशताब्दी-निमित्त डॉ. पी. डी. वावरे यांचे उद्बोधक व्याख्यान झाले.

२) इंग्रजी - दि. १६-१-८८ रोजी इंग्रजी विषयाचे शिक्षक व प्राध्यापकांसाठी प्रा. के. डी. गायकवाड आझाद कॉलेज ऑफ एज्युकेशन सातारा यांचे मार्गदर्शनपर व्याख्यान झाले. याशिवाय निरनिराळ्या विषयांच्या प्राध्यापकांनी मार्गदर्शनपर व्याख्याने दिली -

- १) प्रा. डी. बी. जगताप : इतिहास, पणदरे
- २) प्रा. बी. वी. पाटील: व्यवसाय मार्गदर्शन व दहावी नंतरचे अभ्यासक्रमावर पणदरे, भिगवण व शिवनगर येथील हायस्कूल-मध्ये दिली.
- ३) प्रा. पी. वी. इंगवले, इतिहास, शिवनगर
- ४) प्रा. आर्. एस्. पाटसकर, इंग्रजी, बोरी

प्रा. एम्. डी. भगत. प्रमुख

अस्मिता दर्शन

यावर्षी बहुसंख्य विद्यार्थ्यांनी विविध प्रकारचे साहित्य देऊन 'अस्मितादर्शन' या भित्तिपत्रकाला उत्तम प्रतिसाद दिला मिळालेल्या साहित्यामध्ये विशेषतः प्रेम कवितांचे प्रमाण जास्त होते. परंतु, विद्या-थिनींचा सहभाग नव्हता. विद्यार्थ्यांकडून आलेल्या साहित्याची निवड करून योग्य प्रकारचे साहित्य दर महिन्याच्या १ व १५ तारखेस बोर्डावर लावले जात होते.

प्रा. व्ही. वी. परकाळे प्रमुख

कविवर्य मोरोपंत वाद व वक्तृत्व स्पर्धा-

सदर स्पर्धा आपल्या महाविद्यालयात दि. २६ व २७ फेब्रुवारी १९८८ रोजी संपन्न झाल्या. या स्पर्धेत वादासाठी एकूण ९ महा-विद्यालयाच्या १८ विद्यार्थ्यांनी भाग घेतला होता, तर वक्तृत्व स्पर्धेत एकूण २३ विद्यार्थी सहभागी झाले होते.

या वक्तृत्व स्पर्धांचे उद्घाटन बारामती नगरपरिषदेचे उपाध्यक्ष श्री गुलाबराव साहेबराव ढवाण - पाटील यांच्या शुभहस्ते व श्री मोतीचंद फुलचंद शहा मुंबईकर यांच्या अध्यक्षतेखाली झाले.

प्रारंभी वाद विषयावर स्पर्धा झाल्या. यासाठी "आपण लोक-शाही रावविण्यास अपात्र आहोत" हा प्रस्ताव चर्चेसाठी ठेवला होता. "We are not fit for Democracy" तर वक्तृत्व स्पर्धेसाठी -

- १) मोरोपंतांचे टीकाकार
- २) मोरोपंतांचे मंत्र भागवत
- ३) कर्मवीर डॉ. भाऊराव पाटील यांचे शैक्षणिक तत्त्वज्ञान
- ४) सरदार वल्लभभाई पटेल : एक राजकीय मुत्सद्दी
- ५) दूरदर्शन : एक मूल्यमापन
- ६) सती प्रथेचे उदात्तीकरण- समाजजीवनावरील एक कलंक

राष्ट्रीय छात्रसेना १९८७-१९८८

- १) प्रवेश - १९८७-८८ या शैक्षणिक वर्षात १६२ छात्रांच्या पूर्ण कंपनीला वटालियन कडून अनुमती.
- २) वर्षातील कोर्सची व्यवस्था - २ महाराष्ट्र वटालियन कमांडर साहेबांचे कडून मिळालेल्या ट्रेनिंगच्या कार्यक्रमाप्रमाणे दर रविवारी नियमित ट्रेनिंग, ड्रिल, वेपन ट्रेनिंग, मॅपरिडिंग, फील्डक्राफ्ट, सेवशन लिडींग, बॅटलक्राफ्ट, सिव्हिल डिफेंस वृक्षारोपण व संवर्धन, रक्तदान शिवीर, समाजसेवा, दत्तक खेडे योजना, साक्षरता मोहिम इ.

| अ. नं. | अॅक्टिव्हिटी                  | ठिकाण                             | कालावधी                      | सहभागी छात्रसैनिक  |
|--------|-------------------------------|-----------------------------------|------------------------------|--|
| १)     | श्री. आर. डी. कॅम्प           | कोल्हापूर                         | १२ मे ८७ ते २३ मे ८७         | १) ज्युनियर अंडर ऑफिसर - गोळे ए. एम्.<br>२) सार्जंट - भागवत एम्. व्ही.<br>३) सार्जंट - गदादे एस. एम्.<br>४) कार्पोरल - तावरे टी. जे. |
| २)     | ऑल इंडिया ट्रेनिंग कॅम्प      | हृषिकेश                           | ७ जून ते १६ जून ८७           | १) सार्जंट - गदादे एस. एम्.<br>२) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.   |
| ३)     | ऑल इंडिया बेसिक लीडरशिप कॅम्प | कृष्णानगर                         | १६ जून १ ते जुलै ८७          | १) ज्युनियर अंडर ऑफिसर - चांदगुडे एच. डी.<br>२) कार्पोरल - काकडे डी. ए.  |
| ४)     | ऑल इंडिया समर ट्रेनिंग कॅम्प  | कुलूमनाली                         | ३ ऑगस्ट ते २३ ऑगस्ट ८७       | १) ज्युनियर अंडर ऑफिसर - गोळे ए. एम्.<br>२) सार्जंट - आहूजा पी. एम्.   |
| ५)     | आर्मी अॅटॅचमेंट कॅम्प         | अहमदनगर                           | १५ ऑगस्ट ८७                  | १) ज्युनियर अंडर ऑफिसर - सावंत एम्. पी.<br>२) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.   |
| ६)     | स्वातंत्र्यदिन मानवंदना       | कॉलेज ग्राऊंड                     | १५ ऑगस्ट ८७                  | १) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.<br>२) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.   |
| ७)     | वृक्षारोपण                    | कॉलेज क्रीडागण                    | १५ ऑगस्ट ८७                  | १) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.<br>२) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.   |
| ८)     | सायकल सफर                     | १) पुणे                           | १२ एप्रिल ते १५ एप्रिल ८७    | १) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.<br>२) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.   |
| ९)     | वार्षिक प्रशिक्षण शिवीर       | २) शिर्डी                         | ८ नोव्हें. ते १२ नोव्हें. ८७ | १) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.<br>२) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.   |
| १०)    | प्रजासत्ताक दिन मानवंदना      | दौंड                              | २६ नोव्हें. ते १ डिसें. ८७   | १) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.<br>२) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.   |
|        |                               | कॉलेज ग्राऊंड                     | २६ जानेवारी ८८               | १) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.<br>२) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.   |
| ११)    | फायरिंग                       | वारामती                           | ९ फेब्रुवारी ८८              | १) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.<br>२) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.   |
| १२)    | वरिष्ठांच्या भेटी             | वारामती                           | ९ फेब्रुवारी ८८              | १) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.<br>२) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.   |
| १३)    | परीक्षा निकाल                 | 'बी' सर्टिफिकेट                   | २४ वसले                      | १) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.<br>२) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.   |
|        |                               | 'सी' सर्टिफिकेट                   | ८ वसले                       | १) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.<br>२) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.   |
| १४)    | सामूहिक बक्षिसे               | (१) धावण्याची शर्यत २ रा क्रमांक  | १४ पास झाले                  | १) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.<br>२) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.   |
|        |                               | (३) ड्रिल कॉम्पिटिशन १ ला क्रमांक | २ पास झाले                   | १) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.<br>२) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.   |
|        |                               | (२) बायोनेट फायटिंग १ ला क्रमांक  |                              | १) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.<br>२) सार्जंट - चांदगुडे एच. डी.   |

लेफ्टनंट, एम्. व्ही. गोडसे प्रमुख

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती

हे विषय होते.  
दरवर्षी प्रमाणे शेवटी उत्स्फूर्त स्पर्धाही ठेवण्यात आल्या होत्या.  
या स्पर्धेत १५ विद्यार्थ्यांनी भाग घेतला होता. परीक्षक म्हणून प्रा.  
डॉ. प्र. ना. दीक्षित व सौ. विजया सस्ते यांनी काम पाहिले.  
स्पर्धेत वादाचे पहिले पारितोषिक आय. एल्. लॉ कॉलेज, पुणे  
येथील विद्यार्थी श्री. उपेन्द्र खरे यांना मिळाले. त्यांचे सहकारी श्री.  
सुरेन्द्र जोशी यांना दुसरे पारितोषिक विभागून मिळाले व वाद स्पर्धेची  
ढाल आय. एल्. एस्. लॉ. कॉलेज पुणे या संघास मिळाली. वादाचे  
दुसरे विभागलेले पारितोषिक श्री. पाटसकर एस्. एस्. गरवारे कॉलेज  
पुणे यांना मिळाले. वक्तृत्व स्पर्धेतही श्री उपेन्द्र खरे यांनाच प्रथम  
पारितोषिक व वक्तृत्व स्पर्धेची ढाल मिळाली.  
पारितोषिक वितरण समारंभ श्री विनोदकुमार गुजर, नगरा-  
ध्यक्ष वारामती नगरपरिषद यांच्या वृत्तबहस्ते व श्री. मोतीचंद फुलचंद  
शहा सुवर्द्धकर यांच्या अध्यक्षतेखाली पार पडला.  
प्रा. डॉ. दयाराम पाटील-कार्याध्यक्ष

### कविसंमेलन

दि. २९-९-८७ रोजी महाविद्यालयात नवोदित कवींच्या  
काव्यवाचन-गायन याचा कार्यक्रम 'काव्यसंध्या' आयोजित करण्यात  
आला होता. या कार्यक्रमात अनेक नवोदित कवींनी आपल्या कविता  
सादर केल्या. प्रारंभी सरस्वती पूजन होऊन सा. स्फूर्तीचे संपादक श्री  
अनिल गळंडे यांच्या हस्ते कार्यक्रमाचे उद्घाटन झाले.  
प्राचार्य डॉ. जे. के. गोधा यांनी नवोदित कवींना मार्गदर्शन केले.  
या कार्यक्रमाचे संयोजन श्री संदीप सुभेदार, कु. ज्योती मरकळे  
सर्वथी कल्याण देवकाते, महेंद्र माळवे, सुनील खडके, विनय आचार्य  
अवधुत कुलकर्णी, जयवंत सुपेकर, नितीनकुमार शेंडे यांनी उत्तम  
प्रकारे केले होते.

### स्नेह संमेलन-

या वर्षी वरिष्ठ महाविद्यालयाचे स्नेहसंमेलन दि १०-११-  
१२ जानेवारी १९८८ रोजी अत्यंत उत्साहाने साजरे झाले. विद्यार्थी  
विद्यार्थिनींनी विविध प्रकाराचे सांस्कृतिक कार्यक्रम सादर केले. तसेच  
वातमीपत्र व फिशपांड वाचन व अल्पोपहार हे कार्यक्रम झाले. आर्कराचा  
बहारदार कार्यक्रम झाला. याशिवाय फनिगेम्स, फनफेअर, रांगोळी  
प्रदर्शन हे कार्यक्रमही आयोजित करण्यात आले होते. एकंदरीत तीन  
दिवसांचा हा सोहळा खेळीभेळीच्या वातावरणात पार पडला.  
प्रा. आर. जी. पाटील-प्रमुख

### विद्यार्थ्यांचे विशेष नेपुण्य

- १) कु. शेख वकीला अब्बास: पुणे जिल्हा कवडूडी पंच-परीक्षा उत्तीर्ण  
सप्टेंबर: १९८७
- २) श्री. दिनेश मधुकर सरोदे: वारामती येथील शरीर सौष्ठव  
स्पर्धेत प्रथम क्रमांक व 'वारामती श्री' हा बहुमान दि. २८-२-८८
- ३) श्री. संजय लक्ष्मणराव शितोळे: पुणे जिल्हा कवडूडी पंच परीक्षा  
उत्तीर्ण प्रथम श्रेणी: सप्टेंबर १९८७
- ४) श्री. अविनाश अरविंद साळवी: अ) दि. २५-१२-८७ सायं ६-२० वा.  
टी व्ही. ६-२५ आकाशवाणीवर सामूहिक गीतांच्या कार्यक्रमात सहभाग.  
ब) वी. डी. एम्. चर्चा पुणे येथील समूहगीत स्पर्धेत सहभाग
- ५) श्री सुनील शांताराम खडके: प्रांती. काव्यसंग्रह 'काव्यसागर'-  
(संपा. डी. आर- रंगारी: अंजली प्रका. पंचशीलनगर परभणी)

यात 'आयुष्य' ही कविता समाविष्ट.  
प्राध्यापकांचे शैक्षणिक उपक्रम -  
वरिष्ठ महाविद्यालय -

- १) प्रा. आर. एम्. मिसाल - 'दि महाराष्ट्र को-ऑपरेटिव क्वार्टर  
यानियतकालिकाच्या ऑक्टोबर १९८७ च्या अंकात Social  
Economic Development through Co-operation A  
Case Study of the Malegaon Co-Op.Sugar factory  
Ltd; Shivnagar ( Tal. Baramati Dist Pune ) हा  
लेख प्रकाशित झाला.
- २) प्रा. डी. वी. जगताप - अ) 'वारामती शहराचा विकास  
(१८५७ ते १९२०) इतिहास स्मरणिकेत हा लेख प्रकाशित झाला.  
ब) १८५० पासूनचे शहरीकरणसंबंधीचे विविध बाबदे इतिहास  
अध्यापक परिषद दि. २८/१२/८७
- ३) प्रा. पी. डी. फरसोले - कर्नाटक विद्यापीठ धारवाड येथील  
IUCBER & IAMD १८ व्या वार्षिक परिषदेत ( दि. १  
११ नोव्हें. ८७ ) 'Changing Environment and Stratatig  
Management' हा निबंध सादर.
- ४) प्रा. डॉ. व्ही. व्ही. आचार्य - अ) मराठी अर्थशास्त्र परिषद  
सातारा येथे 'अर्थशास्त्र अध्यापनातील समस्या' या विषयावर  
निबंध सादर. (ब) या महाविद्यालयातील 'कोहसिप' चर्चा  
( दि. २९ व ३० जून ८७ ) सहभाग
- ५) प्रा. एस्. जी. वॉद्रे - दि. २९ व ३० जून ८७ 'कोहसिप' चर्चा  
सत्रात 'अर्थशास्त्र विषय अध्यापनात द्रक्थाव्य साधनांचा वापर  
या विषयावर निबंध सादर.
- ६) प्रा. ए. व्ही. इंगळे - जी. एस्. कॉलेज, वर्धा येथे 'कल्पयुग  
मार्केट' या विषयावर निबंध सादर दि. १४-५-८७
- ७) (अ) प्रा. एम्. पी. कदम  
मराठी समाजशास्त्र परिषद पैठण येथे 'A Comparat  
tive study of Dr. Ambedkar and Mahatma Gandhi  
on caste (ब) वारामती येथील पुणे विद्यापीठ संचालित इतिहास  
हास परिषदेत ( डिसेंबर १९८७ ) 'Pandit Nehru, Muslim  
League and partition of India.
- ८) प्रा. डॉ. के. एम्. सुर्वे - (अ) दादा पाटील महाविद्यालय, कर्ना  
येथील हिंदी पाठ्यक्रम चर्चासत्राचे उद्घाटन व समारोप प्रसंगी  
अध्यक्ष व प्रमुख अतिथी तसेच चर्चेत सहभाग. दि. १७-१-८८  
दि. २५-६-८७ ते २६-६-८७ या महाविद्यालयात 'कोहसिप'  
अंतर्गत हिंदी चर्चासत्राचे संयोजन: विषय १९७५ से १९८७ पर्यंत  
की हिंदी कहानी'
- ९) प्रा. एस्. एम्. देवकुळे-शोध निबंध- Pharmacognostic stud  
dies on Wagatea Splcata Dalzell" Ancient Science L  
June 1987 या अंकात 2) "Pharmacognostic Studies  
bark of Gnidia glauca Gilg"- "Deerghaya" Internat  
nal, Feb 88 या अंकात 3) "Alysicarpus Longifolices  
A.-A Substitute for Liquorice" ७५ वी भारतीय  
परिषद, पुणे येथे ७ ते १२ जानेवारी ८८ रोजी निबंध वाचन.  
4) सहलेखक- एस्. वायू. वी. एस्सी. साठी वॉटनी क्रमिक पुस्तक  
5) "Pharmacognostic Studies on Papilionacac  
विषयावर पुणे विद्यापीठास एप्रिल ८८ मध्ये प्रबंध सादर.

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, वारामती

### रुची विभाग -

एप्रिल १९८७ मध्ये झालेल्या परीक्षांमध्ये प्रथम श्रेणीत उत्तीर्ण  
झालेल्या विद्यार्थ्यांची गुणानुक्रमे सूची

| क्र. सं. | नांव                       | विषय           |
|----------|----------------------------|----------------|
| १)       | कु. रणवरे सुचिता गुलाबराव  | मानसशास्त्र    |
| २)       | कु. मोरे नंदा किसनराव      | समाजशास्त्र    |
| ३)       | जाधव रमेश देविदास          | भूगोल          |
| ४)       | नाळे विजया नारायण          | समाजशास्त्र    |
| ५)       | जाचक जालिंदर मारुती        | भूगोल          |
| ६)       | दुग्गुम मंजू विठ्ठलराव     | मानसशास्त्र    |
| ७)       | बुसंगले दिलीपकुमार रोहिदास | मानसशास्त्र    |
| ८)       | भित्ते पोपट दगडू           | भूगोल          |
| ९)       | कदम आनंदराव साहेबराव       | राज्यशास्त्र   |
| १०)      | खलाटे दत्तात्रय नानासाहेब  | समाजशास्त्र    |
| ११)      | फरतडे लक्ष्मण निवृत्ती     | हिंदा          |
| १२)      | सोनवणे काशिनाथ संतराम      | भूगोल          |
| १३)      | वनकर अशोक नामदेव           | इतिहास         |
| १४)      | झगडे कल्पना महादेव         | समाजशास्त्र    |
| १५)      | किर्णगे किरण अण्णासाहेब    | समाजशास्त्र    |
| १६)      | लांडगे नाना नारायण         | संरक्षणशास्त्र |
| १७)      | रासकर सुरेश दत्तात्रय      | मानसशास्त्र    |
| १८)      | देवकर लता शामराव           | मराठी          |
| १९)      | कण्हेरकर राजेंद्र दिनकरराव | मानसशास्त्र    |
| २०)      | देवकाते उत्तम नामदेव       | इतिहास         |
| २१)      | बोरावके मोहन कुडलिक        | समाजशास्त्र    |
| २२)      | श्रीमती जाधव सुशिला दगडू   | इतिहास         |
| २३)      | भागवत राजेंद्र माणिकराव    | भूगोल          |
| २४)      | तावरे शुभांगी चंकरराव      | इतिहास         |
| २५)      | काटे जालिंदर नारायण        | भूगोल          |
| २६)      | भोसले युवराज तुकाराम       | संरक्षणशास्त्र |
| २७)      | गावडे मनाजी मारुती         | मराठी          |
| २८)      | वैद्य जयश्री चंद्रकांत     | राज्यशास्त्र   |
| २९)      | सपकळ मधुकर आण्णा           | इतिहास         |
| ३०)      | शिंदे दमयंती सिताराम       | इतिहास         |
| ३१)      | होले शंकर विष्णू           | भूगोल          |
| ३२)      | भापकर रोहिदास नागनाथ       | भूगोल          |
| ३३)      | भागवत सुनिल नामदेव         | इतिहास         |
| ३४)      | सोरटे साहेबराव श्रीरंग     | भूगोल          |
| ३५)      | चोपडे नानासाहेब सोपनराव    | भूगोल          |
| ३६)      | गाढवे राजेंद्र महादेव      | अर्थशास्त्र    |
| ३७)      | कांबळे शामराव नामदेव       | इतिहास         |
| ३८)      | काटे दिलीप रामचंद्र        | भूगोल          |
| ३९)      | वगाडे कल्पना साहेबराव      | मराठी          |
| ४०)      | होनराव बाळकृष्ण महादेव     | समाजशास्त्र    |
| ४१)      | इंगळे हनुमंत लक्ष्मण       | इतिहास         |
| ४२)      | गाडेकर हनुमंत मदन          | भूगोल          |

नियतकालिक ८७-८८

|     |                                 |              |
|-----|---------------------------------|--------------|
| ४१) | सौ. कार्वेकर विजयश्री विठ्ठलराव | इतिहास       |
| ४२) | गावडे गणेश ज्ञानदेव             | भूगोल        |
| ४३) | लव्हे आशा दत्तात्रय             | राज्यशास्त्र |
| ४४) | सणस निवास रामचंद्र              | अर्थशास्त्र  |
| ४५) | खटके विठ्ठल पांडुरंग            | भूगोल        |
| ४६) | देवकाते गणपत शंकर               | इतिहास       |
| ४७) | सस्ते जवाहर भिमदेवराव           | इतिहास       |
| ४८) | कोकरे दत्तात्रय वृवासाहेब       | भूगोल        |
| ४९) | कलढोणे नानासाहेब साधू           | राज्यशास्त्र |
| ५०) | डाळ उद्धव जगन्नाथ               | राज्यशास्त्र |
| ५१) | श्रीमती कोळेकर जयंत गुलाब       | इतिहास       |
| ५२) | निवाळकर दत्तात्रय विठ्ठलराव     | राज्यशास्त्र |
| ५३) | भंडारे राजकुमार वासुदेव         | राज्यशास्त्र |
| ५४) | पत्की रोहिणी वासुदेव            | मानसशास्त्र  |
| ५५) | आगवणे राजेंद्र कोंडीबा          | मराठी        |
| ५६) | गुरव देविदास चंकरराव            | समाजशास्त्र  |
| ५७) | गायकवाड शर्मिला कृष्णराव        | इतिहास       |
| ५८) | म्हेंब्रे रामचंद्र विठ्ठल       | भूगोल        |
| ५९) | लोखंडे पोपट चंकर                | इतिहास       |
| ६०) | भागवत साधना दत्तात्रय           | हिंदी        |
| ६१) | गावडे बाबासाहेब दत्तात्रय       | इतिहास       |
| ६२) | पवार विठ्ठल नाना                | इतिहास       |
| ६३) | मेरगळ रमेश बापूराव              | इतिहास       |
| ६४) | टकले संजय कोंडिबा               | राज्यशास्त्र |
| ६५) | धुमाळ संजीव यशवंतराव            | मानसशास्त्र  |
| ६६) | व्होराकाटे निवृत्ती साधू        | इतिहास       |
| ६७) | खराडे कृष्णराव बाजीराव          | हिंदी        |
| ६८) | कोकरे अजित जगन्नाथ              | समाजशास्त्र  |
| ६९) | टिळेकर रामचंद्र बबनराव          | मानसशास्त्र  |
| ७०) | देवकाते अर्जुन यशवंत            | भूगोल        |
| ७१) | कदम आम्रपालिका लव्हाजी          | इतिहास       |
| ७२) | देवकाते दिलीपकुमार कृष्णा       | इतिहास       |
| ७३) | दानवले विलास रावसाहेब           | समाजशास्त्र  |
| ७४) | धालपे सुरेश जगन्नाथ             | इतिहास       |
| ७५) | घोगरे जालिंदर रामचंद्र          | भूगोल        |
| ७६) | झगडे विजय बाबूराव               | मराठी        |
| ७७) | कुमार दिलीप लहू                 | समाजशास्त्र  |
| ७८) | कु. ढवळे अहिल्या भगवान          | इतिहास       |
| ७९) | काळकुटे राजकुमार रामचंद्र       | इतिहास       |
| ८०) | जाधव अरुण नारायणराव             | इतिहास       |
| ८१) | काशिद किशोकुमार यशवंत           | राज्यशास्त्र |
| ८२) | सुपेकर जयवंत भानुदास            | हिंदी        |
| ८३) | कु. यादव अरुणा नंदकुमार         | मराठी        |
| ८४) | कु. शिंदे सगिता राजाराम         | इंग्रजी      |
| ८५) | चव्हाण शिवाजी मारुती            | इतिहास       |
| ८६) | चव्हाण विजय आनंदराव             | इतिहास       |
| ८७) | राहिरकर अजित गंगाधर             | राज्यशास्त्र |
| ८८) | बंडगर विजयकुमार दादासाहेब       | हिंदी        |



|                               |                           |       |
|-------------------------------|---------------------------|-------|
| ३ मगदूम सुनिता धनचंद्र        | एस. वाय. बी. सी. एस. - १४ | ४२०/- |
| ४ शहा चंद्रमा बाहुबली         | एस. वाय. बी. सी. एस. - ९  | ४२०/- |
| ५ नासिकवाला दुरिया ताहेर      | एस. वाय. बी. एस्सी. - ९   | ४२०/- |
| ६ शहा वैशाली जंबूकुमार        | एस. वाय. बी. एस्सी. - ८   | ४२०/- |
| ७ गुगळे अनिता मोतीलाल         | एस. वाय. बी. एस्सी. - ७   | ४२०/- |
| ८ नासिकवाला मुनीश सैफुद्दीन   | एस. वाय. बी. एस्सी. - ११  | ४२०/- |
| ९ तांबडे पुष्पलता बाबुराव     | एस. वाय. बी. सी. एस. - १३ | ४२०/- |
| १० इवरे दत्त महादेव           | एफ. वाय. बी. एस्सी. - ६८  | ३१५/- |
| ११ कायगुडे गणपत काशीनाथ       | एफ. वाय. बी. एस्सी. - १६४ | ३१५/- |
| १२ उपरे अविनाश आत्माराम       | एफ. वाय. बी. सी. एस. - ९  | ३१५/- |
| १३ बोरावके तानाजी बाळासाहेब   | एफ. वाय. बी. एस्सी. - १२६ | ३१५/- |
| १४ वकिल मंजुषा व्यंकटराव      | एफ. वाय. बी. एस्सी. - ९४  | ३५०/- |
| १५ चिटणीस अनघा बाळकृष्ण       | एफ. वाय. बी. एस्सी. - १३६ | ३१५/- |
| १६ सारडा ज्योती लक्ष्मीनारायण | एफ. वाय. बी. सी. एस. - १  | ३५०/- |
| १७ करे आनंदराव काशीनाथ        | एफ. वाय. बी. एस्सी. - १४८ | ३१५/- |
| १८ शहा पद्मजा सुभाष           | एफ. वाय. बी. एस्सी. - ३   | ३५०/- |
| १९ केकाण महादेव बापू          | एफ. वाय. बी. ए. - २२      | ३५०/- |

३) हिंदी स्कॉलरशिप

|                          |                   |       |
|--------------------------|-------------------|-------|
| १ खराडे कृष्णराव बाजीराव | एम. ए. हिंदी - १२ | ९००/- |
| २ म्हस्के वारीकराव बाबा  | एम. ए. हिंदी - ८  | ९००/- |
| ३ भागवत साधना दत्तात्रय  | एम. ए. हिंदी - ६  | ९००/- |

४) नॅशनल स्कॉलरशिप अंडर स्कीम ऑफ टॉलेंट डेव्हलपमेंट गणित फिजिक्स

|                    |                         |       |
|--------------------|-------------------------|-------|
| १ शहा पद्मजा सुभाष | एफ. वाय. बी. एस्सी. - ३ | ४००/- |
|--------------------|-------------------------|-------|

५) श्री साईबाबा संस्थान शिर्डी स्कॉलरशिप

|                         |                           |       |
|-------------------------|---------------------------|-------|
| १ काळे शिवाजी गोविंदराव | एस. वाय. बी. एस्सी. - १११ | २१०/- |
|-------------------------|---------------------------|-------|

६) कंकुबाई केवलचंद गांधी मोडर्निब

|                       |                          |       |
|-----------------------|--------------------------|-------|
| १ शहा अभिनंदन भारतलाल | एस. वाय. बी. कॉम. - ३    | २००/- |
| २ शहा चंद्रमा बाहुबली | एस. वाय. बी. सी. एस. - ९ | २००/- |

७) गणेश मनोहर व शंकरराव गणेश दाते चॅरिटेबल ट्रस्ट पुणे शिष्यवृत्ती

|                                 |                          |       |
|---------------------------------|--------------------------|-------|
| १ गुळवे संजय भिमराव             | एम. ए. इतिहास - ३        | १५०/- |
| २ गोसावी विजया विनायक           | एफ. वाय. बी. कॉम. - १४   | ३००/- |
| ३ पळयुळे देसाई विद्या श्रीकृष्ण | एस. वाय. बी. कॉम. - २०   | ३००/- |
| ४ शहा चंद्रमा बाहुबली           | एस. वाय. बी. सी. एस. - ९ | १५०/- |
| ५ महाजन क्रांती जयंतराव         | एस. वाय. बी. सी. एस. - ६ | ३५०/- |
| ६ मुतालिक मनिषा मनोहर           | एस. वाय. बी. सी. एस. - ७ | ३५०/- |
| ७ इनामदार वसंत पांडुरंग         | एम. ए. इंग्रजी - ३३      | २००/- |

१) कॉलेज पारितोषिके

|                             |                            |      |
|-----------------------------|----------------------------|------|
| १ भुसे निर्मला महादेव       | एफ. वाय. बी. ए. प्रथम      | ५११- |
| २ नासिकवासा दुरिया ताहेरभाई | एफ. वाय. बी. एस्सी. प्रथम  | ५११- |
| ३ चक्कीवाला मोईझ सैफुद्दीन  | एफ. वाय. बी. कॉम. प्रथम    | ५११- |
| ४ नवाथे चित्रा शरद          | एफ. वाय. बी. सी. एस. प्रथम | ५११- |

विशेष पारितोषिके १९८७-८८

|                            |      |
|----------------------------|------|
| एफ. वाय. बी. ए. प्रथम      | ५११- |
| एफ. वाय. बी. एस्सी. प्रथम  | ५११- |
| एफ. वाय. बी. कॉम. प्रथम    | ५११- |
| एफ. वाय. बी. सी. एस. प्रथम | ५११- |

|                              |                           |      |
|------------------------------|---------------------------|------|
| ५) मुधा मंजू जयकुमार         | एस. वाय. बी. ए. प्रथम     | ५११- |
| ६) ठोंबरे हेमंतकुमार मोहनराव | एस. वाय. बी. एस्सी. प्रथम | ५११- |
| ७) जगताप मुरलीधर विनायक      | एस. वाय. बी. कॉम. प्रथम   | ५११- |
| ८) रणवरे सुचिता गुलाबराव     | बी. ए. मध्ये प्रथम        | ५११- |
| ९) शहा माधवी महावीर          | बी. एस्सी. मध्ये प्रथम    | ५११- |
| १०) कारंडे संजयकुमार मधुकर   | बी. कॉम. मध्ये प्रथम      | ५११- |
| ११) बालगुडे रमेश नामदेव      | एम. ए. मध्ये प्रथम        | ५११- |
| १२) कांबळे अरुण मारुती       | एम. कॉम. मध्ये प्रथम      | ५११- |

२) स्व. डॉ. एस्. एन्. पुराणिक स्मृतिपारितोषिक

|                      |                             |       |
|----------------------|-----------------------------|-------|
| कदम आनंदराव साहेबराव | बी. ए. राज्यशास्त्रात प्रथम | १०११- |
|----------------------|-----------------------------|-------|

३) अनेकान्त एज्युकेशन सोसायटीचे स्व. डॉ. एस्. एन्. पुराणिक पारितोषिक

|                  |                        |       |
|------------------|------------------------|-------|
| शहा माधवी महावीर | बी. एस्सी. मध्ये प्रथम | १०११- |
|------------------|------------------------|-------|

४) स्व. सुरेश काळे स्मृतिपारितोषिके

|                          |                      |      |
|--------------------------|----------------------|------|
| १) रणवरे सुचिता गुलाबराव | बी. ए. मध्ये प्रथम   | ६११- |
| २) मोरे नंदा किसनराव     | बी. ए. मध्ये द्वितीय | ४०१- |

५) श्री. अजित शहा ( वडूजकर ) पारितोषिके

|                       |                                  |      |
|-----------------------|----------------------------------|------|
| १) कांबळे अरुण मारुती | एम. कॉम. मध्ये प्रथम             | ५०१- |
| २) गुजर प्रतिभा मदन   | बी. कॉम. मध्ये अकौन्टन्सीत प्रथम | ५०१- |

६) श्री. कमलाकान्त ढवाण पाटील पारितोषिके

|                              |                                      |      |
|------------------------------|--------------------------------------|------|
| १) जगताप संगीता मुदामराव     | एस. वाय. बी. ए. इतिहासात प्रथम       | २५१- |
| २) तावरे राजश्री रामचंद्र    | एस. वाय. बी. ए. राज्यशास्त्रात प्रथम | २५१- |
| ३) मुभेदार संदीप कमलाकांत    | एस. वाय. बी. ए. अर्थशास्त्रात प्रथम  | २५१- |
| ४) मोरे गणेश जगन्नाथ         | एस. वाय. बी. ए. मानसशास्त्रात प्रथम  | २५१- |
| ५) ठोंबरे हेमंतकुमार मोहनराव | एस. वाय. बी. एस्सी. मध्ये प्रथम      | २५१- |
| ६) जगताप मुरलीधर विनायक      | एस. वाय. बी. कॉम. मध्ये प्रथम        | २५१- |

७) श्री. के. वाय. जगताप ( सिव्हिल जज्ज ) पारितोषिके

|                           |                                      |      |
|---------------------------|--------------------------------------|------|
| १) मोरे नंदा किसनराव      | बी. ए. ला. सोशल सायन्सेस मध्ये प्रथम | ५११- |
| २) फडतरे लक्ष्मण निवृत्ती | बी. ए. ला. भाषा विषयात प्रथम         | ५०१- |

८) प्रा. आर. एच. चाफेकर पारितोषिक ( पूज्य वडिलांच्या स्मरणार्थ )

|                           |                           |      |
|---------------------------|---------------------------|------|
| नासिकवाला दुरिया ताहेरभाई | एफ. वाय. बी. एस्सी. प्रथम | ५११- |
|---------------------------|---------------------------|------|

९) प्रा. व्ही. व्ही. उपाध्ये पारितोषिक ( पूज्य आई-वडिलांच्या स्मरणार्थ )

|                       |                                |       |
|-----------------------|--------------------------------|-------|
| शिन्डे संगीता राजाराम | बी. ए. ला. इंग्रजी मध्ये प्रथम | १०११- |
|-----------------------|--------------------------------|-------|

१०) सौ. वासंती भगवानराव खारतोडे पारितोषिक

|                       |                                |      |
|-----------------------|--------------------------------|------|
| शिन्डे संगीता राजाराम | बी. ए. ला. इंग्रजी मध्ये प्रथम | ३५१- |
|-----------------------|--------------------------------|------|

११) प्रा. सौ. नीलम पाटील पारितोषिक

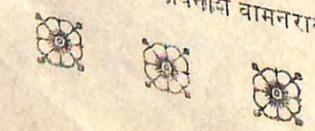
|                  |                                       |       |
|------------------|---------------------------------------|-------|
| शहा माधवी महावीर | बी. एस्सी. ला. वनस्पतीशास्त्रात प्रथम | १०११- |
|------------------|---------------------------------------|-------|

१२) प्रा. डॉ. डी. टी. पाटील पारितोषिके

|                      |                              |      |
|----------------------|------------------------------|------|
| कोकरे बाळासो जगन्नाथ | एफ. वाय. बी. ए. मराठीत प्रथम | २५१- |
|----------------------|------------------------------|------|

नियतकालिक ८७-८८

|  |   |  |
|--|---|--|
| देवकर लता शामराव<br>झगडे वापुराव विठोबा  | वी. ए. मराठीत प्रथम<br>एम. ए. मराठीत प्रथम  | २५१-<br>२५१-   |
| १३) प्रा. एस. पी. कदम पारितोषिक<br>शिन्दे सोपान किसनराव  | एफ. वाय. वी. ए. समाजशास्त्रात प्रथम   | ३११-   |
| १४) प्रा. व्ही. ए. संगई पारितोषिक<br>ताकवणे सुनील नारायण<br>कोकरे नंदकुमार भिकाजी  | एफ. वाय. वी. ए.<br>इतिहासात प्रथम   | विभागून २५१-   |
| १४) कथाकथन स्पर्धा पारितोषिके<br>१) भागवत नंदकुमार वसंतराव<br>२) जाधव संजय लक्ष्मण<br>३) पांडकर विवेक धन्यकुमार  | एस वाय. वी. कॉम.<br>एफ. वाय. वी. ए.<br>टी. वाय. वी. कॉम.  | २०-<br>१५१-<br>१०१-                                  |
| १६) काव्यवाचन स्पर्धा पारितोषिके<br>१) जाधव संजय लक्ष्मण<br>२) मुभेदार संदीप कमलाकांत<br>३) खान रेहाना अहमद  | एफ. वाय. वी. ए.<br>टी. वाय. वी. ए.<br>एफ. वाय. वी. एस्सी.   | २५१-<br>१५१-<br>१०१-                                 |
| १७) "अस्मितादर्शन" पारितोषिक<br>मुभेदार संदीप कमलाकांत   | टी. वाय. वी. ए.   | १५१-   |
| १८) स्नेहसम्मेलन पारितोषिके<br>१) गोरे सौदामिनी पुष्पसेन (गीतगायन)<br>२) डोवळे वावासाहेब आनंदराव (रेकॉर्ड डान्स)<br>३) परकाळे प्रदीप जयवंत (अभिनय)<br>४) महामुनी अविनाश दत्तात्रय (चित्रकला)<br>५) नवाथे चित्रा शरद (चित्रकला)<br>६) राहा सुखदा शांतिलाल (हस्तकला)<br>७) सुर्वे भारती कृष्णराव (रांगोळी) | टी. वाय. वी. कॉम.<br>एस. वाय. वी. ए.<br>एस. वाय. वी. कॉम.<br>एस. वाय. वी. कॉम.<br>एस. वाय. वी. सी. एस्.<br>टी. वाय. वी. कॉम.<br>टी. वाय. वी. ए. | १५१-<br>१५१-<br>१५१-<br>२११-<br>१५१-<br>२११-<br>२११- |
| १९) "अनेकान्त" नियतकालिक पारितोषिके<br>१) मुपेकर जयवंत भानुदास (कविता)<br>२) पांडकर विवेक धन्यकुमार (कथा)  | एम. ए. (हिंदी)<br>टी. वाय. वी. कॉम.   | १११-<br>१११-   |
| २०) स्व. गंगाधर गणेश कानिटकर पारितोषिक रु. २५०१-<br>बी. ए. च्या परीक्षेत संरक्षण शास्त्र (स्पेशल) विषयात पुणे विद्यापीठात सर्वाधिक गुण   | श्री. गोडसे विकास नारायण  |  |
| २१) श्री दत्तप्रसन्न काटदरे पारितोषिक प्रत्येकी रु. १६५१-<br>बी. ए. च्या परीक्षेत संरक्षण शास्त्र (स्पेशल) विषयात पुणे विद्यापीठात गुणानुक्रमे प्रथम दोन क्रमांक -   | १) श्री. गोडसे विकास नारायण<br>२) श्री. माधवकांडे अविनाश वामनराव  |  |



**शैक्षणिक उपक्रम -**

**मराठी विभाग -**

मराठी विभागाच्या वतीने कोहसिप योजनेच्या अंतर्गत -  
दिनांक २६ व २७ जून १९८७ रोजी

"स्वातंत्र्योत्तर काळातील नव्या वाङ्मयीन प्रवृत्ती व चळवळी"

या विषयावर एक चर्चासत्र आयोजित करण्यात आले होते. या चर्चासत्रात पुढील मान्यवरांनी भाग घेतला होता.

- प्राचार्य डॉ. म. द. हातकणंगलेकर (सांगली)  
प्राचार्य डॉ. सुभाषचंद्र अक्कोळे (जयसिंगपूर)  
प्रा. डॉ. द. ता. भोसले (पंढरपूर)  
प्रा. डॉ. र. वा. मंचरकर (श्रीरामपूर)  
प्रा. डॉ. गं. ना. जोगळेकर (पुणे)  
प्रा. मो. म. कुलकर्णी (पुणे)  
प्रा. डॉ. प्र. ना. दीक्षित (फलटण)

या शिवाय पुणे जिल्ह्यातील महाविद्यालयांतील मराठी विषयाचे प्राध्यापक चर्चासत्राला उपस्थित होते.

✽ यावेळी प्रा. डॉ. रत्नाकर मंचरकर यांना त्यांच्या मुक्तेश्वरा-वरील ग्रंथाला मिळालेल्या पारितोषिकावद्दल महाविद्यालयाच्या वतीने सत्कार करण्यात आला.

मराठी विभागात - पदव्युत्तर - एम्. ए. मराठीच्या विद्यार्थ्यांना मार्गदर्शनपर व्याख्यान देण्यासाठी पुढील प्राध्यापकांना निमंत्रित केले होते.

- १) प्रा. डॉ. म. श्री. कानडे, प्रमुख मराठी विभाग-पुणे विद्यापीठ पुणे  
२) प्रा. डॉ. गं. ना. जोगळेकर, फर्ग्युसन कॉलेज पुणे.  
३) प्रा. डॉ. अंजली सोमन, श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी महिला विद्यापीठ पुणे.

डॉ. दयाराम पाटील  
प्रमुख  
मराठी विभाग

**हिंदी विभाग -**

हिंदी विभागाच्या वतीने "कोहसिप" योजनेच्या अंतर्गत दि. २५ व २६ जून १९८७ रोजी - "१९७५ से १९८७ तक की हिंदी कहानी" या विषयावर चर्चासत्र आयोजित केले होते. या चर्चासत्रात स्थानिक प्राध्यापक शिक्षक व विद्यार्थ्यां शिवाय पुढील मान्यवरांनी भाग घेतला.

- १) प्रा. रंगनाथ तिवारी (आंबाजोगाई)  
२) प्रा. डॉ. र. वा. विवलकर (नासिकरोड)  
३) प्रा. निशिकान्त ठकार (सोलापूर)  
४) प्रा. डॉ. सुनीलकुमार लवटे (कोल्हापूर)  
५) प्रा. डॉ. सुधाकर गोकाककर (गडहिंग्लज)  
६) प्रा. डॉ. सुरेशकुमार जैन (शिरूर)  
७) प्रा. डॉ. मनोहर सराफ (भुसावळ)  
८) प्रा. डॉ. शिवाकान्त गोस्वामी (भुसावळ)

नियतकालिक ८७-८८

- ९) प्रा. सुभाष तळेकर (त्रोतूर)  
१०) प्रा. डॉ. ना. भालवणकर (जुन्नर)  
११) प्रा. डॉ. गो. रा. कुलकर्णी (सांगली)  
१२) प्रा. एम्. एस्. चराटे (बोदवड)

**इतिहास परिषद -**

इतिहास विषयाच्या प्राध्यापकांची दुसरी परिषद दि. २६ डिसें. ते २८ डिसें. १९८७ या कालावधीत पुणे विद्यापीठाच्या विद्यमाने आमच्या महाविद्यालयाने यशस्वीपणे आयोजित केली.

या परिषदेसाठी जळगाव, धुळे, नाशिक, नगर व पुणे जिल्ह्यातील १०० प्राध्यापक सहभागी झाले होते तसेच डॉ. एस्. एन्. नवलगुंदकर, (उपकुलगुरू-पुणे विद्यापीठ), डॉ. के. एन्. चिटणीस (इतिहास विभाग प्रमुख-पुणे विद्यापीठ) भारत इतिहास संशोधन मंडळाचे कार्यकर्ते इ मान्यवरांची उपस्थितीही या परिषदेस लाभली.

या परिषदेमध्ये अनेक प्राध्यापकांनी इतिहास विषयक अनेक अभ्यासपूर्ण शोधनिबंधांचे वाचन केले. या शोधनिबंधांच्या गोप-वान्यांचा अंतर्भाव असलेली एक स्मरणिकाही यावेळी प्रकाशित करण्यात आली.

या परिषदेच्या निमित्ताने डेक्कन कॉलेज-पुणे, पुराभिलेख महाराष्ट्र सरकार मुंबई, भारत इतिहास संशोधक मंडळ-पुणे, राज-वाडे संशोधन मंडळ-धुळे या संस्थांनी दुमिळ ऐतिहासिक कागदपत्रे, नकाशे, चित्रे, मोडीतील लिखाण, वस्तू यांचे एक देखणे प्रदर्शनही आयोजित केले होते, शिवाय कॉन्टिनेंटल प्रकाशन व दास्ताने प्रकाशन या संस्थांनी आपले ग्रंथ व प्रकाशने प्रदर्शनासाठी व विक्रीसाठी मांडली होती, या परिषदेसाठी पुणे विद्यापीठाने रु. चार हजारचे अनुदान दिले होते.

**ऋणनिर्देश -**

**मुलांची वैद्यकीय तपासणी -**

महाविद्यालयातील प्रथम वर्ष वी. ए., वी. कॉम., वी. एस्सी., एम. ए., एम. कॉम. व वसतिगृहातील मुले-मुली त्यांची वैद्यकीय तपासणी करण्यात आली यासाठी वारामतीतील खालील नामवंत डॉक्टरांचे बहुमोल सहकार्य लाभले. त्यावद्दल त्यांचे हार्दिक आभार!  
डॉ. व. मा. कोठारी, डॉ. श्रीप्रसाद सिधये, डॉ. व्ही. एन. दोशी  
डॉ. ए. वी. इन्दुले, डॉ. एन. जी. रणवरे, डॉ. अजित मोकाशी  
डॉ. एम. आर. दोशी डॉ. के. वी. आटोळे डॉ. के. के. कोल्हटकर  
डॉ. के. डी. गुजर डॉ. जी. जी. खन्ना डॉ. मिसेस हर्षद मोकाशी  
डॉ. मिसेस माधुरी मोकाशी डॉ. मिसेस उर्मिला कुलकर्णी  
डॉ. मिसेस ममता गुजर, डॉ. मिसेस शुभदा अंबडकर.



आमच्या महाविद्यालयात -

- प्राचार्य डॉ. जे. के. गोधा (कॉमर्स)  
प्रा. डॉ. दयाराम पाटील (मराठी)  
प्रा. डॉ. के. एम्. सुर्वे (हिंदी)

हे पुणे विद्यापीठ मान्य संशोधक-मार्गदर्शक असून त्यांच्या मार्गदर्शना-खाली अनेक विद्यार्थी एम्. फिल व पीएच्डी चे संशोधन कार्य करित आहेत.

अर्थशास्त्र-

"पदवीपूर्व स्तरावरील अर्थशास्त्र विषयाचे अध्यापन स्वरूप व समस्या" या विषयावर २९ व ३० जून १९८७ रोजी "कोहसिप" योजनांतर्गत दोन दिवसाचे चर्चासत्र आयोजित करण्यात आले. या चर्चासत्रात पुणे विद्यापीठातील अर्थशास्त्र अभ्यास मंडळाच्या खालील सदस्यांनी व इतर मान्यवर प्राध्यापकांनी सहभाग घेतला. शोध निबंधाचे वाचन केले व ४ अभ्यास गटात उपयुक्त चर्चा झाली.

- १) प्रा. के. एच्. शितोळे
- २) प्रा. कमलाकर परचुरे
- ३) प्रा. वि. ज. गोडवोले
- ४) प्रा. दि. रा. आठवले
- ५) प्रा. व्ही. एच्. देशपांडे
- ६) प्रा. जी. आर. गोखले

- ७) प्रा. शेळके
- ८) प्रा. संतोष दास्तानें
- ९) प्रा. व्ही. एस्. पाटकर

इंग्रजी-

"Critical Approaches to English Literature" या विषयावर २६ जून व २७ १९८७ रोजी "कोहसिप" योजनांतर्गत दोन दिवसाचे चर्चासत्र आयोजित करण्यात आले. या चर्चासत्रात उद्घाटन प्राचार्य डॉ. व्ही. एन्. ढवळे यांचे शुभ हस्ते झाले. चर्चासत्रामध्ये खालील मान्यवर प्राध्यापकांनी शोध निबंध वाचले उपयुक्त चर्चा झाली.

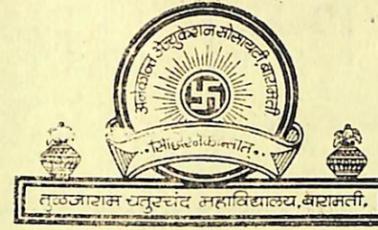
- १) प्रा. वी. ए. कुलकर्णी
- २) प्रा. डॉ. वी. के. सिन्हा
- ३) प्रा. डॉ. ए. पी. दाणी
- ४) प्रा. डॉ. एस्. व्ही. धायगुडे
- ५) प्रा. डॉ. शिरवाडकर
- ६) प्रा. वी. देवराज
- ७) प्रा. पंडीत
- ८) प्रा. व्ही. एन्. माडगे

नैतिक पैलू : नैतिक परिवर्तनाने संपूर्ण क्रांतीचा स्तर उंचावेल. आजपर्यंत नीती कल्पना मुख्यतः व्यक्तिगत मानल्या गेल्या. आजच्या काळात सामाजिक जीवन एवढे गुंतागुंतीचे झाले आहे की, मूल्यमापनासाठी व्यक्तिगत निकष ठरतात. मनुष्याच्या प्रत्येक हालचालीशी सामाजिक संबंधाचा धागा जोडला गेला आहे. मनुष्याचा सामाजिक संबंध कसा आहे हे जाणल्याखेरीज त्याचे मूल्यमापन होऊ शकत नाही. प्राण्यावर दया करणारा, माणसाचे शोषण करू शकतो पूजापाठ करणारा काळाबाजार व साठेवाजी करू शकतो. तीर्थयात्रा करणारा भ्रष्टाचार करू शकतो: निव्वर्सनी माणूस भेसळीचा व्यवहार करू शकतो. हे लक्षात घेता नैतिक जीवनाच्या मोजमापाची फेरमांडणी करावी लागेल. व्यक्तीच्या नीति मूल्यमापनांत सामाजिक निवषाचा समावेश करावा लागेल.

व्यक्तीने नीतीने वागण्याचे ठरविले तरी, परिस्थिती तसे वागणाराला जगणे असह्य करून टाकते. भ्रष्टाचार व काळाबाजार असे सामाजिक प्रकार आहेत, जेथे नीतीमान माणूस अनीतीला शरण जाण्यास विवश होतो. त्याच्या रोजच्या न्याहरीत लागणाऱ्या तेल, साखरेसारख्या पदार्थांपासूनच काळ्या बाजाराचा आरंभ होतो. बस व रेल्वेच्या प्रवासांत तिकिट खरेदी करणे व जागा मिळविणे भ्रष्टाचाराला आमंत्रण देणारे प्रकार बनले आहेत. दैनंदिन जीवनात नीतीने वागणे अशक्य होऊन बसले आहे. भ्रष्टाचार व काळाबाजार निर्मूलन समाजाचे नैतिक कर्तव्य होऊन बसले आहे.

- जयप्रकाश नारायण

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती



माझ्या मराठी मातीचा  
लावा ललाटास टिळा  
हिच्या संगाने जागल्या  
द-याखोऱ्यातील शिळा  
- कुमुमाग्रज

अनेकान्त एज्युकेशन सोसायटी

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय,  
बारामती.

अनन्तधर्मणस्तत्त्वं पश्यन्ती प्रत्यगात्मनः  
अनेकान्तमयी मूर्तिनित्यमेव प्रकाशनाम् ॥

अनेकान्त

वार्षिक नियतकालिक

( कनिष्ठ )

अंक सन्निवावा १९८७-८८

संपादक मंडळ

अध्यक्ष

प्राचार्य डॉ. जे. के. गोधा

सहाय्यक

उपप्राचार्य एस्. आर्. नवाथे

उपप्राचार्य डॉ. के. एम्. सुर्वे

उपप्राचार्य डॉ. दयाराम पाटील

प्रा. ए. बी. देसाई

प्रा. टी. डी. यादव

प्रमुख संपादक

प्रा. के. एस्. अय्यर

विद्यार्थी प्रतिनिधी

श्री. संदीप सुभेदार

तृतीय वर्ष, बी. ए.

## मी पाहिलेले भूत

वनकर धनसिंग रामदास  
१२ वी आर्ट्स (अ)

### अनुक्रम

|                    |                    |        |
|--------------------|--------------------|--------|
| मी पाहिलेले भूत    | वनकर धनसिंग रामदास | १      |
| स्मृती वाढविणे आहे | अवधुत कुलकर्णी     | २      |
| हुंडावळी           | ठोंबरे व्ही. एम.   | ३      |
| कार्यवृत्तांत      |                    | ५ ते ८ |



ते त्या ठिकाणी बसलेले असतानाही मला त्याची बळक पोहचली आणि मी सायकल जोरात ताणली पण परिणाम असा झाला कि, त्याकडे बघण्यामुळे माझी गाडी आता त्या तळ्याच्या वाटेवरून सरळ खाली स्मशान वाटेकडे निघाली होती येवढ्यात जोगत ब्रेक दाबला तसा उलथून जवळच्या त्या खड्यांत पडलो घाबरल्यामुळे अंगावर सर्वत्र घाम निघून भर रात्री १२ वाजता आंधोळ झाल्या-सारखं झालं कसे तरी उठून पळत सुटलो परत सायकलची आठवण झाली आणि आंधारात सायकल हात ने चाचपू लागलो तस तसं ते जवळ येत होतं मनात म्हटलं आता हे आपल्याला नक्की वढाणीवर आणणार, सायकल शोधताना एका हाताची बोटे तारांमध्ये शिरली आणि तोल जावून पायडेल वर पाय पडल्याने चाक जोरात फिरले तशी चारी बोटाचे कातडे लोंबायला लागले. हळूवार सायकल उचलली आणि बळक त्या तळ्याच्या वरच्या वाटेकडे सायकल रेटू लागला आणि तेवढ्यात ते भूत पाखरासारखे 'चिरऽऽऽऽचिर' ओरडल्या सारखा आवाज ऐकल्या बरोबर उलथून पडलो आणि परत उठलो. तेवढ्यात ते माधारी गेल्याचे दिसले. आणि कसेबसे सायकलवर बसलो. रस्त्याने अनेक विचार मनात घुमू लागले अशात एक पाखर सहज येवून माझ्या कपळी धडकले तसा मी परत एका काटेरी झुडपात कोलमडलो. बघतो तर, एक चाक पंचर! तेवढ्यात परत चालत निघालो आणि रस्ता पार केला.

आता मी घरी पोहचलो होतो. तरी मला ते भूत सतत डोळ्यासमोर दिसतचं होतं. त्याबरोबर मला एकदम दिव्याची ज्योत दिझलेली दिसली मी गप्प पडून राहिलो.

दुसऱ्या दिवशी तर मी शेताला चक्कर मारण्यासाठी निघालो असे माझे सतत चालू असे कारण घरच्या सर्व मंडळीची मला तशी ताकीद होती. हे शेत आमच्या घरापासून २ ते ३ मैल होते पण रस्त्यावरच 'स्मशान भूमी' त्यामुळे मला भूतांची भीती अधिकच वाढायची त्यात कधी ऐकली नाही अशा भूतांच्या गोष्टी मी दररोज शेतावर चक्कर मारायला गेल्यावर तेथील दोस्त कंपनी सांगायची त्यामुळे माझे डोके सूज होवून मला भीतीने घाम फूटायचा. भूताला कधी न घाबरणारा मी एक होतो पण केवळ दोस्त मंडळीनी माझ्यावर असा कसा फास लावला देव जाणें.

दोस्त मंडळी माझ्यावर कधी नाही असा प्रसंग लादायचे आणि त्यामुळे मी एक भिन्ना बनलो. भूताटकी ही नेमकी काय हांती हे त्यावेळी मला कधी सांगता आली नसती कारण मी त्यावेळी त्या मानानें तसा लहानच होतो.

एके दिवशी परत शेतांवर गेलो. दोस्त कंपनी जमली एक एक मला सावधगिरीची सुचना देत होता. एकजण म्हणाला की, "भूताने एक जणाचा तर खून केला म्हणतात!" तेवढ्यात राज्या ओरडला

'आं?' आणि मी पोटाला हाताने धरून एकदम मटकन खालीच बसलो. त्याबरोबर मला तर भितीने चक्कर आल्यासारखेच झाले. मी थरथर कापू लागलो. तेवढ्यात गण्या म्हणाला 'अरे, मी आज नविन ऐकलय !

'काय?' राज्या म्हणाला "एका माणसाला दररोज संध्या-काळी लांब अंतरावरून येण्यामुळे तो जवळच सायकलची चैन वापरत असे आणि 'एके दिवशी.....?' गण्या म्हणाला.

तेवढ्यात मी म्हणालो, "गप्प बसनारे!" पाया पडू का तुझ्या! राज्या म्हणाला, "अरे काय झालं तुला सांगना पुढे काय झालं" गण्या परत सांगू लागला अरे आणि त्या दिवशी भूताने म्हतारीचे सोंग घेतले आणि तीने गयावया केल्यामुळे त्याने म्हतारीला सायकलवर बसवून चालवले.

"बर, मग" राज्या म्हणाला तेवढ्यात ती म्हतारी भूत झाली तीचे पाय खाली फरकटू लागले त्या माणसाने ते भूत ओळखले आणि साखळीने बंदवले. त्या बरोबर ते "चिरऽऽऽऽचिरऽऽऽऽचिरऽऽऽऽ" करत पळाळं. असे मी एकले आहे. त्याबरोबर मला त्या भूताची आठवण झाली "मी तळ्यावरून खाली गेल्यामुळे जे भूत मी ओरडले ते पण असेच ओरडले." असे मी सांगितले आणि आता माझा ठाम विश्वास बसला.

आता बरोबर रात्रीच्या ११-३० वाजले होते तेवढ्यात घरी निघण्याचा विचार घेतला. मित्रमंडळी पसंर झाली माझे डोळे अगदी सुन्न झाले. मी सायकल हातात धरली आणि टांग मारली पुढे जाताच लगेच स्मशान भूमी जवळ येणार तोच मला चैनची आठवण झाली आणि तेवढ्यात माझ्याच सायकलची चैन तुटली मी घाबरला पण मला थोडा धिर आला कारण एक काम पूर्ण झाले ते म्हणजे ऐनवेळी चैन सांडली.

तेवढ्यात स्मशान भूमी आली त्याबरोबर धस्स आले आणि झप्पाझप सायकल ताणू लागलो. मनात म्हटलं आपण वाही तरी गुणगुणायला हवयं म्हणून मी "आम्ही दोघं राजाराणी" चित्रपटातलं गाणं म्हणायला सुरुवात केली "मी प्रेम नगरचा राजा, तू फूलवंती मधू राणी!" पहिलं कडवं पूर्ण करतो ना करतो तोच पुढून ज्यानं त्या चैनवाल्या माणसाची गोष्ट सांगितली त्याचा म्हणजे गाण्याचा आवाज आला.

मनात म्हटलं भूत कशाचही सोंग घेतात म्हणून मी न घाबरता हातातल्या चेंनीला घट्ट धरून दात खाल्ले आणि पुढे निघालो तेवढ्यात तो जवळ आला आणि काय बोलणार तेवढ्यात एक जोरात टोला हाणला. तो विव्दळू लागला पण मी त्याची बदर केली नाही. तो पाया पडू लागला गयावया करू लागला त्या बरोबर मी लाथ मारली म्हटलं, "ते काही नाही, भूतं कशाचही सोंग

व तात मला तसलं सांगू नको." आणि त्याला मी ढकलून दिलं. तो तळ्याच्या थराव्यावरून खाली कोसळत गेलं. मी म्हणालो, "घडीला-घडीला सोंग घेतोस, व्हय कवा म्हतारी तर कवा म्हतारा" 'शावास्स रं भूत, आता माझा मित्र झालास व्हय.' गूमान माधारी जा. आणि सायकलवर टांग टाकली मनात म्हटलं आता काय खर नाही कारण सायकलचं कुत्रं कुठं लागतच? म्हणून मी धावरलो म्हटलं आता आपली भूतानं पक्की जिखली म्हणून समजा. हातात बघतो तर साखळी तीर्थच विसरली म्हटलं आता आपण वेदम मार खाणार त्या भूताचा त्या भीतीने धावरून सायकल पळवू लागलो तशात मध्येच ब्रेक लागला आणि एक पलटी घेतली सायकलीलातर दाह पाजल्या-सारखंच झालं होतं काय ते कळेनाच खेरे परत सायकल उचलून धावू लागलो मागे पुढे पाहता पाहता पुढेच, एका मोठ्या 'दगडोवाला' कुर्णी तरी रस्त्यात ठेवले असल्यामुळे मी आणि सायकलीने ठेच खाल्ली आणि दोघेजणही उलथून पडलो. मी तमा आता विव्दूळ लागलो होतो. म्हटलं एवढ्यात भूताने डाव साधून घेवू नये, आले नो बसलं अंगावर म्हणजे काय? त्याचा नेम नाही. परत उठून पळत पळत निघालो तेवढ्यात एक ससा आडवा गेला म्हटलं आज आम-वस्या आहे त्यामुळेच ससा आणि मांजर अशी रूपे धारण करून भूत आपल्याला चकवणार.

सर्व कपडे आता ओली झाली होती म्हटलं ह्या भूतांच्या नादात पाऊस कधी पडला ते पण कळले नाही. परत आठवले तसं नाही घाम आलेला दिसतोच.

पुन्हा रस्त्यावरच तसा बसलेला मी पाहिला म्हटलं "आता ह्यात जेन नाही रं नाही तर वधीतलं. असतं तुझ्याकडे!" आणि मी त्याबरोबर धावरलो कारण त्याने टपकण उडूी मारली ती नेमकी सायकलच्या मडगाईंवरून पलकडे त्यामुळे मला परत भीती वाटू लागली.

## स्मृती वाढविणे आहे!

रविवार. सकाळची वेळ. नऊ साडे नऊ झालेले. सोवळे ओचळे, आस्तिक, नास्तिक, म्हतारे, कोतारे, सारे "हम तुम्हे लाजवाव कहते हैं।" ही जाहिरात संपून रामायण केव्हा सुरू होत? याकडे डोळे लावून बसलेले असतात. अहो, रोजचं रोजचं होमवकं विसरणारे आम्ही 'खरे विद्यार्थी' बुनिमाद, रामायण या सारख्या मालिका न विसरता पाहतो. ब्रिटीशांना उद्देशून गांधीजींचा सर्वात लोकप्रिय उद्-गार (आजच्या भाषेत सांगायचं तर सर्वात लोकप्रिय आयलॉग "चले जाव" त्यांनी कुठे आणि केव्हा उच्चारला, हे सांगायला गांधीज-गारे आम्ही विद्यार्थी मात्र, "कहाँ हैं तेरा दिवाना?" हा आयलॉग अगदी न विसरता लक्षात ठेवतो. हे सारे आयलॉग आम्ही लक्षात ठेवतो, विसरतो म्हणजे नक्की काय करतो? तर आपण हे आयलॉग आपल्या स्मृतीत ठेवतो आता, स्मृती म्हणजे तरी काय! देव जाणे!

स्मृतीचा सरळ सरळ अर्थ होतो, स्मरण. स्मरण म्हणजे लक्षात

घरी पोहचलो सर्व मंडळी झोपी गेली होती. धाकटे बंधू गाव झोपी गेलेली मी जेवण करीत होतो तेवढ्यात धाकट्या भावाच्या नाकाचा (घोरण्याचा) आवाज एकदम आला आणि गप्प झाला तसा मी एकदम पाटावरून खाली घसरलो. मला वाटले नक्की भूत असतं डोळ्याळा डोळा लागणे पण कशी बगी झोप लागली तेवढ्यात मला स्वप्न पडले स्वप्नात मला त्या भूताने साखळी दाखवली आणि त्याने ती मला मारायला उगारली तेवढ्यात मी मोठ्याने आरोळी टोकली "वाचवा-वाचवा SS ओ" लगेच धाकटा बंधू झोपेत धावरून ओरडला- 'आई SS ओ' तेवढ्यात हा का ओरडतो म्हणून धाकटा नंबरचा ही मोठ्याने ओरडला आता आम्ही तीवेजण जागे झालो होतो. मी म्हणालो, "ए, कयाला झोपीत थोवाळता रे, सारत्यात दणकूनं, उगीच झोपेत चांमळत्यात. झोपा!" तेवढ्यात परत समजण झोपली तेवढ्यात गण्याची आई आली म्हणाली अरे आमचा गण्या इकडे येणार होता. त्याबरोबर मी धावरलो. म्हणजे भूत नमून गण्याच होता काय? ती म्हतारी गयावया म्हणाली तो कुठं आढळला का? मी गप्प झालो म्हटलं, "नाही म्हतारी गेली आणि गण्या आला, मला म्हणाला कसंकाय वरदान मी म्हटलं काल काय सांगितलेल खरं हाय वा?"

गण्या पाठ दाखवित पुढे सरला म्हणाला 'मला माझ्या बाजूने अजून पाच बोट सूदक लावली नाहेत' पण आता बघ उमटलेत, मी म्हटलं, "आरे मी रात्री एक भूत पाहिले!" त्याने याने मला हात उगारला म्हणाला "यस माहीतय मला

अवधूत कुलकर्णी

ठेवण्याची त्रिया ही झाली आपली गावडी संकल्पना आहे म्हणजे नेमक काय? ते कुठं असत? कसं दिसत? तर स्मरण ही एक मानसशास्त्रीय संकल्पना आहे त्याला स्मृती या नावाने संबोधते. मानसशास्त्र स्मृतीत पुढीलप्रमाणे करते. "पूर्वी अनुभविलेल्या गोष्टींच्या स्मृती होणे व प्रतिमांच्या रूपाने त्यांची पुन्हा जाणीव होणे हीय." थोडक्यात काय? पूर्वी केलेल्या झालेल्या, हाच या स्मृतीत पुन्हा आठवण करणे, म्हणजे स्मृती होत असते. काही जणांना नेहमी विस्मृती होत असते. निदान स्मृती झालेली असते. मग डॉक्टरांचा उंबर झिजवावा लागतो कीय उपाय न करता सुद्धा स्मृती वाढवता येते. कारण स्मृती आहे. पण त्यासाठी विस्मृती का होते याची कारणे जेत. अरे हो, हो! मला माहित आहे की ती कारणे

तुळजाराम चतुर्चंद मह. विद्यापीठ

वेळ तुमच्याकडे नाही. आणि नको त्या गोष्टींची कारणं शोधायला तुम्ही संशोधकपण नाही. पण ती कारणं शोधून काढण्याचं कारणच नाही. ती पूर्वीच शोधली गेली आहेत. आपण फक्त समजून घ्यायची बस, विस्मृतीची सवय मोडलीच म्हणून समजा! विस्मृतीचं पहिलं कारण म्हणजे, अति तिथं माती. काही विद्यार्थी, विशेषतः १० वी १२ वीचे विद्यार्थी जास्तीत जास्त गुण मिळविण्याच्या इर्षेन खूप अभ्यास करतात. इतका की, त्या अति अभ्यासामुळे त्या विद्याथ्यांचा मेंदू काम नीट करत नाही. काय होतं, सारखा सारखा अभ्यास वरून त्या विद्यार्थ्यांच्या मेंदूची ग्रहण क्षमता कमी कमी होत जाते. आता, या कारणामुळे ज्यांना विस्मृती होते, त्यांनी ठराविक वेळीच अभ्यास केला पाहिजे. साधारणतः जितका वेळ आपण आपला अभ्यास करू, तितकाच वेळ त्या मेंदूला विसावा मिळाला पाहिजे. कमीत कमी अभ्यासात बदल झाला पाहिजे. कारण त्यामुळे मेंदूची ग्रहण क्षमता टिकून रहाते दहावी वारावीच्या परीक्षांमध्ये पहिले येणारे विद्यार्थी सांगतात की, अभ्यासाशिवाय मी अमुक अमुक खेळ खेळायचो. किया' मी अमुक अमुक छंद जोपासला छंद जोपासनं हा सुद्धा एक अभ्यासच असतो. त्या विद्यार्थ्यांचं सांगण वरोवरच असतं. कारण त्यामुळे त्यांच्या मेंदूला विसावा मिळालेला असतो. त्या विद्यार्थ्यांनी घेतलेला हा वसा आपण का घेऊनये? आपणही घ्यावा. फक्त उतायच नाही, मातायच नाही. आणि घेतला वसा टाकायचा नाही. मग ही आपल्या जीवनाची साठा उत्तराची कहाणी पांचा उत्तरी सुफळ संपूर्ण का होणार नाही.

आता विस्मृतीचं दुसरं कारण, स्मृतीक्षमता म्हणजे स्मरणशक्ती कमी असणं. त्यासाठी उपाय सांगता येतील. पहिला उपाय म्हणजे सकाळी झोपेतून उठल्यावर तो रात्री झोपेपर्यंत आपण काय काय केलं हे आठवून मनातल्या मनात त्याची उजळणी करणे. थोडक्यात स्मरण करणे, स्मरणशक्ती कमी होण्याची ही विकृती चाळीशी ओलांडलेल्या लोकांना विशेषतः पुरुषांमध्ये जास्त आढळते. अ. ल. भागवत यांनी लिहिलेल्या 'मोहिनीविद्या-साधना आणि सिद्धी' आणि या पुस्तकात स्मरणशक्ती वाढण्याचे काही उपाय सांगितले आहेत. ते थोडे अवघड आहेत. पण करून पाहायला हरकत नाही.

पेटत्या मेणबत्तीवर, अंधारात, साधारण पणे दोन-तीन मिनेटे मन एकाग्र करणे, आकाशतल्या एखाद्या ताऱ्यावर मन एकाग्र करणे

पांढऱ्या स्वच्छ कागदावर एखादा काळ्या रंगाचा स्पॉट काढून त्यावर मन एकाग्र करणे, पांढऱ्या स्वच्छ कागदावर काळ्या मोहरीचा दाणा चिटकवून त्यावर मन एकाग्र करणे, या सारखे ते उपाय आहेत. हेच उपाय का सांगितले असावेत याचा अभ्यास केल्यास एक गोष्ट लक्षात येते, ती म्हणजे या सर्व उपायात मन एकाग्र करण्यास सांगितले आहे. आपण पूर्वी केलेल्या एखाद्या गोष्टीमुळे ग्रहण-क्षमता कमी झालेल्या मेंदूला एकाग्रतेमुळे विसावा मिळतो त्यामुळे मेंदूची ग्रहण-क्षमता वाढते. पर्यायाने स्मरणशक्ती वाढते. याशिवाय शिर्षा-सन, शवासन यास रक्की योग्याने करूनही स्मरणशक्ती वाढवणे शक्य आहे.

विस्मृतीचं तिसरं कारण म्हणजे एखाद्या गोष्टीचा आपणास काहीही रस नसतो. याला कारण, त्या गोष्टीची क्लिष्टता. आपल्या गैरसमजुती आणि ती गोष्ट मिळवण्यासाठी आवश्यक असणारी शारीरिक, मानसिक किंवा बौद्धिक क्षमता आपल्याकडे नसणे. विस्मृती होण्याच्या या कारणावर मात्र निश्चित असा उपाय सांगता येणार नाही. मात्र तो उपाय, त्या गोष्टीचे स्वरूप, त्या गोष्टीसंबंधी आपल्या समजुती व आपली शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक क्षमता यावरून ठरवता येईल.

स्मरणशक्ती वाढवण्यासाठी सर्वसाधारणपणे एक उपाय सांगता येईल. तो म्हणजे आपण आपल्यापुढे असणारी समस्या समजून घेऊन त्या, अभ्यासातील समस्येचं, उत्तर शोधून, तयार करून त्या उत्तराचा सारांश लक्षात ठेवणे, परंतु या उपायाचा फायदा करून घेण्यासाठी आपले विचार किंवा आपलं उत्तर, आपल्याला समजेल अशा भाषेत लिहिलेलं असावं. कारण आपल्याला समजलेली भाषा आपल्या मेंदूला विनासायास ग्रहण करता येते. म्हणजेच लक्षात ठेवता येते. हा उपाय करण्यासाठी आपले विचार आपल्या भाषेतून मांडण्याची सवय आणि वाचनाचा छंद मात्र हवा.

थोडक्यात, वर सांगितलेल्या अनेक उपायांपैकी आपल्याला उपयुक्त असणाऱ्या आणि फायदा मिळवून देणाऱ्या उपायांनी आपली स्मरणशक्ती वाढविणे शक्य होईल, आणि का होणार नाही ?

\*

## हुं डा ब ली

ठोंबरे व्ही. एम्.  
११ वी आर्टस

११ महिन्यात ६९० मृत्यू ! ..... अशी एखादी जाड मथळ्याची बातमी जर वर्तमानपत्रात वाचली तर आपण फारसा विचार करणार नाही. कारण जो जन्माला यायचा त्याचा मृत्यू ठरलेला आहे. आणि आज आपल्या देशात तर शेकडो लोक मृत्यू-मुखी पडत आहेत. तर या आकड्यांचे काय महत्व, पण थांबा मंडळी! या मथळ्यामागील अज्ञात राहिलेली बातमी तुम्हाला कळली तर तुमच्यापैकी प्रत्येकाच्या अंगावर काटा उभा राहिल्या वाचून राहणार नाही. कारण ६९० मृत्यू आहेत एकट्या दिल्ली शहरात घडलेले !

नियतकालिक ८७-८८

व तात मला तसलं सांगू नको." आणि त्याला मी ढकलून दिलं. तो तळ्याच्या थराव्यावरून खात्री कोसळत गेलं. मी म्हणालो, "घडीला-घडीला सोंग घेतोस, म्ह्य कवा म्हतारी तर कवा म्हतारा" 'शाबास्स रं भूत, आता माझा मित्र झालास म्ह्यं.' गुमान माधारी जा. आणि सायकलवर टांग टाकली मनात म्हटलं आता काय खर नाही कारण सायकलचं कुत्रं कुठं लागतच ? म्हणून मी धावरलो म्हटलं आता आपली भूतानं पक्की जिखली म्हणून समजा. हातात बघतो तर साखळी तीर्थच विसरली म्हटलं आता आपण वेदम मार खाणार त्या भूताचा त्या भीतीने धावरून सायकल पळवू लागलो तशात मध्येच ब्रेक लागला आणि एक पलटी घेतली सायकलीलातर दाह पाजल्या-सारखंच झालं होतं काय ते कळेनाच अखेर परत सायकल उचलून धावू लागलो मागे पुढे पाहता पाहता पुढेच, एका मोठ्या 'दगडोवाला' कुर्णी तरी रस्त्यात ठेवले असल्यामुळे मी आणि सायकलीने ठेच खाल्ली आणि दोघेजणही उलथून पडलो. मी तमा आता विव्हळ लागलो होतो. म्हटलं एवढ्यात भूताने डाव साधून घेवू नये, आलं नी बसलं अंगावर म्हणजे काय? त्याचा नेम नाही. परत उठून पळत पळत निघालो तेवढ्यात एक ससा आडवा गेला म्हटलं आज आम-वस्या आहे त्यामुळेच ससा आणि मांजर अशी रूपे धारण करून भूत आपल्याला चकवणार.

सर्व कपडे आता ओली झाली होती म्हटलं ह्या भूतांच्या नादात पाऊस कधी पडला ते पण कळले नाही. परत आठवले तसं नाही घाम आलेला दिसतोच.

पुन्हा रस्त्यावरच तसा बसलेला मी पाहिला म्हटलं "आता हातात चैन नाही रं नाही तर बघीतलं. असतं तुझ्याकडे!" आणि मी त्याबरोबर धावरलो कारण त्याने टणकण उडुी मारली ती नेमकी सायकलच्या मडगाईवरून पलिकडे त्यामुळे मला परत भीती वाटू लागली.

## स्मृती वाढविणे आहे!

अवधूत कुलकर्णी

११ वी कला

रविवार. सकाळची वेळ. नऊ साडे नऊ झालेले. सोवळे ओवळे, आस्तिक, नास्तिक, म्हातारे, कोतारे, सारे "हम तुम्हे लाजवाब कहते हैं।" ही जाहिरात संपून रामायण केव्हा सुरू होतं? याकडे डोळे लावून बसलेले असतात. अहो, रोजचं रोजचं होमवकं विसरणारे आम्ही 'खरे विद्यार्थी' बुनि गेद, रामायण या सारख्या मालिका न विसरता पाहतो. ब्रिटीशांना उद्देखून गांधीजींचा सर्वात लोकप्रिय उद्-गार (आजच्या भाषेत सांगायचं तर सर्वात लोकप्रिय डायलॉग) "चले जाव" त्यांनी कुठे आणि केव्हा उच्चारला, हे सांगायला गांधीज-गारे आम्ही विद्यार्थी मात्र, "कहाँ हैं तेरा दिवाना?" हा डायलॉग अगदी न विसरता लक्षात ठेवतो. हे सारे डायलॉग आम्ही लक्षात ठेवतो, विसरतो म्हणजे नक्की काय करतो? तर आपण हे डायलॉग आपल्या स्मृतीत ठेवतो आता, स्मृती म्हणजे तरी काय! देव जाणे!

स्मृतीचा सरळ सरळ अर्थ होतो, स्मरण. स्मरण म्हणजे लक्षात

घरी पोहचलो सर्व मंडळी झोपी गेली होती. धाकटे बंधू गाढ झोपी गेलेली मी जेवण करीत होतो तेवढ्यात धाकट्या भावाच्या नाकाचा (घोरण्याचा) आवाज एकदम आला आणि गप्प झाला तसा मी एकदम पाटावरून खाली वसरलो. मला वाटले नक्की भूत असावं डोळ्याळा डोळा लागणे पण कशी बरी झोप लागली तेवढ्यात मला स्वप्न पडले स्वप्नात मला त्या भूताने साखळी दाखवली आणि त्याने ती मला म.रायला उगारली तेवढ्यात मी मोठ्याने आरोळी ठोकली "वाचवा-वाचवा SS ओ" लगेच धाकटा बंधू झोपेत धावरून ओर-डला- 'आई SS ओ' तेवढ्यात हा का ओरडतो म्हणून धाकटा ३ नंबरचा ही मोठ्याने ओरडला आता आम्ही तीवेजण जागे झालो होतो. मी म्हणालो, "ए, कजला झोपीत बोंवाळता रे, खात्यात दणकूनं, उगोच झोपेत चांबळत्यात. झोपा!" तेवढ्यात परत सगळे जण झोपली तेवढ्यात गण्याची आई आली म्हणाली अरे आज आमचा गण्या इकडे येणार होता. त्याबरोबर मो धावरलो. म्हटलं ते भूत नसून गण्याच होता काय? ती म्हातारी गवाबदा करून म्हणाली तो कुठं आढळला का? मी गप्प झालो म्हटलं, 'नाही' म्हातारी गेली आणि गण्या आला, मला म्हणाला कसकाय बरयका? मी म्हटलं काल काय सांगितलेल खरं हाय वा?

गण्या पाठ दाखवित पुढे सरला म्हणाला "मला माझ्या बाबानं अजून पाच बोट सूदीक लावली नाहूत" पण आता बव कसे बळ उमटलेत, मी म्हटलं, "आरे मी रात्री एक भूत पाहिले!" तेवढ्यात याने मला हात उगारला म्हणाला "घस माहीतय मला"



ठेवण्याची क्रिया ही झाली आपली गावठी व्याख्या. पण स्मरण म्हणजे नेमक काय? ते कुठं असत? कसं दिसतं?

तर स्मरण ही एक मानसशास्त्रीय संकल्पना आहे. मानसशास्त्र त्याला स्मृती या नावाने संबोधते. मानसशास्त्र स्मृतीची व्याख्या पुढीलप्रमाणे करते. "पूर्वी अनुभविलेल्या गोष्टींच्या सस्वारांची धारणा होणे व प्रतिमांच्या रूपाने त्यांची पुन्हा जाणीव होणे म्हणजे स्मृती होय." थोडक्यात काय? पूर्वी केलेल्या झालेल्या, घडलेल्या गोष्टींची पुन्हा आठवण करणे, म्हणजे स्मृती होय, हाच या व्याख्येचा अर्थ.

काही जणांना नेहमी विस्मृती होत असते त्यांना ती स्वयंच- झालेली असते. मग डॉक्टरांचा उबरा झिजवावा लागतो. पण वैद्यकीय उपाय न करतासुद्धा स्मृती वाढवता येते. निदान तशी शक्यता आहे. पण त्यासाठी विस्मृती का होते याची कारणं शोधली पाहिजेत. अरे हो, हो! मला माहित आहे की ती कारणं शोधण्याइतका

तुळजाराम चतुर्वेद महाविद्यालय, वार मती

वेळ तुमच्याकडे नाही. आणि नको त्या गोष्टींची कारणं शोधायला तुम्ही संशोधकपण नाही. पण ती कारणं शोधून काढण्याचं कारणच नाही. ती पूर्वीच शोधली गेली आहेत. आपण फक्त समजून घ्यायची- बस, विस्मृतीची सवय मोडलीच म्हणून समजा! विस्मृतीचं पहिलं कारण म्हणजे, अति तिथं माती. काही विद्यार्थी, विशेषतः १० ली १२ वीचे विद्यार्थी जास्तीत जास्त गुण मिळविण्याच्या इर्षेनं खूप अभ्यास करतात. इतका की, त्या अति अभ्यासामुळे त्या विद्यार्थी यांचा मेंदू काम नीट करत नाही. काय होतं, सारखा सारखा अभ्यास वरून त्या विद्यार्थ्यांच्या मेंदूची ग्रहण क्षमता कमी कमी होत जाते. आता, या कारणामुळे ज्यांना विस्मृती होते, त्यांनी ठराविक वेळीच अभ्यास केला पाहिजे. साधारणतः जितका वेळ आपण आपला अभ्यास करू, तितकाच वेळ त्या मेंदूला विसावा मिळाला पाहिजे कमीत कमी अभ्यासात बदल झाला पाहिजे. कारण त्यामुळे मेंदूची ग्रहण क्षमता टिकून रहाते दहावी बारावीच्या परीक्षांमध्ये पहिले येणारे विद्यार्थी सांगतात की, अभ्यासाशिवाय मी अमुक अमुक खेळ खेळायचो. किंवा मी अमुक अमुक छंद जोपासला छंद जोपासनं हा मुद्दा एक अभ्यासच असतो. त्या विद्यार्थ्यांचं सांगण बरोबरच असतं. कारण त्यामुळे त्यांच्या मेंदूला विसावा मिळालेला असतो. त्या विद्यार्थ्यांनी घेतलेला हा वसा आपण का घेऊनये? आपणही घ्यावा. फक्त उतायच नाही, मातायचं नाही. आणि घेतला दसा टाकायचा नाही. मग ही आपल्या जीवनाची साठा उत्तराची कहाणी पांचा उत्तरी सुफळ संपूर्ण का होणार नाही.

आता विस्मृतीचं दुसरं कारण, स्मृतीक्षमता म्हणजे स्मरणशक्ती कमी असणं. त्यासाठी उपाय सांगता येतील. पहिला उपाय म्हणजे सकाळी झोपेतून उठल्यावर तो रात्री झोपेपर्यंत आपण काय काय केलं हे आठवून मनातल्या मनात त्याची उजळणी करणे. थोडक्यात स्मरण करणे, स्मरणशक्ती कमी होण्याची ही विकृती चाळीशी ओलांडलेल्या लोकांना विशेषत पुरुषांमध्ये जास्त आढळते. अ. ल. भागवत यांनी लिहिलेल्या 'मोहिनीविद्या-साधना आणि सिद्धी' आणि या पुस्तकात स्मरणशक्ती वाढण्याचे काही उपाय सांगितले आहेत. ते थोडे अवघड आहेत. पण करून पाहायला हरकत नाही.

पेटत्या मेणबत्तीवर, अंधारात, साधारण पणे दोन-तीन मिनेटे मन एकाग्र करणे, आकाशतल्या एखाद्या ताऱ्यावर मन एकाग्र करणे

## हुं डा ब ली

ठोंबरे व्ही. एम.

११ वी आर्टस

११ महिन्यात ६९० मृत्यू! ..... अशी एखादी जाड मथळ्याची बातमी जर वर्तमानपत्रात वाचली तर आपण फारसा विचार करणार नाही. कारण जो जन्माला यायचा त्याचा मृत्यू ठरलेला आहे. आणि आज आपल्या देशात तर शेकडो लोक मृत्यू-मुखी पडत आहेत. तर या आकड्यांचे काय महत्व, पण थांबा मंडळी! या मथळ्यामागील अज्ञात राहिलेली बातमी तुम्हाला कळली तर तुमच्यापैकी प्रत्येकाच्या अंगावर काटा उभा राहिल्या वाचून राहणार नाही. कारण ६९० मृत्यू आहेत एकट्या दिल्ली शहरात घडलेले!

नियतकालिक ८७-८८

पांढऱ्या स्वच्छ कागदावर एखादा काळ्या रंगाचा स्पॉट काढून त्यावर मन एकाग्र करणे, पांढऱ्या स्वच्छ कागदावर काळ्या मोह-रीचा दाणा चिटकवून त्यावर मन एकाग्र करणे, या सारखे ते उपाय आहेत. हेच उपाय का सांगितले असावेत याचा अभ्यास केल्यास एक गोष्ट लक्षात येते, ती म्हणजे या सर्व उपायात मन एकाग्र करण्यास सांगितले आहे. आपण पूर्वी केलेल्या एखाद्या गोष्टीमुळे ग्रहण-क्षमता कमी झालेल्या मेंदूला एकाग्रतेमुळे विसावा मिळतो त्यामुळे मेंदूची ग्रहण-क्षमता वाढते, पर्यायाने स्मरणशक्ती वाढते याशिवाय शिर्षा-सन, श्वासन यास रक्ती योगाने करूनही स्मरणशक्ती वाढवणे शक्य आहे.

विस्मृतीचं तिसरं कारण म्हणजे एखाद्या गोष्टीचा आपणास काहीही रस नसतो. याला कारण, त्या गोष्टीची क्लिष्टता. आपल्या गैरसमजुती आणि ती गोष्ट मिळवण्यासाठी आवश्यक असणारी शारीरिक, मानसिक किंवा बौद्धिक क्षमता आपल्याकडे नसणे. विस्मृती होण्याच्या या कारणावर मात्र निश्चित असा उपाय सांगता येणार नाही. मात्र तो उपाय, त्या गोष्टीचे स्वरूप, त्या गोष्टीसंबंधी आपल्या समजुती व आपली शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक क्षमता यावरून ठरवता येईल.

स्मरणशक्ती वाढवण्यासाठी सर्वसाधारणपणे एक उपाय सांगता येईल. तो म्हणजे आपण आपल्यापुढे असणारी समस्या समजून घेऊन त्या, अभ्यासातील समस्येचं, उत्तर शोधून, तयार करून त्या उत्तराचा सारांश लक्षात ठेवणे, परंतु या उपायाचा फायदा करून घेण्यासाठी आपले विचार किंवा आपलं उत्तर, आपल्याला समजेल अशा भाषेत लिहिलेलं असावं. कारण आपल्याला समजलेली भाषा आपल्या मेंदूला विनासायास ग्रहण करता येते. म्हणजेच लक्षात ठेवता येते. हा उपाय करण्यासाठी आपले विचार आपल्या भाषेतून मांडण्याची सवय आणि वाचनाचा छंद मात्र हवा.

थोडक्यात, वर सांगितलेल्या अनेक उपायांपैकी आपल्याला उपयुक्त असणाऱ्या आणि फायदा मिळवून देणाऱ्या उपायांनी आपली स्मरणशक्ती वाढविणे शक्य होईल, आणि का होणार नाही ?



हितेच्या छळाची वातमी साचल्याशिवाय होत नाही यापूर्वीही हे असे प्रकार होत असतील, पण आज मात्र अनेक संघटना यासंबंधी आवाज उठवू लागल्याने व लोकातही जागृती होऊ लागली आहे.

हुंडा म्हणजे काय ? असा प्रश्न विचारला असता सर्व साधारणपणे लग्नाच्यावेळी नवरींमुलींच्या घरच्यांनी जाताना तिला दिलेल्या काही वस्तु किंवा पैसे असे म्हणता येईल. यासर्व चिज वस्तूना हुंडा असे म्हटले जाते. आजकालच्या काळात हुंडा हा दोग्ही बाजूंनी घासाघीस करून ठरविलेला सौदा आहे. व-याच लग्नामध्ये हुंडा हा उघड उघड किंवा छुपेपणाने महत्वाचा भाग आहे.

परंपरेनुसार खर तर आपल्या देशात स्त्रिला महान शक्ती देवता असे संबोधिले जाते पण प्रत्यक्षात मात्र याच देवतांची जाळून होळी केली जाते. हुंडावळीचा हा प्रश्न आपल्या सर्व समाजाला, माणुसकीला लागलेला एक भिषण असा कलंक आहे या सर्व गोष्टी-मधून आपल्या देशात स्त्रिची तिच्या हक्कांची होणारी पायमल्लीच दिसून येते. स्त्रिचे समाजातील गोत्र स्थानच दृष्टोपत्तीस येते या हुंड्याने अनेक संसारात वादळे निर्माण केली आहेत तर अनेक संसार उध्वस्त केले आहेत. यामुळे आज सर्व देशभर हजारो स्त्रियांचा शारीरिक मानसिक छळ होत आहे

विदर्भ .... महात्मा गांधी आणि विनोबा भावे यासारख्यांच्या राहण्याने प.वन झालेल्या विभाग, त्याच विभागात असे एवढे अत्याचार व्हावेत ही फार दुर्दैवाची गोष्ट आहे. हे मृत्यू प्रामुख्याने अपराधी मृत्यू, आत्महत्या, खून असे विभाग पडले आहेत. हे सर्व मृत्यू चार प्रकारे होऊ शकतात (१) जाळून (२) विष घेऊन (३) बुडून (४) गळा दावून, ज्या स्त्रिया मृत्यूमुखी पडल्या त्या सर्वांचे लग्न होऊन पाच ते सहा वर्षे झाली आहेत.

प्रत्येक स्त्रिला आपण कधी ना कधी वधूवस्त्र, स्थावी व जत-ग जत आपल्या जीवनाच्या जोडीदाराच्या घरी भरलेले माप उलटून प्रवेश करावा आणि सुखासमाधानाने संसार करावा असे स्वप्न पडत असते. मग कधीतरी हे स्वप्न सत्य होत त्या लग्नमंडपातील विवाह वेसीवर होमकुंडातील अग्नीला साक्ष ठेवून ती सोनपावळाने जोडी-दाराच्या घरी प्रवेश करते पण थोड्याच दिवसात त्या होम-कुंडातील पवित्र ज्वाला तिचाच घात घेऊन, तिच्या त्या संसार वेळीवर बळी पडतात. तेव्हा उरते फक्त विषण्णतेची धग आणि असह्य, पंड असे आई-वडिलांचे अश्रू.

आज आम्ही, आमचा समाज सुशिक्षित, सुधारलेला आहे असे आपण छाती ठोक पणे सांगतो पण खरोखरच अशी परिस्थिती आहे का ? पण याच उत्तर आज तरी या स्त्रिला अत्याचार आणि हुंडा-वळीच्या संदर्भात दुर्दैवाने "नाही" असच द्याव लागेल, आम्ही शिक्षणाच्या जोरावर अधिक चांगल्या नोकऱ्या पटकवितो. आमच्या मागील आमच्या मागील पिढीपेक्षा आम्ही अधिक चैतन्य, सुखात राहत अ होत. स्वतः कष्ट न करता पैसे मिळविण्याचा एक सहज, सुंदर आणि सोपा मार्ग म्हणजे हुंडा ! आपल्या हिंदू धर्मात प्रथम पासूनच स्त्रिया आणि दलिताना क्षुद्र ठरविले आहे. आज जरी आपण स्त्रि-पुरुष समानतेच्या गप्पा मारत असलो तरी फक्त तोंडानेच प्रत्यक्षात मात्र ते आचरणात आणत नाहीत.

अरे एवढी शिकले सवरलेले सुसंस्कृत मुलगी तुमच्या घरात म्हणजे म्हणून घरत येत आहे त्याचा आनंद न मानता लग्नामध्ये

कोणी कोणाला किती दिल आणि कमी कस दिल हे परत परत गीर-वत वसायला बरं, एवढ्यातच ते थांबले आहेत काय ? पण नाही यापुढे सुरु होतात सर्व प्रकार, यात प्रथम टोचून बोलणे, खर तर लग्नात हुंडा कमी मिळाला, मानपान झाला नाही अस असल तरी पुढे जन्मभर ती मुलगी नोकरी करून तो पैसा तुमच्याच घरात भर-णार आहे ना. का तो पैसा आई-वडिलांच्या घरी देणार आहे ? पण एवढे समजण्याएवढी अवकल असेल तर ती नवऱ्याकडील माणस कसली ?

स्त्रियांसुद्धा स्वतःवर अत्याचार होत असताना गप्प राहतात कारण हा समाजच असा आहे की, त्यात अन्न जाते आपल्या अन्न नुकसानीच्या भितीने अनेकवेळा स्त्रिया आपल्यावर झालेले अत्याचार सांगायला पुढे येत नाहीत. त्यामुळेच न्यायधिशही आमच्यापुढे व-याच वेळा पुराधा येत नाही अस कबूल करतात ही ब्रूटी, उणीव दुर कर-ण्यासाठी संपूर्ण समाजाचेच परिवर्तन आवश्यक आहे स्त्री ही केवळ उपभोग्य वस्तु नाही किंवा भोगदारी नाही हे स्त्रियांना जाणून घ्यायला हवं. आणि पुरुषांना समाजाला समजावून देण्याचं धैर्य ही अंगात वांधून घेतली पाहिजे पण हे समाज प्रबोधन होणे अत्यंत जिकीरीच कठीण काम आहे. आज मात्र अनेक सेवाभावी संस्था-व्यवर्ती हे कार्य करण्यासाठी पुढे येताना दिसतात या आपल्या मुंबईतही एक असाच माणूस गेला, कित्येक वर्षे हे कार्य सेवाभावी वृत्तीने अपेक्षा न वाळगता करतो आहे त्याचे नाव आहे श्री. दा. व. उर्फ मामासाहेब कुलकर्णी.

वहतेकवेळा स्त्रियांना जाळून मारले जाते, कारण तो सर्वांत व बीन कटकटीचा मार्ग आहे. शेजारीपाजरी पण कशाला बुवा कोर्ट-कचेरीच चक्कर म्हणून गप्प बसतात. आणि सर्वात महत्वाचा असतो दृष्टीकोन ती वाईतर मेली आता कशासाठी हे सर्व आपल्या-समोर हजारो स्त्रिया दरवर्षी मरताहेत आणि हातावर हात धरून मुके उभे आहेत ?

न ही, आपल्याल हे सर्व बदलायला हवे यासाठी जिच्यावर अत्याचार होत आहेत. तिला त्या स्त्रिया समजतात काय स्थान आहे याची जाणिव धरून दयाला हवीच "मुलगी झाली हो" असा टाहो जन्मल्याबरोबर फोडला जातो आणखी एक बोजा आहेस. धोंडा आहे हे तिच्या मनावर ठसवले ज त. केवळ ती एक मुलगी आहे म्हणून तिला कधी कधी मारून टाकले जाते. तिला सतत जाणीव करून दिली जाते की, वाईत तुझ्या लग्नाची आतापासूनच आई-वापांना चिंता पडली आहे. आणि सर्वात महत्वाची आणि आश्चर्याची गोष्ट म्हणजे हे बोलणाऱ्या सर्व बायकाच असतात बर ! लग्नातही तिला केवळ अस्तित्व नसते. ती, ती स्वतः म्हणून कधीच नसते, तिला मी पण नसतेच, पण आता हे मात्र कुठतरी थांबवायला हव. यासाठी स्त्रियांनीच संघटीत व्हायला पाहिजे.

सर्वात महत्वाचा मार्ग अनुसरायचा आहे तिच्यावर अत्याचार होत आहेत तिनं उद्याचा सुर्योदय पाहण्यासाठी तिन आज रात्री घराचा उंबरठा ओलांडून घराबाहेर पडल पाहिजे. समाजाच्या दुष्टत्वाची पर्वा न करता, खंबीरपणे आपल्या पायावर उभे राहण्यासाठी आता "बळीची बकरी" बणणार नाही हा निश्चय कायम ठेवून, "जान हँ तो नहान है" हे ध्यानात ठेवून तिन उद्या जगण्यासाठी घराबाहेर पडल पाहिजे.

## कार्यवृत्तांत

### जिमखाना-

वरिष्ठ महाविद्यालयाप्रमाणेच कनिष्ठ महाविद्यालयाने देखील क्रीडा क्षेत्रात आपली उज्वल यशाची परंपरा कायम राखली आहे. कनिष्ठ महाविद्यालयाच्या स्पर्धा पावसाळी सत्र व हिवाळी सत्र अशा विभागात घेतल्या जातात पावसाळी सत्रातील स्पर्धा बालचंदनगर येथे होवून वारामती गटातील खालील स्पर्धेत आमच्या महाविद्या-लयाच्या संघाने अजिंक्यपद संपादिले.

(१) कबड्डी (मुली) वारामती गटाचा झालेल्या आंतर शालेय कबड्डी (मुली) च्या चुरशीच्या अंतीम स्पर्धेत वर्धमान विद्यालय बालचंदनगर या संघाचा दणदणीत पराभव करून अजिंक्यपद संपादिले याचे सर्व श्रेय कु. अत्रे, कु. मोकाशी, कु. मुळे व कु. गुजर भगिनी यांच्या चढायांना व कु. गुजर अपिता व आनंदी या भगिनीच्या उत्कृष्ट पकडीला आहे. पुणे येथे झालेल्या पुणे जिल्हा आंतर शालेय कबड्डी (मुली) स्पर्धेसाठी आमच्या महाविद्यालयाच्या कबड्डी (मुली) संघाची निवड होवून पुणे जिल्हा कबड्डी (मुली) स्पर्धेत उपविजेतेपद संपादिले.

(२) टेबलटेनिस (मुले) वारामती गटातील झालेल्या आंतर शालेय स्पर्धेत टेबलटेनिस (मुले) हा संघ उपविजयी ठरला त्याच प्रमाणे हिवाळी सत्रातील क्रीडा स्पर्धा आमच्याच महाविद्या-लयाच्या क्रीडांगणावर आयोजित करण्यात आल्या होत्या वारामती गटातील स्पर्धेत आमच्या महाविद्यालयाने मैदानी स्पर्धेत जनरल चॅम्पियनशिप मिळविली प्रामुख्याने खालील खेळाडू यशस्वी झाले.

- १) श्री. पवार २०० मी. धावणे प्रथम क्रमांक
- २) श्री. पन्हाळे ए. आर, भालाफेक प्रथम क्रमांक
- ३) कु. मोरे व्ही. पी., ८०० मी. धावणे प्रथम क्रमांक
- ४) कु. कदम एल. पी., उंचउडी, लांबउडी प्रथम क्रमांक
- ५) कु. जोशी व्ही. सी., ४०० मी. धावणे प्रथम क्रमांक
- ६) श्री. झगडे एस. पी., हातोडा फेक प्रथम क्रमांक

चरील सर्व खेळाडूंची पुणे येथे झालेल्या पुणे जिल्हा आंतर शालेय मैदानी स्पर्धेसाठी निवड होवून या स्पर्धेत श्री. झगडे एस. पी. याने हातोडा फेक मध्ये प्रथम क्रमांक मिळविला व पुढे पुणे येथे झालेल्या आंतर शालेय विभागीय स्पर्धेसाठी निवड झाली. या सर्व खेळाडूंचे हार्दिक अभिनंदन !

प्रा. एस. बी. इंगवले  
शारीरिक शिक्षण विभाग  
प्रमुख

### प्रगतीची वाटचाल-

#### परीक्षांचे निकाल मार्च १९८७ -

- १२ वी - आर्टस - ६२.७२
- १२ वी - सायन्स - ७४.२७
- १२ वी - कॉमर्स - ५९.०७

नियतकालीका १९७७-८८

### विद्यार्थी संख्या -

| वर्ग                   | तुकड्या | एकूण विद्यार्थी |
|------------------------|---------|-----------------|
| ११ वी - आर्टस          | ३       | २७१             |
| ११ वी - सायन्स         | ३       | २५१             |
| ११ वी - कॉमर्स         | ३       | २६१             |
| १२ वी - आर्टस          | ३       | २५८             |
| १२ वी - सायन्स         | २       | १८०             |
| १२ वी - कॉमर्स         | ३       | २०२             |
| एकूण विद्यार्थी संख्या |         | १४२३            |

### स्नेहसंमेलन-

या वर्षी कनिष्ठ महाविद्यालयाचे स्नेहसंमेलन दि. १०-११-१२ जानेवारी १९८८ रोजी अत्यंत उत्साहाने साजरे झाले. विद्यार्थी विद्यार्थिनींनी विविध प्रकारचे सांस्कृतिक कार्यक्रम सादर केले. तसेच वातमीपत्र व फिशपांड वाचन व अल्पोपहर हे कार्यक्रम सादर झाले. आर्केस्ट्रा बहारदार कार्यक्रम झाला. याशिवाय फनिगेम्स, फनफेअर' रांगोळी प्रदर्शन हे कार्यक्रम आयोजित करण्यात आले. होते. एकंदरीत तीन दिवसांचा हा सोहळा खेमेळीच्या वतावरणात पार पडला.

प्रा. ए. बी. भगटे  
प्रमुख



### सूची विभाग -

१२ वी परीक्षा, मार्च १९८७ मध्ये प्रथम श्रेणीत उत्तीर्ण झालेल्या विद्यार्थ्यांची गुणानुक्रमे सूची -

### १२ वी आर्टस -

| अ. नं. | मेरीट ऑर्डर नं | विद्यार्थ्यांचे नांव   |
|--------|----------------|------------------------|
| १)     | १              | पाटील वसुमती गुजाबराब  |
| २)     | २              | दराडे वामन महादेव      |
| ३)     | ३              | दोशी वैशाली भारतलाल    |
| ४)     | ४              | केकाण महादेव बापू      |
| ५)     | ५              | शहा किशोरी सुहास       |
| ६)     | ६              | क्षीरसागर भगवान रंभाजी |
| ७)     | ७              | पठाण हसेनखान हुसनखान   |
| ८)     | ८              | ताकवणे आशा राजाराम     |
| ९)     | ९              | मोरे आनंद नामदेव       |
| १०)    | १०             | पवार बंडू नारायण       |
| ११)    | ११             | खोत लता विठ्ठल         |
| १२)    | ११             | वाघ राजकुमार बबन       |
| १३)    | १२             | साळुंके संगीता मोहन    |
| १४)    | १३             | आटोळे अशोक तानाजी      |
| १५)    | १३             | जाधव सुनील सदाशिव      |

| अ. नं. | मेरिट ऑर्डर नं. | विद्यार्थ्यांचे नाव          | अ. नं. | मेरिट ऑर्डर नं. | विद्यार्थ्यांचे नाव         |
|--------|-----------------|------------------------------|--------|-----------------|-----------------------------|
| १६)    | १३              | कुलकर्णी शिरीपकुमार वाळकृष्ण | ३१)    | २९              | डवरे दत्त महादेव            |
| १७)    | १३              | पवार स्वाती गोपाळ            | ३२)    | ३०              | ठांबरे प्रसन्नकुमार श्रीपाद |
| १८)    | १४              | तावरे सरिता सुधाकर           | ३३)    | ३१              | तांबे वंदना विश्वास         |
| १९)    | १५              | चांदगुडे सुनील विनायक        | ३४)    | ३२              | धापटे रामदास जानदेव         |
| २०)    | १६              | सय्यद वशीर अंबीर             | ३५)    | ३३              | भुजवळ भारत लिबाजी           |
| २१)    | १७              | परकाळे चंद्रकांत मधुकर       | ३६)    | ३४              | वाडकर सारंग शरद             |
| २२)    | १८              | गडेकर तात्यावा किसन          | ३७)    | ३५              | शहा वैशाली कुलभूषण          |

१२ वी सायन्स -

| अ. नं. | मेरिट ऑर्डर नं. | विद्यार्थ्यांचे नाव        | अ. नं. | मेरिट ऑर्डर नं. | विद्यार्थ्यांचे नाव   |
|--------|-----------------|----------------------------|--------|-----------------|-----------------------|
| १)     | १               | चाहरे अतुल ज्ञानेश         | ४०)    | ३७              | जुगणे सुनिता मोतीलाल  |
| २)     | १               | निगडे संजीवनी त्रिवकराव    | ४१)    | ३८              | पादकुले वंदना पोपटराव |
| ३)     | २               | झोपे संजय ज्ञानेश्वर       | ४२)    | ३८              | शहा श्रेणीक धनपाल     |
| ४)     | ३               | शहा स्वरुपाराणी राजकुमार   |        |                 | कोठाडिया अमृत अनिल    |
| ५)     | ४               | नाडगीर दत्तात्रय भास्कर    |        |                 | कुंभार गोरख साधू      |
| ६)     | ५               | दोशी मयुरा जवाहर           |        |                 |                       |
| ७)     | ६               | मोहिते अंजली शिवाजीराव     |        |                 |                       |
| ८)     | ७               | दोशी अभिजीत सुभाष          |        |                 |                       |
| ९)     | ८               | नायगांवकर स्वाती विजयकुमार |        |                 |                       |
| १०)    | ९               | वनसुडे सुपमा विठ्ठल        |        |                 |                       |
| ११)    | १०              | कुलकर्णी राहुल मोरेश्वर    |        |                 |                       |
| १२)    | ११              | भोयरेकर विनायक विष्णू      |        |                 |                       |
| १३)    | १२              | निवाळकर कार्तिकी विलास     |        |                 |                       |
| १४)    | १३              | वनसोडे ज्योत्सना रोहीदास   |        |                 |                       |
| १५)    | १४              | दंडवते योगेश हरिभाऊ        |        |                 |                       |
| १६)    | १५              | छाजेड तिलोत्तमा रमेश       |        |                 |                       |
| १७)    | १६              | पुराणिक केदार सुर्यकान्त   |        |                 |                       |
| १८)    | १७              | शहा सुगंधा जवाहरलाल        |        |                 |                       |
| १९)    | १८              | शहा तारा तेजपाल            |        |                 |                       |
| २०)    | १९              | खोत अंकुश कृष्णा           |        |                 |                       |
| २१)    | २०              | वकिल मंजुषा व्यंकटराव      |        |                 |                       |
| २२)    | २१              | मोरे मिलिंद बाबुराव        |        |                 |                       |
| २३)    | २२              | धोगरे सुरेंद्र नामदेवराव   |        |                 |                       |
| २४)    | २३              | वोरावके तानाजी बाळासाहेब   |        |                 |                       |
| २५)    | २४              | धोरात सुवर्णा दिनकर        |        |                 |                       |
| २६)    | २५              | अगवणे संजय दशरथ            |        |                 |                       |
| २७)    | २६              | घालपे मनिषा तुकाराम        |        |                 |                       |
| २८)    | २७              | भोई बाबू आनंदराव           |        |                 |                       |
| २९)    | २८              | लोणकर दत्तात्रय रामचंद्र   |        |                 |                       |
| ३०)    | २८              | ओहोळ मनिषा तुकाराम         |        |                 |                       |

१२ वी कॉमर्स -

| अ. नं. | मेरिट ऑर्डर नं. | विद्यार्थ्यांचे नाव    | अ. नं. | मेरिट ऑर्डर नं. | विद्यार्थ्यांचे नाव   |
|--------|-----------------|------------------------|--------|-----------------|-----------------------|
| १)     | १               | दुगुम मनिषा विठ्ठल     | १)     | १               | शहा वैशाली कुलभूषण    |
| २)     | १               | पवार सोमेश्वर रामचंद्र | २)     | १               | जुगणे सुनिता मोतीलाल  |
| ३)     | २               | गोसावी विजया विनायक    | ३)     | २               | पादकुले वंदना पोपटराव |
| ४)     | ३               | गोसावी गौरी रंगनाथ     | ४)     | ३               | शहा श्रेणीक धनपाल     |
| ५)     | ४               | वनकर संगीता वसंतराव    | ५)     | ४               | कोठाडिया अमृत अनिल    |
| ६)     | ५               | फडतरे मनोज दौलतराव     | ६)     | ५               | कुंभार गोरख साधू      |
| ७)     | ५               | उंडे मनोज लक्ष्मण      |        |                 |                       |
| ८)     | ६               | रंधवे हेमत दगडोवा      |        |                 |                       |
| ९)     | ७               | खडके मिलिंद मधुकर      |        |                 |                       |
| १०)    | ८               | सोमाणी सदीप रमणलाल     |        |                 |                       |
| ११)    | ९               | सावळे अनिल सदाशिव      |        |                 |                       |
| १२)    | ९               | साळवे संजय लक्ष्मण     |        |                 |                       |
| १३)    | १०              | देशपांडे प्रविण विनायक |        |                 |                       |
| १४)    | ११              | कुंभार भिमाजी कुंडलीक  |        |                 |                       |
| १५)    | ११              | भोसले मंगल अर्जुन      |        |                 |                       |
| १६)    | १२              | भापकर किशोर हरिभाऊ     |        |                 |                       |
| १७)    | १३              | पांडकर सविता विजय      |        |                 |                       |
| १८)    | १४              | पठाण रफिक बवन          |        |                 |                       |
| १९)    | १५              | शिंदे लक्ष्मण निवृत्तो |        |                 |                       |
| २०)    | १६              | शितोळे सुजाता नंदकुमार |        |                 |                       |
| २१)    | १७              | शेख सकेरा हसनभाई       |        |                 |                       |
| २२)    | १८              | धायतोडे प्रमोद बवन     |        |                 |                       |
| २३)    | १९              | काटे सविता विठ्ठल      |        |                 |                       |
| २४)    | २०              | चव्हाण पांडुरंग गणपत   |        |                 |                       |

शिष्यवृत्ती धारक विद्यार्थ्यांची सूची सन १९८७-८८

|                                   |              |
|-----------------------------------|--------------|
| १) राष्ट्रीय गुणवत्ता शिष्यवृत्ती |              |
| १) दराडे राजेंद्र श्रीरंग         | ११ वी सायन्स |
| २) गायकवाड संजीवकुमार सुदामराव    | ११ वी सायन्स |
| ३) कुलकर्णी वंदना मोहनराव         | ११ वी सायन्स |
| ४) यादव अनिल वाळासाहेब            | ११ वी सायन्स |
| ५) वाघ मंजुषा रामचंद्र            | १२ वी सायन्स |

२) राष्ट्रीय गुणवत्ता शिष्यवृत्ती सर्टिफिकेट व पारितोषिक

१) पाटील राजवर्धन वाळासाहेब

३) राष्ट्रीय शिष्यवृत्ती ( जिल्हा परिषद पुणे )

१) खुडे दिलीप वामन

२) मोरे वैशाली जगन्नाथ

११ वी सायन्स

१२ वी सायन्स

४) आर्थिक दृष्ट्या मागासलेल्या विद्यार्थ्यांना मिळणारी शिष्यवृत्ती

१) पवार बाळू मच्छिंद्र

२) वणवे अर्जुन शिवाजी

३) भगत सुरेश परशुराम

४) जगताप गणेश सोमनाथ

५) भोसले अनिल पांडुरंग

६) नेवसे राजेंद्र रामचंद्र

७) थोपटे अमर सजेंद्राव

८) झारगड अशोक साहेबराव

९) यमगर भारत दिनकर

१०) वाघमोडे प्रविण विघ्नहर

११) भापकर पतंगराव सोमनाथ

१२) रसाळ शरद मानसिंग

१३) तट्ट प्रसाद मकरंद

१४) खारतोडे धनंजय केरवा

१५) खारतोडे बाळू सोनवा

१६) चांदगुडे किसन रामचंद्र

१७) होरगे मनोज केशवराव

१८) शिंदे राजेंद्रकुमार शिवाजीराव

१९) गुजर आनंदी सुरेश

११ वी आर्ट्स

११ वी सायन्स

१२ वी आर्ट्स

१२ वी आर्ट्स

१२ वी आर्ट्स

१२ वी सायन्स

१२ वी सायन्स

१२ वी कॉमर्स

५) गणेश मनोहर व शंकरराव गणेश दाते चॅरिटेबल ट्रस्ट (पुणे) स्कॉलरशिप

१) लोले दिनेश राजाराम

२) विरबले किरण सिद्धलिंग

३) कुलकर्णी वासंती दत्तात्रय

११ वी कॉमर्स

११ वी सायन्स

१२ वी कॉमर्स

विशेष पारितोषिके

१) कॉलेज पारितोषिके

१) घोरपडे अनिता वसंतराव

२) जाधव विष्णू मास्ती

३) जगताप हेमलता फतेसिंग

४) पाटील वसुमती गुलाबराव

५) चाहरे अतुल ज्ञानेश

निगडे संजीवनी त्रिवकराव

६) दुगुम मनिषा विठ्ठल

पवार सोमेश्वर रामचंद्र

११ वी कला प्रथम

११ वी शास्त्र प्रथम

११ वी वाणिज्य प्रथम

१२ वी कला प्रथम

१२ वी शास्त्र प्रथम

१२ वी शास्त्र प्रथम

१२ वी वाणिज्य प्रथम

१२ वी वाणिज्य प्रथम

२) डॉ. एम्. ई. गवसणे पारितोषिके.-

(१२ वी शास्त्र परिक्षेत फिजिक्स केमिस्ट्री, मॅथेमॅटिक्स व बायॉलाजी या चार विषयात सर्वोच्च गुण)

नियतकालिक ८७-८८

|   |                |          |
|---|----------------|----------|
| १) नाडगीर भास्कर दत्तात्रय                |                | रु. ७५१- |
| २) वनसुडे सुपमा विठ्ठल                    |                | रु. ६०१- |
| ३) कथाकथन स्पर्धा पारितोषिके              |                |          |
| १) कुलकर्णी अवधुत सखाराम                  | ११ वी कला      | रु. २०१- |
| २) चावरे उमेश मुहास                       | ११ वी शास्त्र  | रु. १५१- |
| ४) काव्यवाचन स्पर्धा पारितोषिके           |                |          |
| १) कुलकर्णी अवधुत सखाराम                  | ११ वी कला      | रु. २०१- |
| ५) "अस्मितादर्शन" पारितोषिक               |                |          |
| १) कुलकर्णी अवधुत सखाराम                  | ११ वी कला      | रु. १५१- |
| ६) स्नेहसम्मेलन पारितोषिके                |                |          |
| १) बाबलादी राजेश लक्ष्मीकांत (ब्रेक डांस) | ११ वी. शास्त्र | रु. १५१- |
| २) कुलकर्णी जयश्री वसंत (रांगोळी)         | ११ वी वाणिज्य  | १५१-     |
| ३) आगवणे मंदाकिनी दशरथ (रांगोळी)          | १२ वी वाणिज्य  | १११-     |
| ४) गायकवाड सुनिता भगवान (हस्तकला)         | १२ वी कला      | १५१-     |

### ० सावरकरांची आंदमानातून सूटका ०

इतक्यात पाहरेकऱ्याने कळविले "साहेब आता हैं आपको ले जानेवाली शिपायीओंकी तुकडी भी आती है"

आम्ही उठलो. मनास एक प्रकारचे पवित्र समाधान वाटू लागले की दहा वर्षे अंदमानाच्या या कारागृहात आशेच्या थडग्यात पुरलेले राहूनही ज्या दिवशी ते कारागृहाचे दार आता दहा बारा वर्षांनी पुन्हा उघडणार तेव्हा त्या शेवटच्या दिवशीचे आमचे शेवटचे कृत्यही तेच होते की, जे करण्याचे व्रत वयाच्या अकराव्या वर्षी अंगिकारले होते- हिंदी तरुणास जी दीक्षा देण्यासाठी त्या कारागृहाचे दाराआत पाय टाकावा लागला त्या कारागृहाचे दाराबाहेर आज दहा वर्षांनी पाय पडत असता हिंदी तरुणास तीच दीक्षा देताना उच्चारले जाणारे

"एक देव एक देश एक आशा  
एक जाति एक जीव एक भाषा"

तेच ते शब्द आमच्या ओठावर होते !

आम्हांस आणि आमच्या बंधूस फाटकात उभे करण्यात आले. बंदिपालने आमच्या हिंदुस्थानात नेण्यासाठी शिपायाच्या पहाऱ्यात दिले. "बेडी घालण्याची आवश्यकता नाही." असे त्या उदार बंदिपालने वजावल्याने आमच्यास तसेच पुढे चालविले गेले आणि एकदाचे ते त्या अंदमानाच्या भयंकर बंदिगृहाचे दार आमच्यासाठी उघडले !

१९०९ व्या सनात ते असेच एकदा उघडले आणि आमच्या बंधूस आत गिळून बंद झाले. १९११ सनी पुन्हा तो विक्राळ जवडा उघडला आणि आमच्यास गटकावून बंद झाला ! तेव्हा पुन्हा काही जिवंतपणी बाहेर पडण्याची अशा कोणास निश्चितपणे वाटत नव्हती. ते १९११ व्या वर्षी बंद झालेले ते त्या कारागृहाचे दार आज १९२१ व्या वर्षी पुन्हा करकरले. त्या जवड्याचे ते तोंड पुन्हा उघडले. आणि आम्ही दोघेही बंधू जिवंतपणी आतून बाहेर पडलो !

माझी जन्मठेप- स्वातंत्र्य वीर सावरकर

पुळकाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती

### प्राध्यापक वर्ग - वरिष्ठ महाविद्यालय १९८७-८८

प्राचार्य डॉ. जे. के. गोधा  
एम्. कॉम्., बी. ए., एल्. एल्. बी., पीएच्.डी.

#### मराठी

- १) प्रा. डॉ. डी. टी. पाटील
- २) प्रा. डी. एस्. शहा
- ३) प्रा. आर. टी. शहा (सेवानिवृत्त)
- ४) प्रा. एन्. जी. लोंढे

#### हिंदी

- १) प्रा. डॉ. के. एम्. सुर्वे
- २) प्रा. एम्. बी. कंडारकर

#### इंग्रजी

- १) प्रा. व्ही. व्ही. उपाध्ये (सेवानिवृत्त)
- २) प्रा. ए. के. इसराणा
- ३) प्रा. के. एस्. अय्यर
- ४) प्रा. पी. डी. वडगांवकर
- ५) प्रा. टी. एस्. सावंत
- ६) प्रा. डी. के. कुलकर्णी

#### इतिहास

- १) प्रा. ए. एस्. किर्णगे
- २) प्रा. व्ही. ए. संगई

#### अर्थशास्त्र

- १) प्रा. एस्. जी. वोंद्रे
- २) प्रा. ए. बी. देसाई
- ३) प्रा. डॉ. व्ही. व्ही. आचार्य
- ४) प्रा. आर. जी. पाटील
- ५) प्रा. आर. के. खाडे
- ६) प्रा. आर. डब्ल्यू. जोशी

#### राज्यशास्त्र

- १) प्रा. व्ही. डी. काकडे
- २) प्रा. ए. एन. सावळकर

#### मानसशास्त्र

- १) प्रा. बी. एस्. म्दाने
- २) प्रा. के. एम्. जाधव

#### समाजशास्त्र

- १) प्रा. एस्. पी. कदम
- २) प्रा. सी. पी. ए. केळकर-प्रभुण्ठे

#### भूगोल

- १) प्रा. बी. पी. जोहरापुरकर
- २) प्रा. एम्. व्ही. गोडसे
- ३) प्रा. बी. पी. गोडसे (अर्धवेळ)

#### संरक्षणशास्त्र

- १) प्रा. पी. आर. पाटील
- २) प्रा. टी. के. खोत (अर्धवेळ)

#### गणित

- १) प्रा. बी. बी. पाटील
- २) प्रा. डॉ. पी. डी. वावरे
- ३) प्रा. एम्. डी. भगत
- ४) प्रा. एन्. जी. कोळकर

#### संगणकशास्त्र

- १) प्रा. एस्. व्ही. कुलकर्णी

#### संख्याशास्त्र

- १) प्रा. व्ही. जी. पडवेकर
- २) प्रा. एन्. जे. सुवंध
- ३) प्रा. ए. एस्. पढरी
- ४) प्रा. एस्. बी. क्षीरसागर
- ५) प्रा. कु. पी. पी. मांडण

#### रसायनशास्त्र

- १) प्रा. आर. जे. गांधी
- २) प्रा. डॉ. एम्. बी. खरोसेकर
- ३) प्रा. एच्. एम्. वड्डे
- ४) प्रा. एम्. जी. ठुबे
- ५) प्रा. एम्. आर. काळे
- ६) प्रा. कु. एन्. के. शहा

#### पदार्थ विज्ञान

- १) प्रा. एम्. आर. नवाथे
- २) प्रा. ड. के. पाटील
- ३) प्रा. जी. व्ही. गायकवाड
- ४) प्रा. एम्. के. कोकरे

#### इलेक्ट्रॉनिक्स

- १) प्रा. एस्. बी. पाटील
- २) " जे. बी. पटवर्धन
- ३) " जे. डी. देशपांडे
- ४) " एस्. एच्. गावडे (अर्धवेळ)
- ५) " सी. एम्. भांबरे

#### घनस्पतीशास्त्र

- १) प्रा. डॉ. डी. के. मगदूम
- २) " सी. एन्. ए. पाटील
- ३) " डॉ. पी. व्ही. मुरुमकर
- ४) " कु. एस्. ए. पाटील
- ५) " के. एस. सणगर

#### प्राणिशास्त्र

- १) प्रा. व्ही. ए. वकील
- २) " ए. एन. वेंडगे
- ३) " डॉ. डी. व्ही. सरवदे
- ४) " सी. एस. एस. दोशी
- ५) " आर. जी. कुदळे

## दाणिज्य

- १) प्राचार्य डॉ. जे. के. गोधा
- २) प्रा. जे. बी. मगदूम
- ३) प्रा. पी. डी. फरसोले
- ४) प्रा. एन. एम. नारे
- ५) प्रा. आर. एम. मिसाल
- ६) प्रा. सौ. ए. ए. पाध्ये
- ७) प्रा. एस. एस. पटवर्धन (अर्धवेळ)

## शिक्षकेतर सेवक वर्ग १९८७-८८

### लिपिक

- १) श्री. सुरवडे आर्. एल्. (कार्यालय अधीक्षक)
- २) " व्ही. डी. महामुनी (कार्यालय उपाधीक्षक)
- ३) " बी. एम्. राहा (वरिष्ठ लिपिक)
- ४) " जे. पी. दोबी (वरिष्ठ लिपिक)
- ५) " व्ही. जी. कुंभार
- ६) " डी. एल्. पारख
- ७) " आर्. एम्. राहा
- ८) " वायू. के. कुलकर्णी
- ९) " आर्. जी. राहा
- १०) " एल्. ड. पडळकर
- ११) " व्ही. एन्. वेलदार

### ग्रंथालय विभाग

- १२) श्री. एम्. एन्. पाटील (ग्रंथपाल)
- १३) " जी. डी. चौर (उप-ग्रंथपाल)
- १४) " डी. बी. देवकर
- १५) " पी. ए. साळुंके
- १६) " ए. जी. मोकाशी

### प्रयोगशाळा सहाय्यक

- १७) श्री. पी. के. मोरे
- १८) " आर्. के. गलांडे
- १९) " बी. यु. टेके
- २०) " व्ही. डब्ल्यू. देशमुख



- ८) प्रा. डी. वा. जगताप
- ९) " ए. व्ही. इंगळे
- १०) " पी. जी. मेहेर
- ११) " एम. आर. साळवे

## शारीरिक शिक्षणशास्त्र

- १) प्रा. ए. एस. मेहेर

### शिपाई

- |                         |                |
|-------------------------|----------------|
| १) श्री. के. एस्. नेवसे | (प्रमुख शिपाई) |
| २) " एम्. ए. सावंत      | (प्रमुख शिपाई) |
| ३) " जे. व्ही. राहा     | (शिपाई)        |
| ४) " जे. के. उपाध्ये    | "              |
| ५) " बी. एस्. कोथमिरे   | "              |
| ६) " एस्. एस्. पळशीकर   | "              |
| ७) " एम्. एम्. मोरे     | "              |
| ८) " डी. डब्ल्यू. राहा  | "              |
| ९) " एम्. एस्. सुतार    | "              |
| १०) " एस्. जी. पाटील    | "              |
| ११) " एस्. एम्. जगताप   | "              |
| १२) " जी. आर्. जाधव     | "              |
| १३) " बी. जी. लव्हे     | "              |
| १४) " एम्. बी. जाधव     | "              |
| १५) " ए. एम. वागजकर     | "              |
| १६) " एस. डी. जगताप     | "              |
| १७) " सी. बी. गावडे     | "              |
| १८) " ए. जी. खोमणे      | "              |
| १९) " ए. बी. चव्हाण     | "              |
| २०) " एम. ए. पवार       | "              |
| २१) " बी. टी. मदन       | (वाँचमन)       |
| २२) " ए. एम. शेख        | (प्लंबर)       |
| २३) " इ. एन. शेख        | (वायरमन)       |

## प्राध्यापक वर्ग - कनिष्ठ महाविद्यालय १९८७-८८

प्राचार्य डॉ. जे. के. गोधा  
एम्. कॉम्, बी. ए., एल्. एन्. बी, पीएच्.डी.

### सराठी

- १) प्रा. पी. बी. घेरे
- २) " टी. डी. यादव
- ३) " श्रीमती यु. एम. चौधरी

### हिंदी

- १) प्रा. व्ही. बी. परकाळे

### इंग्रजी

- १) प्रा. बी. जी. देशमुख
- २) " कु. एम. डी. वैद्य
- ३) " श्रीमती आर. के. सुर्वे
- ४) " आर. एस. पाटसकर
- ५) " डी. के. कुलकर्णी (CHB)

### इतिहास

- १) प्रा. पी. बी. इंगवले
- २) " एस. बी. गायकवाड (अर्धवेळ)

### अर्थशास्त्र

- १) प्रा. बी. एल्. दवडे
- २) " एस्. पी. घोळवे

### राज्यशास्त्र

- १) प्रा. डी. के. गुरव
- २) " पी. एन्. साळुंके (अर्धवेळ)

### समाजशास्त्र

- १) प्रा. एस्. एम्. गोरे (अर्धवेळ)

### संरक्षणशास्त्र

- १) प्रा. आर. एम्. वनकर (अर्धवेळ)

### भूगोल

- १) प्रा. ए. बी. भगाटे

### गणित

- १) प्रा. एस्. एस्. कणसे
- २) " एम्. जी. खोत (CHB)

### रसायनशास्त्र

- १) प्रा. व्ही. के. दिवाण
- २) " एस. एस्. राहा
- ३) " एस. एन्. वत्तीन
- ४) " आर. आर. अटपळकर (अर्धवेळ)

### पदार्थ विज्ञान

- १) प्रा. आर. के. नाळे
- २) " ए. बी. पाटील
- ३) " एस्. के. वाळुंज
- ४) " एम्. एच्. गावडे (अर्धवेळ)

### वनस्पतीशास्त्र

- १) प्रा. ए. जे. आळंदकर
- २) " एच्. बी. घारे
- ३) " कु. टी. टी. निगडे

### दाणिज्य

- १) प्रा. बी. आर. काळगे
- २) " व्ही. एस्. भोसले
- ३) " सी. बी. चौधरी
- ४) " बी. बी. निरपणकर
- ५) " ए. एस्. उपाध्ये
- ६) " ए. पी. गायकवाड

### विक्रय आणि विपणन (व्यावसायिक)

- १) प्रा. आर. डी. राजदेकर
- २) " आर. एल्. शिनकर

### इलेक्ट्रॉनिक्स (व्यावसायिक)

- १) व्ही. डी. गोलांडे

### शारीरिक शिक्षणशास्त्र

- १) श्री. एस्. बी. इंगवले